Optima

निराली

हिंदी पाठ्यपुस्तक एवं अभ्यास पुस्तिका

Text-cum-Workbook

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP)-2020 की संस्तुतियों पर आधारित



8

DIGITAL RESOURCES (Details inside)

Virtual CD | Web Support | Mobile App | Test Generator

Optima

निराली

हिंदी पाठ्यपुस्तक एवं अभ्यास पुस्तिका

Text-cum-Workbook

8

लेखक

मधुर अथैया

एम॰ए॰ (हिंदी), एम॰फिल॰

ज्यूरी मेंबर (एक्स.)एआइसीईएवीएफ

सीआइईटी, एनसीईआरटी

नई दिल्ली

संपादक

नमिता जैन

एम॰ए॰ (हिंदी), बी॰एड्॰

जी· राम बुक्स प्रा· लि·

शैक्षणिक प्रकाशक

दिल्ली

DIGITAL RESOURCES

STEPS TO RUN VIRTUAL CD

1. Visit **www.grambooks.com**.
   - Click on **Virtual Disc**.
   - Click on **Student** tab.

   Download and Install the software on your PC.
2. Run the program on the desktop and fill your registration details.
3. Click on **Add New** button and enter **Unique Key**. (Take the Unique Key from your concerned teacher)
4. Click on OK button to start the download.
5. Once the download is complete, click on the **Book** to enjoy your animated content.

STEPS TO DOWNLOAD APP

1. Download the **G.Ram Books Infinity** app from the Google Play Store and install on your phone.
2. Tap on the **G.Ram Books Infinity** icon to open the Home Page of the App.
3. Fill the registration form.
4. Tap on the **Library** and scan the **QR Code** given on the cover.
5. Once the book is downloaded, tap on the **Book** and enjoy the content.

   You can read the book once it's downloaded.

Note for Teacher : Visit **www.grambooks.com**.
- Click on **Virtual Disc** and select **Teacher** tab.
- Fill in the number of Unique Keys you require.

TEACHER'S RESOURCES

STEPS TO USE THE WEB SUPPORT

1. Visit our website **www.grambooks.com**.
2. Click on **Web Support** tab.
3. Register yourself and contact us on **support @grambooks.com.** We will approve your account .
4. Enter your login details, i.e. User ID (your registered e-mail ID) and password.
5. Download the material needed.

STEPS TO USE THE TEST GENERATOR

1. Visit our website **www.grambooks.com**.
2. Click on **Test Generator**.
3. Register yourself and contact us on **support @grambooks.com.** We will approve your account. A unique key will be sent to your registered e-mail ID.
4. Enter your login details, i.e. user name (your registered e-mail ID) and password. Click on **Submit** button.
5. Enter your **Unique Key**.
6. Click on **Teacher Edition** for offline mode.

प्रकाशक :

जी॰ राम बुक्स प्रा॰ लि॰

शैक्षणिक प्रकाशक

पंजीकृत कार्यालय :

25/4, गली नंबर-17, विश्वास नगर, दिल्ली-110032

प्रशासनिक व विक्रय कार्यालय :

3/1/10, साइट-IV, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, गाज़ियाबाद-201010

दूरभाष : (0120) 4152032, 4152033, 4152034

फैक्स : (0120) 4115692

नवीन संस्करण

ISBN :

₹ 396.00

मुद्रक: बी॰ के॰ ऑफसेट

मन की बात

निराली हिंदी पाठमाला पुस्तक शृंखला (कक्षा 1 से 8) आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक शृंखला NEP 2020 में सुझावित मापदंडों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई है। इस पुस्तक शृंखला का निर्माण करते समय विभिन्न आयु-वर्ग, रुचि एवं विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर का ध्यान रखा गया है। पाठमाला में कविता, कहानी, वार्तालाप, घटना, निबंध, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत, लेख, पत्र, संवाद, नाटक, संस्मरण, डायरी-लेखन, जीवनी, चित्रकथा, लोककथा जैसी साहित्यिक विधाओं को स्थान दिया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाओं से अवगत हो सकें।

पाठों का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि वे बच्चों की बौद्धिक क्षमता तथा भाषायी-स्तर के अनुरूप हों। विद्यार्थी और खेल एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए पुस्तक में जगह-जगह खेलरूपी गतिविधियाँ दी गई हैं। जिससे अध्ययन में रोचकता बनी रहे।

यह पुस्तक शृंखला विद्यार्थियों को उनके घर तथा बाह्य-जगत में होने वाली दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों से न केवल जोड़ती है, अपितु उन्हें समस्याओं का सामना करने के साथ-साथ उनका समाधान करना भी सिखाती है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

- **वार्म-अप** – यह खंड विद्यार्थियों को पाठ की भूमिका प्रदान करेगा। जिससे बच्चों में न सिर्फ़ पाठ के प्रति रुचि उत्पन्न होगी, बल्कि पाठ की विषय-सामग्री की विभिन्न परतों के भीतर झाँकने हेतु भी उनकी मनोभूमि तैयार होगी।
- **सोचो-सोचो!** – इसके माध्यम से विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता को विस्तार मिलेगा।
- **रोचक तथ्य** – इससे विद्यार्थी पाठ से संबंधित रोचक जानकारी से अवगत हो सकेंगे।
- **पाठ का पिटारा** – यह पाठ की समझ का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।
- **भाषा का पिटारा** – इस खंड के माध्यम से विद्यार्थी व्याकरण का व्यावहारिक ज्ञान सहज रूप में प्राप्त कर सकेंगे।
- **मूल्याधारित प्रश्न** – ये प्रश्न विद्यार्थियों में जीवन-मूल्यों का संचार करने में सहायक होंगे।
- **मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय** – इस खंड के अंतर्गत दी गई निम्नलिखित गतिविधियों द्वारा स्वयं के विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमताओं का विकास होगा–
    - **मेरा तर्क : मेरा चिंतन** – इससे विद्यार्थियों की आत्म-चिंतन के आधार पर तर्क सिद्ध करने की योग्यता का विकास होगा।
    - **मेरी लेखन अभिव्यक्ति** – इसके द्वारा विद्यार्थी अपने मन के विचारों को लेखनी प्रदान करने में सक्षम हो सकेंगे।
    - **मेरी वाचन अभिव्यक्ति** – इसके द्वारा विद्यार्थियों की अपने मन के विचारों को बोलकर प्रकट करने की क्षमता का विकास होगा।
    - **मेरी श्रवण कुशलता** – यह विद्यार्थियों की एकाग्रता और स्मरण-शक्ति की वृद्धि में सहायक होगा।
    - **मेरी समझ** – इसके द्वारा विद्यार्थी सूक्ष्म मनोरंजक गतिविधि से अतिरिक्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- **मेरी परियोजना** – यह खंड विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता व उनकी नवाचार दृष्टि का विकास करेगा।

हम उन सभी रचनाकारों के आभारी हैं, जिनकी रचनाएँ इस शृंखला में सम्मिलित की गई हैं। उम्मीद है यह पाठमाला सभी मापदंडों पर खरी उतरेगी।
पाठमाला को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

–प्रकाशक

विषय-पठन

1 किसको नमन करूँ मैं

भारत में हम एक-दूसरे से मिलने पर नमस्ते करते हैं। 'नमस्ते' शब्द में 'नमः' का अर्थ होता है– 'अभिवादन' और 'ते' का अर्थ होता है– 'तुम' अर्थात– 'तुम्हारा अभिवादन'। भारतीय भाषाओं में 'नमस्ते' को निम्नलिखित प्रकार से बोला या लिखा जाता है–

हिंदी	– नमस्कार	सिंधी	– सलाम	उड़िया	– नमस्कारा	कन्नड़	– नमस्कारा
संस्कृत	– नमस्ते	उर्दू	– सलाम/आदाब	बांग्ला	– नमोश्कार	तमिल	– वेनक्कम
डोगरी	– नमस्ते जी	मणिपुरी	– खुरूमजरी	असमिया	– नमोस्कार	तेलुगु	– नमस्कारम
कश्मीरी	– नमस्कार	गुजराती	– नमस्ते	कोंकणी	– नमस्कारु	मलयालय	– नमस्कारम
पंजाबी	– सत् श्री अकाल	मैथिली	– प्रणाम	संथाली	– हेंडा हो	नेपाली	– नमस्कारम



विचार-मंथन

व्यक्ति में ऐसी कौन-सी खूबियाँ होनी चाहिए, जिससे कि सब उसे नमन करें?

पठन



तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ मैं?
मेरे प्यारे देश देह या मन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

भू के मानचित्र पर अंकित त्रिभुज! यही क्या तू है?
नभ के नभश्चरण की दृढ़ कल्पना नहीं क्या तू है?
भेदों का ज्ञाता, निगूढ़ताओं का चिर ज्ञानी है।
मेरे प्यारे देश! नहीं तू पत्थर है, पानी है।



शब्द-कलश

नदीश – सागर (Sea)
नभश्चरण – नभ में विचरण करने वाले, पक्षी, वायु, बादल आदि (Aerial)
निगूढ़ – रहस्य या गुप्त बातें (Secret)



सोचो-सोचो!

क्या नमन करने का अभिप्राय मात्र अभिवादन करना है?

जड़ताओं में छिपे किसी चेतन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

तू तो वह लोक जहाँ उन्मुक्त मनुज का मन है।
समरसता के लिए प्रवाहित शीत-स्निग्ध जीवन है।
जहाँ पहुँच मानते नहीं नर-नारी दिग्बंधन को।
आत्मरूप देखते प्रेम में भरकर निखिल भुवन को।

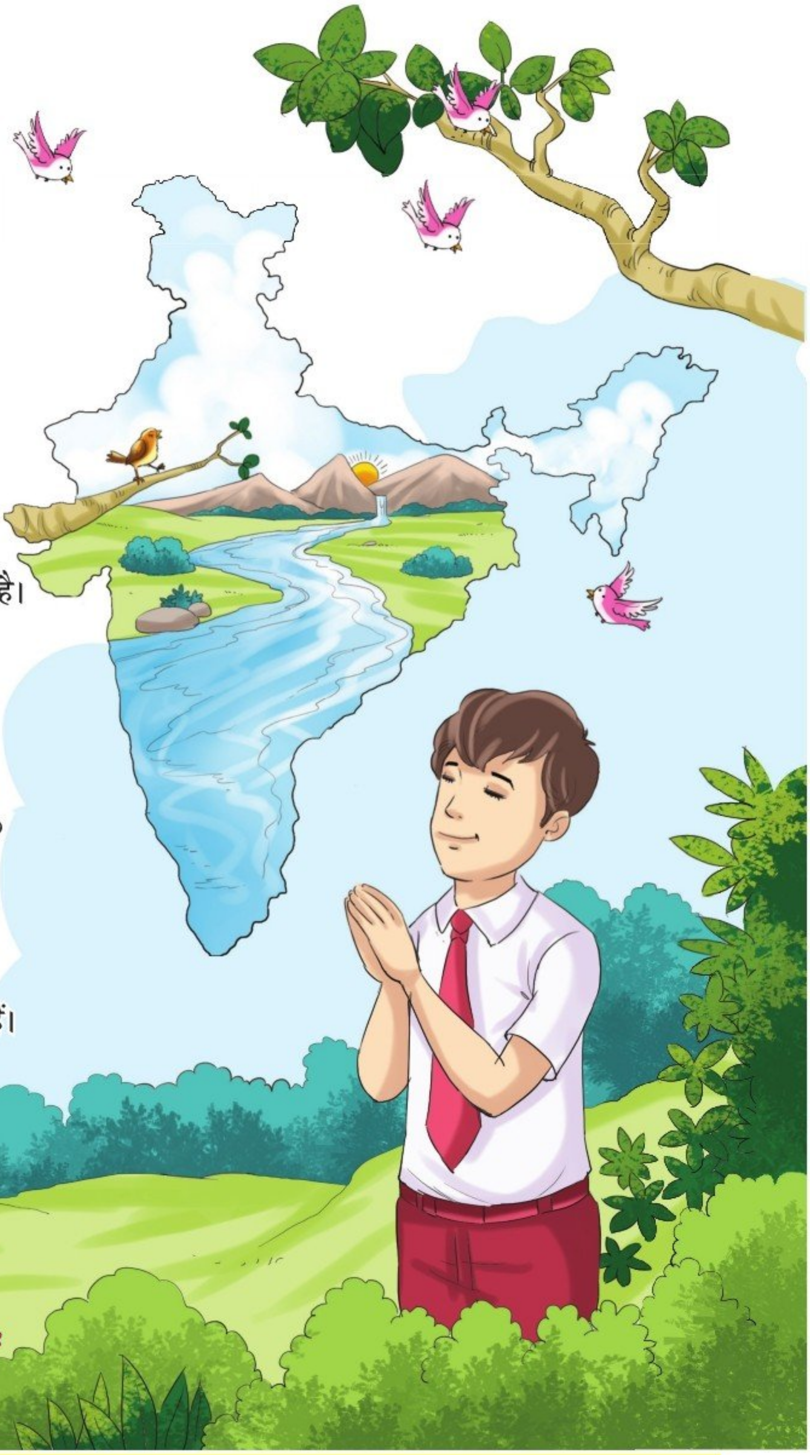
वहीं खोज इस रुचिर स्वप्न पावन को नमन करूँ मैं।
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण-विशेष नर का है।
एक देश का नहीं, शील यह भूमंडलभर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश-देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्कर है।

निखिल विश्व के जन्म-भूमि-वंदन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?

दो हृदयों के तार जहाँ भी जो जन जोड़ रहे हैं,
मित्र भाव की ओर विश्व की गति को मोड़ रहे हैं।
घोल रहे हैं जो जीवन-सरिता में प्रेम-रसायन,
खोल रहे हैं देश-देश के बीच मुँदे वातायन।

आत्म-बंधु कहकर ऐसे जन-जन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?



शब्द-कलश

जड़ता – भावहीन, अचल (Nonliving)
उन्मुक्त – स्वतंत्र (Free)
मनुज – मनुष्य (Human being)
समरसता – समानता, सौहार्द्र (Unity)
प्रवाहित – बहने वाला (Flowing)
शीत-स्निग्ध – शांति व कोमलता से भरा हुआ (Softness)
दिग्बंधन – दिशाओं के बंधन (Boundaries of direction)
रुचिर – सुंदर (Beautiful)
वाचक – बोध कराने वाला (Exemplar)
शील – लाज (Pious)
भूमंडल – पृथ्वी (Earth)
अखंडित – जो टूट न सके (Unbreakable)
भास्कर – सूर्य (Sun)
जन – लोग (People)
वातायन – खिड़की, झरोखा (Window)
आत्म-बंधु – अपना भाई (Brother)

उठे जहाँ भी घोष शांति का, भारत स्वर तेरा है,
धर्म दीप हो जिसके कर में वह नर ही तेरा है।
तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है,
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है।



मानवता के इस ललाट-चंदन को नमन करूँ मैं?
किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ मैं?



–रामधारी सिंह 'दिनकर'

रोचक तथ्य

तक्षशिला दुनिया का सबसे पहला विश्वविद्यालय माना जाता है। इसको लगभग 700 ईसा पूर्व स्थापित किया गया था।

शब्द-कलश

घोष – स्वर, आवाज़ (Sound)
ललाट-चंदन – माथे का चंदन (Sandalwood paste on forehead)



कवि-परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। ये 1952 ई॰ में राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। इन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। साहित्य अकादमी पुरस्कार और 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– 'हुँकार', 'रेणुका', 'रश्मिरथी', 'रसवंती', 'कुरुक्षेत्र' और 'परशुराम की प्रतीक्षा'। दिनकर जी का निधन 24 अप्रैल, 1974 को हुआ।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) कवि किसको नमन करना चाह रहे हैं?

☐ भारत को ☐ मित्र को ☐ गुरु को ☐ पिता को

(ख) भारत किसका वाचक नहीं है?

☐ मानव का ☐ स्थान का ☐ गुण का ☐ धर्म का

(ग) भारत किसका घोष करता है?

☐ संघर्ष का ☐ घृणा का ☐ शांति का ☐ शक्ति का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) कवि के अनुसार भारत कैसा लोक है?

(ख) कवि ने भारत को स्थान का वाचक न मानकर और क्या माना है?

(ग) विश्व की गति को कौन मित्र भाव की ओर मोड़ रहा है और कैसे?

(घ) कवि किस-किसको नमन करना चाहता है?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि भारत को कहाँ ढूँढ़ता है?

....

....

(ख) कवि के अनुसार भारत कैसा है?

....

....

(ग) भारत का स्वर कौन-सा है?

....

....

(घ) भारत किन भेदों व रहस्यों का ज्ञाता है?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) "देह या मन को नमन करूँ मैं"– इस पंक्ति में 'देह' और 'मन' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ख) इस कविता में भारत की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है?

(ग) कवि विश्व-बंधुत्व व समरसता वाले पवित्र भारत को नमन क्यों करना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

(घ) मेल-जोल व भ्रातृत्व भाव से किसका भला है और क्यों?

(ङ) इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

3. कविता की निम्नलिखित पंक्ति की अगली पंक्ति लिखिए–

(क) भेदों का ज्ञाता, निगूढ़ताओं का चिर ज्ञानी है।

....

(ख) जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,

....

(ग) घोल रहे हैं जो जीवन-सरिता में प्रेम-रसायन,

....

(घ) उठे जहाँ भी घोष शांति का, भारत स्वर तेरा है,

....

(ङ) तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है,

....

4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

(i) तू तो वह लोक जहाँ उन्मुक्त मनुज का मन है।
समरसता के लिए प्रवाहित शीत-स्निग्ध जीवन है।।

(ii) तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है।
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है।।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

वर्णों की एक-एक ध्वनि को अलग-अलग करने को 'वर्ण-विच्छेद' कहा जाता है। इससे शब्दों की शुद्ध रचना एवं सही उच्चारण का पता चलता है; जैसे– मार्ग = म् + आ + र् + ग् + अ

1. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

(क) प्यारे – ....

(ख) ज्ञाता – ....

(ग) उन्मुक्त – ....

(घ) स्निग्ध – ....

(ङ) वातायन – ....

किसी शब्द का उलटा या विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द 'विपरीतार्थक' अथवा 'विलोम' शब्द कहलाते हैं; जैसे– जीवन × मरण आदि।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) ज्ञानी × ....

(ख) देश × ....

(ग) प्रेम × ....

(घ) गुण × ....

(ङ) न्याय × ....

(च) शीत × ....

समान अर्थ देने वाले शब्द 'पर्यायावाची' शब्द कहलाते हैं; जैसे– पुष्प, कुसुम, सुमन आदि।

3. विकल्पों में से निर्देशानुसार उत्तर छाँटकर लिखिए और सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) .... शब्द आकाश का पर्यायवाची नहीं है।

(i) ☐ नभ (ii) ☐ दिवाकर (iii) ☐ गगन (iv) ☐ अंबर

(ख) सागर का पर्यायवाची है– ....

(i) ☐ नदी (ii) ☐ देवनदी (iii) ☐ नीरज (iv) ☐ सिंधु

(ग) कौन-सा शब्द पानी का पर्यायवाची है– ....

(i) ☐ जल (ii) ☐ राक्षस (iii) ☐ विहग (iv) ☐ वसुंधरा

(घ) कौन-सा शब्द धरती का पर्यायवाची नहीं है? ....

(i) ☐ पृथ्वी (ii) ☐ राक्षस (iii) ☐ धरा (iv) ☐ वसुंधरा

(ङ) कौन-सा शब्द आग का पर्यायवाची है– ....

(i) ☐ धरा (ii) ☐ नभ (iii) ☐ अनल (iv) ☐ विहग

4. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) नमन – ....

(ख) मनुज – ....

(ग) स्वप्न – ....

(घ) भारत – ....

(ङ) देश – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

"मेरा स्वाभिमान : मेरा भारत महान" कथन को स्पष्ट कीजिए–

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)

1. किन विशेषताओं के कारण भारत एक अनूठा देश है? सोचकर बताइए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)

2. नीचे दिए विषयों में से किसी एक विषय पर आशुभाषण/परिचर्चा/वाद-विवाद का आयोजन कीजिए। (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)
   (क) कश्मीर–भारत का मुकुट
   (ख) आज़ादी का मतलब मनमर्जी नहीं
   (ग) अंतरिक्ष विज्ञान और भारत

3. समाज के लिए काम करने वाले लोगों; जैसे– डॉक्टर, पुलिस, नेता, अध्यापक, इंजीनियर, वकील आदि में से किसी एक का साक्षात्कार (इंटरव्यू) लीजिए और पूछिए कि देश के विकास के लिए वे क्या योगदान दे रहे हैं? आपके द्वारा पूछे गए प्रश्नों और उनके द्वारा दिए गए उत्तरों को कॉपी में लिखिए। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

4. भारत के किन्हीं आठ प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारकों की तस्वीरें एकत्र करके उनके नाम लिखिए और यह भी बताइए कि वे स्मारक भारत के किस-किस राज्य में स्थित है? (सह-संबंध) (Connecting Link)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. भारत के स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के योगदान पर सचित्र परियोजना/प्रेजेंटेशन तैयार कीजिए।
2. कविता में भारत के नदीश, गिरि, और वन को नमन करने की बात कही गई है। भारत में स्थित किन्हीं 5 प्रसिद्ध नदियों, पर्वत शृंखलाओं एवं वनों को भारत के मानचित्र पर दर्शाकर कक्षा में लगाइए।

2 शरणागत की रक्षा

प्रस्तुत पाठ में हम शरणागत की रक्षा के बारे में पढ़ेंगे। यहाँ सबसे पहले यह जानना ज़रूरी है कि 'शरणागत' किसे कहते हैं? शरणागत का अर्थ है– 'शरण में आया हुआ'– अर्थात 'शरणार्थी'।

शरणार्थी वे होते हैं, जो युद्ध, हिंसा या किसी अन्य कारण से अपना देश आदि छोड़कर किसी दूसरे देश आदि में आश्रय लेते हैं। जो लोग दूसरे देशों में आश्रय चाहते हैं, उन्हें वहाँ रहने की वज़ह साबित करनी होती है। इसके लिए लोग उस देश की सरकार से शरण देने के लिए आवेदन करते हैं और प्रार्थना पत्र स्वीकार होने के बाद उन्हें शरणार्थी का दर्ज़ा मिल जाता है। दुनियाभर में शरणार्थियों के हितों की रक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र की एक रिफ़्यूजी एजेंसी है। इसका नाम UNHCR है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जो शरणार्थियों की ज़िंदगी बचाने, उनके अधिकारों की रक्षा करने और उनके बेहतर भविष्य के लिए पूरी तरह समर्पित है। इसकी स्थापना वर्ष 1950 में की गई थी। इसका मुख्यालय जिनेवा में है।

विचार-मंथन



यदि कोई व्यक्ति किसी का अनहित करके या कोई अपराध करके आपसे शरण माँगने आए तो क्या आप शरण देकर उसकी रक्षा करेंगे?

पठन

रणथंभौर के राणा हम्मीर अपने दरबार में बैठे अपना राज-काज देख रहे थे कि किसी ने पुकारा, "मैं आपकी शरण में आया हूँ, महाराज!"

हम्मीर ने आँखें ऊपर करके देखा कि एक बहादुर मुसलमान उनके सामने था। उसका सिर झुका हुआ और गला व्यथा से भर्राया हुआ था।

"कौन हो तुम?" हम्मीर ने पूछा।

"महाराज! मैं दुखिया हूँ, मेरे प्राण संकट में हैं, आपकी शरण में आया हूँ।"

आगंतुक ने पूरी कहानी कह सुनाई– "मेरा नाम माहमशाह, काम सिपाहीगिरी, बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का



शब्द-कलश

व्यथा – पीड़ा, कष्ट (Pain)
आगंतुक – अतिथि (Guest)

खादिम। एक मामूली बात पर बादशाह नाराज़ हो गए और मेरे लिए फाँसी का हुक्म दे दिया। वे घड़ियाँ नज़दीक थीं, जब फाँसी का फंदा दम घोंट देता और मेरी लाश को चील और कुत्तों के लिए फेंक दिया जाता कि मैं जेल से फ़रार हो गया और अब अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए आपकी शरण में हाज़िर हूँ। मेरी रक्षा कीजिए महाराज!"



हम्मीर ने गौर से माहमशाह को देखा। वह बहुत घबराया हुआ था। "दिल्ली और रणथंभौर के बीच तो राजपूतों के कई राज्य हैं। तुम उनमें क्यों नहीं गए, माहम?", हम्मीर ने गंभीरता से पूछा।

दीन-भाव से माहम ने कहा, "महाराज! मैं सबके दरवाज़े गया, सबने मुझे सहानुभूति दी, पर कोई शरण न दे सका, क्योंकि मैं दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी का भगोड़ा हूँ और मुझे शरण देकर कोई उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहता।"

हम्मीर ने अपने सलाहकारों को देखा और अनुत्साहित पाया। उनकी राय थी, "महाराज! माहमशाह की तलवार आज आपकी शरण में है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में लेकर दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्योता क्यों दें?"

"यह दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्योता देने की बात नहीं है, सरदारो! यह कर्तव्य का प्रश्न है, आन का प्रश्न है। जब माहम इस द्वार से लौटेगा, तो स्वर्ग में हमारे पूर्वज क्या सोचेंगे? क्या उन्हें स्वर्ग के सुख-साज में काँटों की चुभन का अनुभव न होगा?" हम्मीर ने आवेश में पूछा।

सरदारों ने कहा, "क्षमा करें, महाराज! आपकी बात परम पवित्र है, पर कर्तव्य की भी एक सीमा है।"

"कर्तव्य की सीमा!" कड़ककर हम्मीर ने पूछा, "कर्तव्य की सीमा है– 'कर्तव्य-पालन'। कर्तव्य के पालन में सुख मिलेगा या दुख, जय होगी या पराजय, यह दुकानदारी की वृत्ति राजपूतों को शोभा नहीं देती। माहम शरणार्थी है, शरणार्थी की रक्षा राजपूत का कर्तव्य है। यह कर्तव्य हमें पूरा करना है, फिर इससे दिल्ली का बादशाह नाराज़ हो या दुनिया का बादशाह।"

शब्द-कलश

खादिम – सेवक, अनुचर (Servant)
फ़रार – भागना (To run away)
गौर से – ध्यानपूर्वक (Carefully)
सहानुभूति – हमदर्दी (Sympathy)
अनुत्साहित – उत्साहहीन (Unexcited)
क्रोधाग्नि – क्रोध की आग (Anger)
न्योता – निमंत्रण (Invitation)
वृत्ति – व्यवहार (Behaviour)
शरणार्थी – शरण में आने वाला (Refugee)

सामंत-सरदार भी अब महाराज की भावधारा में बहकर, व्यवहार-बुद्धि से दूर, भावना के क्षेत्र में पहुँच गए थे। उनके मुँह से निकला, "धन्य, महाराज!"

हम्मीर ने कहा, "माहमशाह!, रणथंभौर अब तुम्हारा घर है। आराम से यहाँ रहो और विश्वास रखो कि अब किसी की हिम्मत नहीं कि तुम्हारी तरफ़ तिरछी आँखों से देखे। कोई कष्ट हो तो हमें कहना, जाओ।"

जल्दी ही यह खबर दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी तक पहुँची, तो वह तमतमा उठा, "हम्मीर की यह हिमाकत की मेरे चोर को आसरा दे।"

"क्या तुम नहीं जानते, हम्मीर! जो तुमने माहम को अपनी छत दी? खैर, मैं भूलों को माफ़ करना जानता हूँ। कोई बात नहीं, माहम को अपनी देख-रेख में मेरे सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफ़ी माँगो।" अल्लाउद्दीन का यह संदेश हम्मीर के पास पहुँचा, तो वह मुसकराया। उसने लिखा, "माहम को शरण दी है, कोई नौकर नहीं रखा और अपना सर्वस्व लुटाकर भी शरणागतों की रक्षा करना मेरी जाति के संस्कार हैं। सपने में भी उम्मीद न रखिएगा कि माहम को मैं आपके दरवाज़े लाऊँगा। अब जो मुनासिब समझें, कीजिए।"



सोचो-सोचो!

अगर दूसरे राजपूत राजाओं की तरह राणा हम्मीर भी माहमशाह को शरण देने से मना कर देता, तो क्या होता?

जवाब क्या था, एक पलीता था, जिसने खिलजी के बारूद में आग लगा दी और उसने कुछ दिन बाद ही अपनी फ़ौजों के साथ रणथंभौर का किला घेर लिया।

"लड़ाई-झगड़े से क्या फ़ायदा? हम्मीर! लाओ, माहम को मुझे सौंप दो।" खिलजी का यह आखिरी संदेश था।

"लड़ाई से नहीं डरता और जीवन की आखिरी घड़ी तक माहम की रक्षा करूँगा।" हम्मीर का यह आखिरी उत्तर था।

दूसरे दिन रण-दुंदुभि बज उठी। ऊँची पहाड़ी पर बना रणथंभौर का किला और चारों ओर फैली शाही फ़ौजें। एक तरफ़ अपने बादशाह के लिए लड़ने वाली फ़ौजें, तो दूसरी तरफ़ अपनी आन पर मर मिटने वाले सिपाही। एक तरफ़ भरपूर साधन, तो दूसरी तरफ़ भरपूर आन। लड़ाई क्या थी? यह बात की बाज़ी और यह बाज़ी जिसका निशाना एक आदमी के प्राण और इस एक प्राण के लिए हज़ारों प्राण, सरसों के दानों की तरह हथेली पर।

दोनों तरफ़ हज़ारों योद्धा काम आए। बादशाह की ताकत जितनी छीजती, दिल्ली उसे पूरा कर देती; पर हम्मीर की शक्ति-धारा की जो लहर बह जाती, फिर न लौटती। हर टूटती तलवार सौ को निन्यानवे करती और हर गिरता सिपाही हज़ार को नौ सौ निन्यानवे। व्यय के रास्ते खुले हुए थे, आय के बंद! कुबेर का कोष भी यों कब तक टिक पाता!

हम्मीर उस दिन कुछ सोच रहे थे कि माहमशाह आकर खड़े हो गए। "कहिए, शाह साहब! क्या बात है?" हम्मीर ने कहा।



शब्द-कलश

हिमाकत – नासमझी, मूर्खता (Foolishness) पलीता – आग लगाने की बत्ती (A thread to start fire)
मुनासिब – उचित (Appropriate) रण-दुंदुभि – युद्ध के नगाड़े (War cry)

माहमशाह को चुप देखकर हम्मीर ने पूरी गंभीरता से कहा, "शाह साहब! यह बच्चों का खेल नहीं युद्ध है। फिर क्या आप नहीं जानते कि मैं एक राजपूत हूँ। जो वचन दे चुका हूँ, उसे मरते दम तक निभाऊँगा। इस लड़ाई में आपकी बहादुरी का चमत्कार देखकर मैं बहुत खुश हूँ। हार-जीत तो किस्मत के दो किनारे हैं, इनकी फ़िक्र न कीजिए।"



लड़ाई चलती रही। सामान और सिपाही घटते रहे। एक दिन भंडारी ने खबर दी, "आज खाने का सामान खत्म है।"

रणथंभौर के किले में एक सभा हुई कि अब क्या हो? माहमशाह ने बहुत खुशामद की, वह बहुत गिड़गिड़ाया कि उसे बादशाह को सौंपकर सुलह कर ली जाए, पर अब उसके प्रस्ताव का समर्थक वहाँ कोई न था। सच्चाई यह है कि हम्मीर और उनके साथियों के सामने यह प्रश्न ही न था कि हम कैसे बचें। उनकी विचार-दिशा तो केवल यह थी कि हम कैसे लड़ें। भावुकता का ऐसा ज्वार विश्व के इतिहास में शायद ही और कहीं आया हो।

फ़ैसला हुआ कि कल किले का द्वार खोल दिया जाए और जमकर युद्ध हो। इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था–आत्माहुति, सर्वस्व-समर्पण। जीत की कामना सिपाही को उत्साह देती है, तो विजय की आशा उसे बल। कामना और आशा के झूले पर इधर-से-उधर झूलने वाले ये सिपाही न थे–इन्हें झूलना नहीं, झूमना था, इन्हें बुझना नहीं, जूझना था। किले में यौवन की किलकारियाँ भरती इन स्त्रियों का क्या होगा? उन्होंने फ़ैसला किया कि किले के द्वार खुलने से पहले जौहर करेंगी।

अब वे निश्चिंत थे, जैसे उन्हें जो काम करना था, कर चुके थे। रात को वे सब सो रहे थे सुबह जल्दी उठने के लिए, और सुबह उनको जल्दी उठना था, हमेशा को सोने के लिए। ऐसी जीवंत नींद रात के सितारों ने फिर नहीं देखी, यह वे आपस में अब भी कहा करते हैं।

क्या आत्मा की अमरता का ऐसा विश्वास और मृत्यु का इतना मनोरम विवरण इतिहास के किसी और पृष्ठ में भी इतने प्रदीप्त रूप में लिखा गया है?

पौ फटी। किले का द्वार खोल दिया गया और रणथंभौर के योद्धा रण में कूद पड़े। रण था यह दिल्ली की फ़ौजों



शब्द-कलश

खुशामद – प्रार्थना (Request)

के लिए, रणथंभौर वालों के लिए तो आत्मदान का यज्ञ था। माहम और हम्मीर साथ-साथ आगे बढ़े और काल बनकर बरसे। दूसरे सिपाही भी खून की आखिरी बूँद तक लड़े।

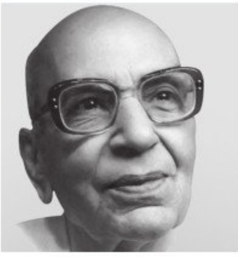
रणथंभौर की ये शहादतें, ये बलिदान, ये कुरबानियाँ वीरता के इतिहास में अपना जोड़ नहीं रखतीं और आज सदियों बाद भी उनसे अगरबत्तियों-सी, जीवन के सौरभ की भीनी एवं प्रेरक सुगंध आ रही है।



रोचक तथ्य

अलाउद्दीन खिलजी खिलजी वंश का दूसरा शासक था। खिलजी जितना बड़ा साम्राज्य अगले 300 वर्ष तक किसी शासक का नहीं रहा।

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'



लेखक-परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई, 1906 को सहारनपुर जिले के देवबंद गाँव में हुआ था। कन्हैयालाल का मुख्य कार्यक्षेत्र पत्रकारिता था। कन्हैयालाल हिंदी के जाने-माने निबंधकार हैं, जिन्होंने राजनैतिक और सामाजिक जीवन से संबंध रखने वाले अनेक निबंध लिखे हैं। इन्होंने पराधीनता के समय स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिसके कारण इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। इनका निधन 9 मई, 1995 को हो गया।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) माहमशाह ने अपना काम क्या बताया?

☐ बंदूकगिरी ☐ उठाईगिरी ☐ सिपाहीगिरी ☐ दादागिरी

(ख) माहमशाह किसके राज्य से भागकर आया था?

☐ शेरशाह सूरी के ☐ टीपू सुल्तान के ☐ अलाउद्दीन खिलजी के ☐ अकबर के

(ग) रणथंभौर वालों के लिए युद्ध किसका यज्ञ था?

☐ पूर्णाहुति का ☐ आत्मदान का ☐ प्रतिष्ठा का ☐ वीरता का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) राणा हम्मीर कौन था?

(ख) माहमशाह राणा हम्मीर के पास किसलिए आया था?

(ग) स्त्रियों ने क्या करने का फैसला किया था?

(घ) हम्मीर शरणार्थियों की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य क्यों समझता था?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) माहमशाह कौन था? उसने अपना क्या परिचय दिया?

....

....

(ख) माहमशाह से मिलने पर राणा हम्मीर का पहला प्रश्न क्या था? माहमशाह ने उसका क्या उत्तर दिया?

....

....

(ग) हम्मीर के सलाहकार माहमशाह को शरण देने के पक्ष में क्यों नहीं थे?

....

....

(घ) अलाउद्दीन के संदेश का हम्मीर ने क्या उत्तर दिया?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) शरणागत माहमशाह की रक्षा के लिए हम्मीर के त्याग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) हम्मीर किसे अपना कर्तव्य समझता था?

(ग) खिलजी का राणा हम्मीर के लिए आखिरी संदेश क्या था?

(घ) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) रणथंभौर के .... अपने .... में बैठे अपना राज-काज देख रहे थे।

(ख) महाराज! मैं सबके दरवाज़े गया, सबने मुझे .... दी।

(ग) .... की रक्षा राजपूतों का कर्तव्य है।

(घ) माहम को अपनी देख-रेख में मेरे .... करो।

(ङ) फ़ैसला हुआ कि कल किले का .... खोल दिया जाए और जमकर .... हो।

4. किसने-किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "मैं आपकी शरण में आया हूँ, महाराज!"	....	....
(ख) "कर्तव्य की सीमा है– कर्तव्य-पालन।"	....	....
(ग) "कोई कष्ट हो तो हमें कहना, जाओ।"	....	....
(घ) "सपने में भी उम्मीद न रखिएगा कि माहम को मैं आपके दरवाज़े लाऊँगा।"	....	....

5. निम्नलिखित पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

रणथंभौर के किले में एक सभा हुई कि अब क्या हो? माहमशाह ने बहुत खुशामद की, वह बहुत गिड़गिड़ाया कि उसे बादशाह को सौंपकर सुलह कर ली जाए, पर उसके प्रस्ताव का समर्थक वहाँ कोई न था। सच्चाई यह है कि हम्मीर और उनके साथियों के सामने यह प्रश्न ही न था कि हम कैसे बचें। उनकी विचार-दिशा तो केवल यह थी कि हम कैसे लड़ें। भावुकता का ऐसा ज्वार विश्व के इतिहास में शायद ही और कहीं आया हो।

फ़ैसला हुआ कि कल किले का द्वार खोल दिया जाए और जमकर युद्ध हो। इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था–आत्माहुति, सर्वस्व-समर्पण। जीत की कामना सिपाही को उत्साह देती है, तो विजय की आशा उसे बल। कामना और आशा के झूले पर इधर-से-उधर झूलने वाले ये सिपाही न थे–इन्हें झूलना नहीं, झूमना था, इन्हें बुझना नहीं, जूझना था। किले में यौवन की किलकारियाँ भरती इन स्त्रियों का क्या होगा? उन्होंने फ़ैसला किया कि किले के द्वार खुलने से पहले जौहर करेंगी।

(क) माहमशाह ने क्या खुशामद की?

....

(ख) भावुकता के किस ज्वार की बात की गई है?

....

(ग) युद्ध का स्पष्ट अर्थ क्या था?

....

(घ) स्त्रियों ने क्या फ़ैसला किया?

....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित एक शब्द को अनेक शब्दों (वाक्यांश) में बदलिए–

(क) योद्धा – ....

(ख) भंडारी – ....

(ग) शरणार्थी – ....

(घ) अदृश्य – ....

(ङ) नौकर – ....

(च) समर्थक – ....

(छ) बादशाह – ....

(ज) निर्दयी – ....

निश्चित अर्थ को प्रकट करने वाले व्यवस्थित शब्द-समूह को 'वाक्य' कहते हैं। रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–

1. सरल वाक्य– जिन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया होती है, उन्हें 'सरल वाक्य' कहते हैं। इन वाक्यों में एक ही विधेय होता है; जैसे– मनीष स्कूल से आया।
2. संयुक्त वाक्य– जिन वाक्यों में दो या अधिक उपवाक्य किसी समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं, उन्हें 'संयुक्त वाक्य' कहते हैं; जैसे-सीमा गा रही है और निशा नाच रही है।
3. मिश्र वाक्य– जिन वाक्यों में एक मुख्य उपवाक्य होता है और बाकी आश्रित उपवाक्य होते हैं; उन्हें 'मिश्रित' या 'मिश्र वाक्य' कहते हैं; जैसे– वह चित्र जो तुम लाए थे मुझे अच्छा लगा।

2. निम्नलिखित वाक्यों को कोष्ठक में दिए गए निर्देशों के अनुसार बदलिए–

(क) लड़ाई चलती रही। सामान और सिपाही घटते रहे। (संयुक्त वाक्य)

....

(ख) हम्मीर उस दिन कुछ सोच रहे थे कि माहमशाह आकर खड़े हो गए। (सरल वाक्य)

....

(ग) हम्मीर ने अपने सलाहकारों को देखा और अनुत्साहित पाया। (मिश्र वाक्य)

....

(घ) हम्मीर ने आँखें ऊपर कीं तो देखा कि एक बहादुर मुसलमान उसके सामने था। (सरल वाक्य)

....

(ङ) किले का द्वार खोल दिया गया और रणथंभौर के योद्धा रण में कूद पड़े। (मिश्र वाक्य)

....

3. 'आत्मदान' दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है– 'आत्म यानी स्वयं का दान' (त्याग)। पाठ में से ऐसे ही पाँच अन्य शब्द छाँटकर दिए गए उदाहरण के अनुसार लिखिए–

जैसे– ......आत्माहुति...... – ......आत्म (अपना/अपनी) आहुति......

(क) .... – ....

(ख) .... – ....

(ग) .... – ....

(घ) .... – ....

(ङ) .... – ....

शरणागत = शरण + आगत; यह दीर्घ संधि का उदाहरण है।
दीर्घ संधि में स्वरों का मेल इस प्रकार होता है–

शरण + आगत = शरणागत
नदी + ईश = नदीश
भानु + उदय = भानूदय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
विद्या + आलय = विद्यालय आदि

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

शब्द	=	संधि-विच्छेद
(क) परमार्थ	=	.... + ...
(ख) महात्मा	=	.... + ...
(ग) सत्याग्रह	=	.... + ...
(घ) वातावरण	=	.... + ...
(ङ) सहानुभूति	=	.... + ...

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

क्या कर्तव्य की कोई सीमा होती है? कर्तव्यों का पालन किस सीमा तक ज़रूरी है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)

1. क्या माहमशाह को खिलजी को न सौंपने का फ़ैसला सही था? तर्क सहित उत्तर दीजिए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)

2. यदि आपको प्राचीन भारत के किसी राजा से मुलाकात करने का मौका मिले, तो आप राजा से क्या-क्या पूछना चाहेंगे? कोई तीन प्रश्न लिखिए– (मेरी लेखन अभिव्यक्ति) (Writing Skills)

   प्र॰ 1. ....

   प्र॰ 2. ....

   प्र॰ 3. ....

3. अपने सहपाठियों के साथ मिलकर इस कहानी को संवादात्मक शैली में लिखकर नाटक तैयार कीजिए। इसे विद्यालय की सभा में प्रस्तुत कीजिए। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

4. दिल्ली पर शासन करने वाले किन्हीं दो राजाओं की वंशावली की सूची बनाइए। साथ ही उनका शासनकाल भी लिखिए। (सह-संबंध) (Connecting Link)

5. आपके अध्यापक/अध्यापिका पुस्तक के पृष्ठ संख्या 171 से एक अनुच्छेद पढ़कर सुनाएँगे। उसे ध्यानपूर्वक सुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए– (मेरी श्रवण कुशलता) (Listening Skills)

   (क) प्राणी की पहचान किससे होती है? ....

   (ख) सज्जन सर्वदा कैसी वाणी का प्रयोग करते हैं? ....

   (ग) कटु वाणी किसका कारण बनती है? ....

   (घ) मधुर वाणी किसके समान काम करती है? ....

मेरी परियोजना (Project Work)

1. पुस्तकालय जाकर अथवा इंटरनेट की सहायता से रणथंभौर के राजा हम्मीर से संबंधित जानकारी प्राप्त करके एक प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।

2. भारतवर्ष के 10 प्रसिद्ध राजाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए एक एलबम बनाइए।

3 संत तिरुवल्लुवर

'संत तिरुवल्लुवर' के विषय में विस्तार से पढ़ने से पहले आइए, उनके कुछ अनमोल विचार पढ़ें और उन्हें जीवन में अपनाएँ–

- बेहतरीन अवसर मिले तो उसे पकड़ लें और सर्वश्रेष्ठ काम ही करें।
- अच्छे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करें, लेकिन मूर्खों के बीच चुप्पी अपनाएँ।
- ऐसा काम न करें जिसके बारे में सोचकर पछतावा हो। गलती से हो गया है तो उसे दोहराएँ नहीं।
- काम को ठीक से समझने के बाद ही उसे करने के लिए आगे आएँ। काम शुरू करने के बाद उसे पूरा न कर पाना या बहाने बनाने से आपका ही अपमान होगा। कुछ करने से पहले दस बार सोचें।
- इरादों में मज़बूती होने से आगे बढ़ना आसान होता है, लेकिन व्यर्थ बैठे रहने से कुछ भी हासिल नहीं हो पाता है।

विचार-मंथन

क्या सचमुच संत दिव्य पुरुष होते हैं?

पठन

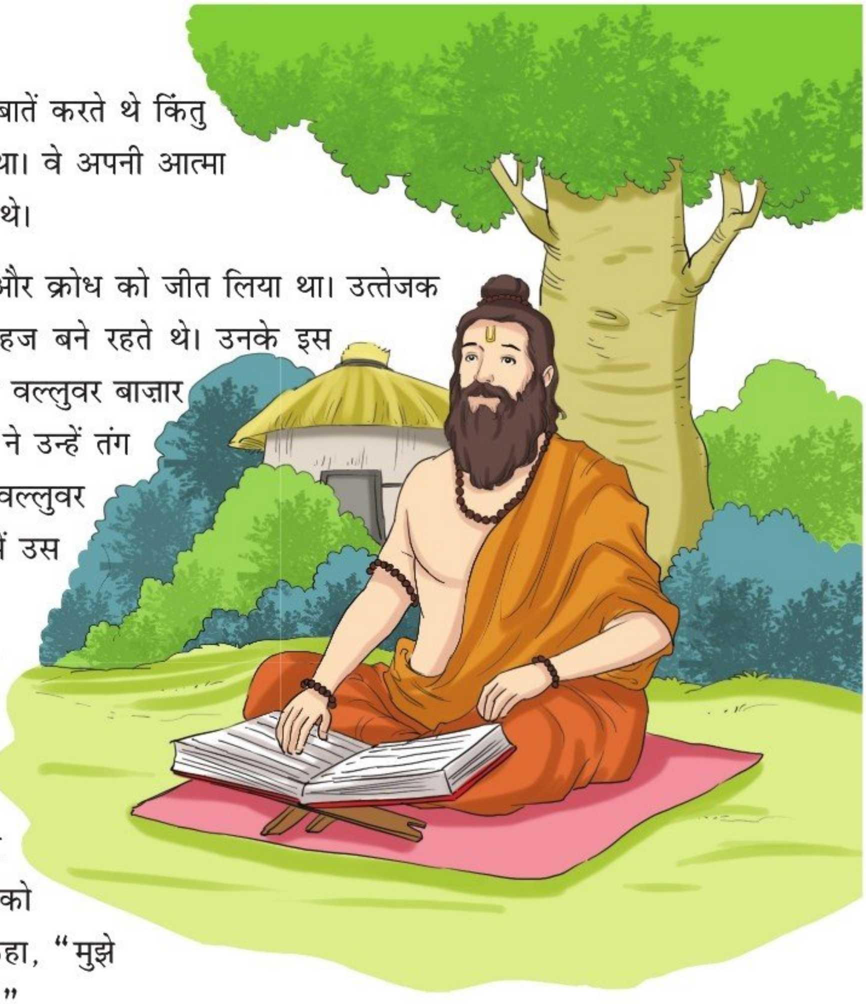
तमिल में 'तिरु' शब्द का अर्थ होता है– 'संत'। इस तरह 'तिरुवल्लुवर' का अर्थ हुआ– 'संत वल्लुवर'। वल्लुवर का जन्म आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में हुआ था। दक्षिण-पश्चिम समुद्र-तट पर 'महाबलीपुरम्' नामक प्रसिद्ध स्थान है। इससे लगभग 32 कि०मी० उत्तर में 'मयलापुर' नामक गाँव है। तिरुवल्लुवर का जन्म इसी गाँव में हुआ था। जनश्रुति के अनुसार तिरुवल्लुवर के पूर्वज राजाओं के यहाँ मंत्री थे।

अपने पूर्वजों की भाँति वल्लुवर ने भी राजा के यहाँ कार्य करना प्रारंभ किया, किंतु वे कुटिल राजनीति और छल-कपट से दूर, सरल एवं सहज प्रकृति के मनुष्य थे। राजकार्य उनके स्वभाव के विरुद्ध था। वे लौकिक ऐश्वर्य नहीं, बल्कि आंतरिक शांति के इच्छुक थे। इसलिए उन्होंने राजकार्य का त्याग करके कपड़ा बुनने अर्थात जुलाहे का धंधा

शब्द-कलश

जनश्रुति – लोगों में प्रचलित बात (Commonly believed)
लौकिक – दैवीय (Heavenly)
आंतरिक – अंदरूनी (Internal)

अपना लिया। लोग उनके विषय में तरह-तरह की बातें करते थे किंतु वल्लुवर पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वे अपनी आत्मा की आवाज़ के अनुसार अपने कार्य में लगे रहते थे।



वल्लुवर अत्यंत शांत स्वभाव के थे। उन्होंने लोभ और क्रोध को जीत लिया था। उत्तेजक परिस्थितियों में भी वे आपा नहीं खोते थे और सहज बने रहते थे। उनके इस गुण के विषय में एक कहानी प्रचलित है। एक दिन वल्लुवर बाज़ार में कपड़े फैलाए हुए बेच रहे थे। एक धनी युवक ने उन्हें तंग करने की सोची। वह युवक अपने मित्रों के साथ वल्लुवर के पास पहुँचा। वल्लुवर ने प्रेमपूर्वक मधुर वाणी में उस युवक से पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए, भाई?"

युवक ने उत्तर दिया, "मुझे एक चादर चाहिए।" वल्लुवर ने युवक को अच्छी-सी चादर निकालकर दे दी।

युवक ने चादर का दाम पूछा तो वल्लुवर ने उसका मूल्य चार रुपये बताया। उस युवक ने चादर को फाड़कर दो टुकड़े कर दिए और वल्लुवर से कहा, "मुझे आधी ही चादर की ज़रूरत है। इसका क्या लोगे?"

वल्लुवर ने क्रोध का भाव लाए बिना ही सहज भाव से उत्तर दिया, "दो रुपये।"

युवक उनकी और परीक्षा लेना चाहता था। उसने आधी चादर के भी दो टुकड़े कर दिए और उसमें से एक टुकड़ा उठाकर पूछा, "इसका क्या लोगे?"

वल्लुवर ने शांत मुद्रा में उत्तर दिया, "एक रुपया।"

युवक ने इस टुकड़े के भी दो टुकड़े कर दिए और एक टुकड़े का दाम पूछा। वल्लुवर ने उत्तर दिया, "आठ आने।"

युवक इस बात पर तुला था कि वल्लुवर को किसी-न-किसी प्रकार से क्रुद्ध किया जाए। वह टुकड़ों के भी टुकड़े करता गया और अंत में बोला, "ये टुकड़े तो बहुत छोटे हो गए। ये मेरे किसी काम नहीं आ सकते। मैं इन्हें नहीं लूँगा।"

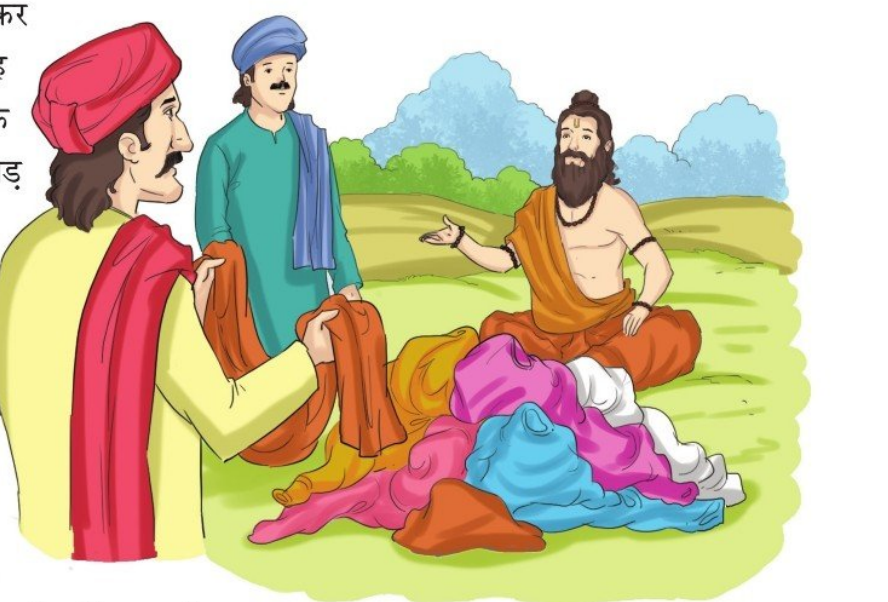
वल्लुवर ने सहज शांत स्वर में कहा, "तुम ठीक कहते हो, ये टुकड़े किसी काम नहीं आ सकते; ये व्यर्थ हैं। इन्हें फेंक दो।"



शब्द-कलश

आपा खोना – क्रोधित होना (Losing control)

वल्लुवर का यह सरल स्वभाव और संयम देखकर वह घमंडी और उद्दंड युवक आश्चर्यचकित रह गया। उसने चार रुपये निकाले और संकोचपूर्वक बोला, "ये चार रुपये लो। मैंने तुम्हारी चादर फाड़ डाली। तुम उसका पूरा दाम ले लो।"



तिरुवल्लुवर ने कहा, "मैंने तुम्हें कुछ दिया ही नहीं, फिर रुपये किस बात के लूँ? यदि तुमने चादर ले ली होती, तो अवश्य रुपये लेता। लेकिन जब तुमने चादर ली ही नहीं, तो मैं पैसे कैसे ले सकता हूँ?"

युवक में अभी धन का अभिमान बना हुआ था। उसने घमंडपूर्वक कहा, "तुम इसकी चिंता न करो। मेरे घर में बहुत धन है। क्या तुम्हें पता नहीं है कि मैं इस नगर के सबसे बड़े सेठ का बेटा हूँ।"

सोचो-सोचो!

क्या कभी कोई साधारण व्यक्ति अपने-आप पर इतना संयम रख सकता है जितना संत तिरुवल्लुवर रखते थे।

संत किसी के बल या धन की शक्ति से डरकर संयमी या विनम्र नहीं रहते अपितु ये गुण उनमें सहज ही होते हैं। यदि कोई उन्हें अपनी शक्ति या संपत्ति की धौंस देना चाहे, तो वे हिमालय-से दृढ़ हो जाते हैं। तिरुवल्लुवर भी इसी प्रकार के दृढ़-चरित्र वाले थे। उन्होंने धनिक-पुत्र की गर्वोक्तियों पर शांत स्वर में कहा, "प्रियवर! चादर बनाने में जो परिश्रम लगा है, तुम उसकी भरपाई नहीं कर सकते। यदि कर भी दो, तब भी तुमने अपना जो समय नष्ट किया है, उसकी पूर्ति कैसे कर सकते हो? उतनी देर में तुम कोई अच्छा कार्य कर सकते थे। सोचो तो, व्यर्थ का विवाद करके और कपड़े फाड़ने जैसे काम करने से तुम्हारा कितना नुकसान हुआ है। तुम व्यापारी हो। इस मनोवृत्ति से तुम्हें लाभ नहीं होगा। इस तरह के संयमहीन, उद्दंड और उच्छृंखल आचरण से थोड़े ही दिनों में लक्ष्मी तुमसे रूठ जाएगी, फिर तुम कहीं के नहीं रहोगे। "इसलिए मैं तुम्हारे हित के लिए ही तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें अपना समय अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए, व्यर्थ के कार्यों में नहीं।"

धनी और अभिमानी युवक पर इन शब्दों का बहुत गंभीर प्रभाव पड़ा। उसने वल्लुवर के चरण पकड़ लिए और बोला, "मुझे क्षमा कर दीजिए और कृपा करके मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।"

युवक अपने घर पहुँचा, तो उसने अपने पिता को सारी बातें कह सुनाईं। पिता ने जब यह सुना, तो वे आनंद से उछल पड़े। वे अपने लड़के के दुर्व्यवहार और उद्दंडता से बहुत दुखी रहते थे। वे उस महापुरुष के दर्शन करने के लिए

शब्द-कलश

संयम – धैर्य (Patience)
उद्दंड – शरारती (Mischievous)
धौंस देना – धमकी भरे शब्द बोलना (To threaten)
गर्वोक्ति – गर्व से भरी हुई बात (Pride)
उच्छृंखल – उद्दंड, निरंकुश (Obstinate)
दुर्व्यवहार – बुरा व्यवहार (Mistreat)

आतुर हो उठे, जिसने जरा-सी देर में उनके पुत्र का कायाकल्प कर दिया था। वे दौड़े-दौड़े तिरुवल्लुवर की कुटिया में पहुँचे। उन्होंने वल्लुवर के चरणों में सिर रख दिया और बोले, "मैं आपसे कभी उऋण नहीं हो सकता, महाराज! आपने मेरा उजड़ता हुआ घर आबाद कर दिया। आपने मेरे उच्छृंखल पुत्र को सुधारकर ऐसा उपकार किया है कि मैं आपका आजीवन आभारी रहूँगा।"

इसके बाद वह युवक तिरुवल्लुवर का शिष्य बन गया। वह नित्य-प्रति उनकी सेवा में उपस्थित होता और उनके उपदेश सुनता। कभी-कभी उसके साथ एलेल शिंगन भी जाता। तिरुवल्लुवर दोनों को सदुपदेश देते। वे नित्य ब्रह्ममुहूर्त में उठकर अपने उपदेशों को काव्य के साँचे में ढाल देते थे अर्थात उपदेशपरक काव्य-रचना करते थे और वह युवक उन कविताओं को कंठस्थ कर लेता था। एक दिन युवक के पिता ने उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि वे अपनी सारी कविताओं को ग्रंथ का रूप दे दें। यदि इन सारी रचनाओं को लिपिबद्ध करके ग्रंथ के रूप में जनता के सामने लाया जाए, तो इससे मानवता सदा के लिए इन उपदेशों का लाभ उठाती रहेगी।

तिरुवल्लुवर को यह प्रस्ताव बहुत पसंद आया। उन्होंने कहा "जो कुछ मेरा अनुभव है और भगवान की कृपा से ज्ञान का जो प्रकाश मुझे मिला है। उसे बाँट देने में मुझे परम प्रसन्नता होगी। सज्जन का कर्तव्य भी यही है कि जो कुछ उसके पास श्रेष्ठ हो, उसे लोगों में वितरित करे। यदि मेरे अनुभवों और उपदेशों से मानवता को थोड़ा भी लाभ हो सके, तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा। तुम्हारी सम्मति उत्तम है।"

वल्लुवर ने अपनी कविताओं को ग्रंथ का रूप दे दिया। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से मनुष्यों को जीवन और जगत के विषय में अपने अमूल्य अनुभवों से परिचित कराया है। उनके अनुसार जीवन में तीन पुरुषार्थ हैं– धर्म, अर्थ तथा काम। प्राचीन भारतीय विचारकों ने चार पुरुषार्थ गिनाए हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। तिरुवल्लुवर का कहना था, "मैं मोक्ष के विषय में कुछ नहीं कह सकता। जिस वस्तु के विषय में मेरी जानकारी नहीं है, उसके विषय में मैं उपदेश कैसे दे सकता हूँ?" इससे प्रकट होता है कि तिरुवल्लुवर पारमार्थिक दृष्टिकोण के साथ-साथ लौकिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण भी रखते थे।

तिरुवल्लुवर के ग्रंथ को उनके जीवन-काल में ही अपूर्व सम्मान मिल गया था। उन दिनों दक्षिण-भारत की मदुरा (मदुरै) नगरी में एक विद्वत्सभा थी, जो 'संगम' नाम से प्रसिद्ध थी। उस समय 'संगम' संस्था इतनी प्रसिद्ध और सम्मानित थी कि जिस ग्रंथ पर इसकी मुहर लग जाती, वह सार्वजनिक रूप से श्रेष्ठ ग्रंथ के रूप में मान्य हो जाता। इस सभा की अध्यक्षा स्वयं भगवती सरस्वती होती थीं। उनके लिए सर्वोच्च आसन नियत स्थान पर प्रतिष्ठित रहता था। 'संगम' ने कई दिनों तक इस ग्रंथ पर विचार किया और अंत में सभा सर्वसम्मति से इस निर्णय पर पहुँची कि तिरुवल्लुवर का काव्य वस्तुतः श्रेष्ठ है।



शब्द-कलश

- आतुर – बेचैन, व्याकुल (Enger)
- कायाकल्प होना – हृदय परिवर्तित होना (Transformation)
- उऋण – ऋणमुक्त (Debt free)
- ब्रह्ममुहूर्त – सूर्योदय से पहले का समय (Early morning)
- कंठस्थ – याद करना (Memorise)
- लिपिबद्ध – लिखकर (Written)
- वितरित – बाँटना (Distribute)
- सम्मति – सहमति (Agreement)
- पारमार्थिक – परोपकार का भाव (Altruism)
- विद्वत्सभा – विद्वानों की सभा (Assembly of scholars)
- नियत – निश्चित (Designated)
- सर्वसम्मति – सभी की सहमति (Consensus)

तिरुवल्लुवर ने यह ग्रंथ तमिल भाषा और कुरल छंद में रचा था। इसलिए इस काव्य की प्रसिद्धि 'तिरुक्कुरल' के नाम से हुई। 'तिरुक्कुरल' का अर्थ हिंदी में हुआ– 'संत के छंद'। यह ग्रंथ 'संतवाणी' के नाम से भी विख्यात है। 'तिरुक्कुरल' आज भी तमिल साहित्य की श्रेष्ठ रचना है। इसका अनुवाद अनेक भाषाओं में किया जा चुका है।



शब्द-कलश

विख्यात – प्रसिद्ध (Famous)



रोचक तथ्य

तिरुवल्लुवर ने अपना ग्रंथ काव्य में लिखा। इसमें दोहे से भी छोटी-छोटी कुल 1330 कविताएँ हैं।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) तिरुवल्लुवर का क्या अर्थ होता है?

☐ राधा वल्लभ ☐ संत वल्लुवर ☐ संत वल्लभ ☐ संत सुदर्शन

(ख) तिरुवल्लुवर के पिता के पूर्वज कौन थे?

☐ राजा के सेनापति ☐ राजा के दरबारी ☐ राजा के मंत्री ☐ राजा के पुरोहित

(ग) तिरुवल्लुवर के अनुसार जीवन के कितने पुरुषार्थ होते हैं?

☐ तीन ☐ चार ☐ पाँच ☐ सात

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक

(क) तमिल में 'तिरु' शब्द का क्या अर्थ है?

(ख) कवि तिरुवल्लुवर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ग) तिरुवल्लुवर का व्यक्तित्व कैसा था?

(घ) तिरुवल्लुवर ने राजकार्य का त्याग क्यों किया?

(ङ) धनी युवक किस प्रकार तिरुवल्लुवर का शिष्य बना?

लिखित

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) तिरुवल्लुवर ने राजकार्य का त्याग क्यों किया?

....

....

(ख) युवक किस बात पर तुला था?

....

....

(ग) युवक के चादर खरीदने से मना करने पर संत तिरुवल्लुवर की क्या प्रतिक्रिया हुई?

....

....

(घ) तिरुवल्लुवर ने किस ग्रंथ की रचना की तथा उसका मुख्य विषय क्या था?

....

....

(ङ) धनी युवक ने वल्लुवर से प्रभावित होकर क्या कहा?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) पाठ के आधार पर संत तिरुवल्लुवर के गुणों का वर्णन कीजिए।

(ख) तिरुवल्लुवर ने अपनी कविताओं के माध्यम से मनुष्यों को किससे परिचित करवाया?

(ग) 'संगम' क्या थी? उसने तिरुवल्लुवर के ग्रंथ के विषय में क्या निर्णय लिया?

(घ) इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

3. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'हाँ' अथवा 'नहीं' लिखिए–

(क) तिरुवल्लुवर के पूर्वज राजाओं के यहाँ मंत्री थे। – ....

(ख) युवक तिरुवल्लुवर का शिष्य नहीं बना। – ....

(ग) तिरुवल्लुवर के अनुसार जीवन में तीन पुरुषार्थ हैं। – ....

(घ) तिरुवल्लुवर का जन्म उत्तर भारत में हुआ था। – ....

(ङ) तिरुवल्लुवर के काव्य को श्रेष्ठ माना गया। – ....

4. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) तिरुवल्लुवर अत्यंत .... स्वभाव के थे।

(ख) युवक उनकी और .... लेना चाहता था।

(ग) इतनी लज्जा उठाकर भी युवक में अभी .... का अभिमान बना हुआ था।

(घ) इस मनोवृत्ति से तुम्हें .... नहीं होगा।

(ङ) तिरुवल्लुवर ने अपनी .... को ग्रंथ का रूप दे दिया।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण–दोष, स्वभाव, अवस्था के बारे में बताते हैं, उन्हें 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे– मिठास, बचपन, सुखी आदि।

1. निम्नलिखित शब्दों को भाववाचक संज्ञा में बदलिए–

(क) महान – ....

(ख) विशेष – ....

(ग) मनुष्य – ....

(घ) दुष्ट – ....

(ङ) सज्जन – ....

(च) व्यक्ति – ....

दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, वह 'संधि' कहलाता है; जैसे–
सूर्य + उदय = सूर्योदय इति + आदि = इत्यादि

2. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए–

(क) पुस्तक + आलय = ...

(ख) विद्या + आलय = ...

(ग) गण + ईश = ...

(घ) सत् + जन = ...

(ङ) रवि + इंद्र = ...

(च) सदा + एव = ...

भाषा के लिखित रूप में विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत करने वाले चिह्नों को 'विराम-चिह्न' कहते हैं; जैसे– । (पूर्णविराम), ? (प्रश्नसूचक चिह्न), ! (अल्पविराम) आदि।

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) तिरुवल्लुवर का अर्थ हिंदी में हुआ संत वल्लुवर

....

(ख) तुम्हें क्या चाहिए भाई वल्लुवर ने पूछा

....

(ग) तुम उसका पूरा दाम ले लो

....

(घ) वह संकोचपूर्वक बोला ये चार रुपये ले लो

....

(ङ) मदुरा मदुरै नगरी में एक विद्वतसभा थी

....

संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे 'लिंग' कहते हैं। लिंग के दो भेद होते हैं।

पुल्लिग– पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द 'पुल्लिग' कहलाते हैं; जैसे– लड़का, देवता आदि।

स्त्रीलिंग– स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द 'स्त्रीलिंग' कहलाते हैं; जैसे– लड़की, देवी आदि।

4. रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए–

(क) उनके <u>पिता ब्राह्मण</u> थे।

....

(ख) वल्लुवर ने <u>राजा</u> के यहाँ काम करना शुरू किया।

....

(ग) <u>युवक</u> ने चादर का दाम पूछा।

....

(घ) मैं यहाँ के सबसे धनी <u>पुरुष</u> का <u>पुत्र</u> हूँ।

....

(ङ) वह <u>लड़का</u> उनका <u>शिष्य</u> बन गया।

....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

तिरुवल्लुवर (तिरु वल्लुवर) नाम तिरु (एक तमिल शब्द) जिसका अर्थ माननीय होता है, जो श्री के समान है और वल्लुवर (तमिल परंपरा के अनुसार वल्लुव के लिए एक विनम्र नाम) से बना है। उनके वास्तविक नाम के बजाए वल्लुवर नाम एक सामान्य नाम है जो उनकी जाति/व्यवसाय का प्रतिनिधित्व करता है। तिरुवल्लुवर

के जन्म के बारे में कुछ किंवदंती भी रही हैं जिसमें उन्हें एक जैन समानार संत या एक हिंदू कहा गया है। लेकिन उनके धर्म के बारे में कोई सबूत उपलब्ध नहीं है। "कुरल कुराम समयम", तिरुक्कुरल प्रकाशन, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, 1979 में प्रकाशित इस कृति का आरंभ सर्वशक्तिमान भगवान को सादर प्रणाम करते हुए एक अध्याय से होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि तिरुवल्लुवर आस्तिक थे। लेकिन उनके परमेश्वर सर्वशक्तिमान हैं, सारे संसार के निर्माता हैं और जो अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। एक अन्य के अनुसार उनका जन्म और लालन-पालन मायलापुर में हुआ था जो वर्तमान में मद्रास शहर का एक हिस्सा है और उन्होंने अपनी कृति तिरुक्कुरल को जमा करने के लिए मदुरै की यात्रा की ताकि वे राजा (पंडियन) और उनके कवियों के समूह से अनुमोदन प्राप्त कर सकें। उनकी पत्नी का नाम वासुकी था।

(क) 'तिरु' किस भाषा का शब्द है?

....

(ख) वल्लुवर नाम किसका प्रतिनिधित्व करता है?

....

(ग) "कुरल कुराम समयम" का आरंभ किस अध्याय से होता है?

....

(घ) तिरुवल्लुवर के परमेश्वर कैसे थे?

....

(ङ) तिरुवल्लुवर ने मदुरै की यात्रा क्यों की?

....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

क्रोध किस तरह से मनुष्य का शत्रु है? इसके क्या-क्या दुष्परिणाम होते हैं?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. आपके अनुसार संत शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? अपने विचार प्रकट कीजिए।

2. अपने छोटे भाई को क्रोध न करने एवं सदाचार का महत्व समझाते हुए एक पत्र लिखिए–

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. 'ऐसे कौन-से गुण हैं, जो किसी व्यक्ति को संत बनाते हैं।'– विषय पर कक्षा में भाषण प्रस्तुत कीजिए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. भारत के किन्हीं पाँच प्रसिद्ध संतों के नाम तथा उनकी प्रसिद्ध रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।
2. तिरुवल्लुवर कपड़ा बुनने का काम करते थे। किसी कपड़ा बुनने वाले व्यक्ति से हुई काल्पनिक मुलाकात को संवाद-शैली में लिखिए।

4 जाना पहचाना अजनबी

प्रस्तुत पाठ एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है, जिसके लिए ताले तोड़ना बहुत ही सरल काम था। आइए, कहानी पढ़ने से पूर्व ताले के इतिहास के विषय में कुछ जानें–

ताला एक यांत्रिक युक्ति है जो घरों के दरवाज़ों, वाहनों, किसी बरतन आदि में लगाया जाता है ताकि कोई अन्य व्यक्ति इनके अंदर से कोई सामान चुरा न पाए। ताले को चाबी या एक उचित क्रम में संयोजन के द्वारा खोला जा सकता है।


सिरपुर (छतीसगढ़ भारत) में खुदाई में प्राप्त हुआ 12वीं शताब्दी का कुंजी सहित ताला।


वर्ष 1628 में स्वीडन के जहाज़ वासा से प्राप्त लकड़ी के बक्से के लिए सरल त्री-डिज़ लॉकिंग तंत्र।


काठमांडू में एक मध्यकालीन ताला

विचार-मंथन

क्या आपको कभी किसी अजनबी को देखकर ऐसा लगा है कि आपने उसे पहले कहीं देखा है?

पठन

जेल की दुकान में जिमी वैलंटाइन बड़ी तन्मयता से जूते सिलने का काम कर रहा था कि तभी चौकीदार वहाँ आया और उसे अपने साथ सामने वाले ऑफ़िस में वॉर्डन के पास ले गया।

"आओ जिमी! तुम्हारे लिए खुशखबरी है। कल सुबह तुम यहाँ से रिहा कर दिए जाओगे।" वॉर्डन ने उसे क्षमादान का कागज़ थमाते हुए कहा।

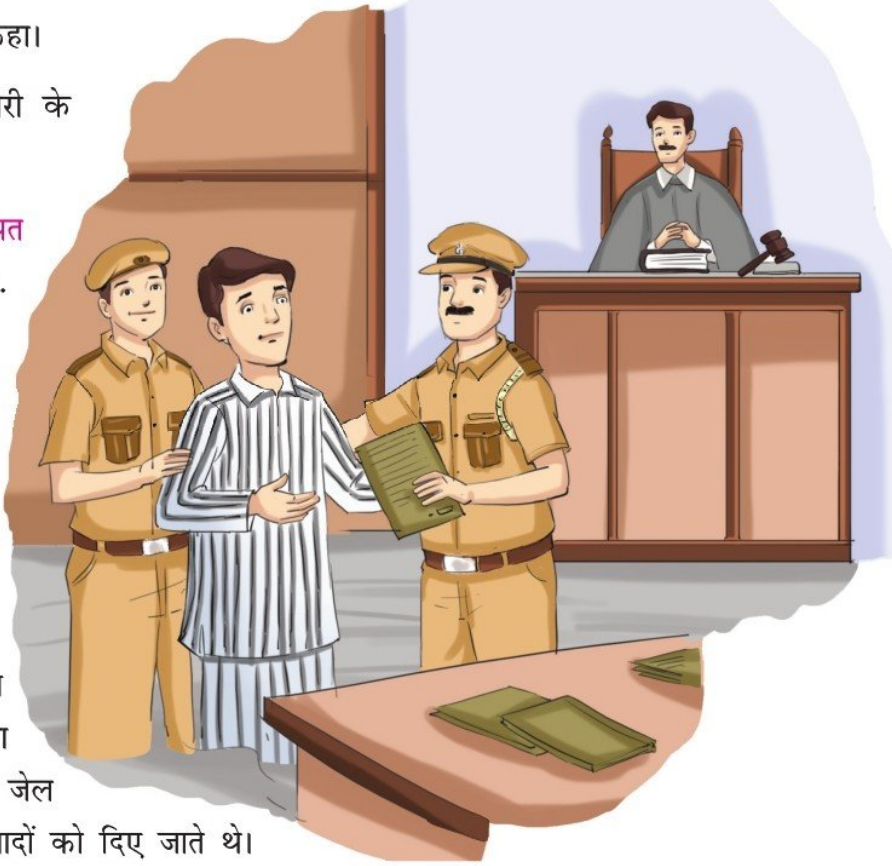
कागज़ थामते हुए जिमी ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। वास्तव में चार वर्ष की कैद में से अब तक दस महीने की सज़ा तो वह काट ही चुका था। जबकि उसे उम्मीद थी कि अधिक-से-अधिक तीन महीने ही अंदर रहना पड़ेगा, क्योंकि उसका दोस्त माइक उसकी सज़ा माफ़ करवाने की कोशिश में लगा था।

शब्द-कलश

तन्मयता – तल्लीनता (Concentration)
वॉर्डन – रक्षक, अधीक्षक (Warden)

वॉर्डन ने उसे समझाते हुए कहा, " तो जिमी! अब आदमी बनकर दिखाओ। मैं जानता हूँ कि तुम दिल के बहुत भले हो। अब ये तिजोरियाँ-विजोरियाँ तोड़ना छोड़ो!"

"मैं और तिजोरी?" जिमी ने आश्चर्य से कहा।



वॉर्डन हँसा, "फिर स्प्रिंगफ़ील्ड में हुई चोरी के जुर्म में तुम्हें क्यों पकड़ा गया?"

"स्प्रिंगफ़ील्ड और मैं!" जिमी ने बड़ी मासूमियत से कहा, "वॉर्डन साहब! मैं तो कभी स्प्रिंग. फील्ड गया ही नहीं।"

"क्रोनिन! इसे ले जाओ।" वार्डन ने मुसकराते हुए कहा, "सुबह सात बजे इसे रिहा कर देना।" फिर जिमी की ओर देखते हुए कहा, "और हाँ, मेरी बात पर ध्यान देना जिमी!"

अगले दिन सुबह जिमी वॉर्डन के ऑफ़िस में खड़ा था। उसके बदन पर चुस्त, भड़कीला सूट था और पैरों में चरमराने वाले जूते, जो जेल अधिकारियों की ओर से सभी सरकारी दामादों को दिए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसे रेल की एक टिकट और पाँच डॉलर भी मिले थे। कानून के रखवालों का यह मानना था कि इसकी सहायता से वह फिर से नेक और खाता-पीता नागरिक बन जाएगा। जेल के रजिस्टर में 'जिमी वैलंटाइन, 9762' के आगे 'गवर्नर द्वारा क्षमादान' लिख दिया गया और मिस्टर जिमी वैलंटाइन बाहर की खिली धूप में निकल आए।

रास्ते में पक्षियों की चहचहाहट, मधुर संगीत, झूमते पेड़ों और महकते फूलों को अनदेखा-अनसुना करते हुए जिमी एक रेस्तराँ में घुसा। वहाँ मुरगी और बीयर के रूप में उसने आज़ादी का पहला स्वाद चखा। बाहर निकलकर उसने रेस्तराँ के दरवाज़े पर बैठे अंधे की टोपी की ओर एक सिक्का उछाला और स्टेशन की ओर चल दिया। तीन घंटे बाद वह माइक डॉलर के कैफ़े में था।

"माफ़ करना जिमी! स्प्रिंगफ़ील्ड में चोरी के बाद बहुत हंगामा हुआ, जिसके कारण क्षमादान दिलवाने में हमें ज़्यादा समय लग गया।" माइक ने लाचारी जताते हुए कहा।

शब्द-कलश

मासूमियत – मासूम होने का भाव (Innocence)
अनदेखा – बिना देखा (Unseen)
अनसुना – बिना सुना (Unheard)

" माइक! कोई बात नहीं, मेरे घर की चाबी देना।" जिमी ने कहा।

माइक ने उसे चाबी थमा दी। चाबी लेकर जिमी ने अपना कमरा खोला और अंदर चारों ओर देखा। सब कुछ वैसा ही था जैसा छोड़कर गया था, यहाँ तक कि फ़र्श पर गिरा बेन प्राइस के कॉलर का बटन भी, जो उन दोनों की हाथापाई में टूटकर गिरा था। आखिरकार प्रख्यात जासूस बेन प्राइस ने उसे पकड़ ही लिया था। और, फिर यह दस महीने की सज़ा!

जिमी ने आगे बढ़कर दीवार में बनी अलमारी से अपनी अटैची निकाली। उसपर धूल की परत जम चुकी थी। कुछ देर वह अटैची में रखे अपने अनमोल खजाने को निहारता रहा–बर्मा, क्लैंप, और न जाने ऐसे ही कितने अजीबोगरीब औज़ार। खास तरह के स्टील के बने हुए। इनमें से कई तो जिमी ने स्वयं बनाए थे।

जिमी ने बड़ी लगन से अपनी अटैची साफ़ की, और आधे घंटे बाद वह नीचे था। उसने अब बेहतरीन कपड़े पहने हुए थे और उसके हाथ में वही अटैची थी।

एक सप्ताह बाद रिचमंड, इंडियाना में एक तिजोरी को बड़ी सफ़ाई से खाली कर दिया गया। उसके दो सप्ताह बाद लोगनस्पोर्ट में एक नई और मज़बूत तिजोरी को बहुत आसानी से खोलकर उसमें से पंद्रह सौ डॉलर साफ़ कर लिए गए। इन वारदातों का बेन प्राइस की नज़र में आना स्वाभाविक था। बेन प्राइस अब तक जिमी की आदतों से अच्छी तरह परिचित हो गया था। वारदात के स्थानों का निरीक्षण करने के पश्चात, उसे कहते हुए सुना गया–'लगता है, जिमी ने फिर से काम शुरू कर दिया है। इस ताले को देखिए, इसे इतनी आसानी से खोला गया है जैसे बरसाती मौसम में मूली उखाड़ी जाती है। जिमी को तिजोरियों में छेद करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।'

एक दिन दोपहर में जिमी अपनी अटैची लिए हुए छोटे-से एक शहर एलमोर पहुँचा। स्टेशन से सवारी लेने की बजाय वह पैदल ही होटल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसकी नज़र एक खूबसूरत लड़की पर पड़ी। उससे नज़र मिलते ही जिमी भूल गया कि वह कौन है। लड़की भी जिमी को देखकर ठिठक गई, जिमी का व्यक्तित्व भी कम आकर्षक नहीं था। पलभर बाद ही लड़की बगल के 'एलमोर बैंक' के अंदर चली गई।

"यह पौली सिंम्पसन ही है न?" जिमी ने बड़ी चालाकी से पास खड़े एक लड़के से पूछा।

"नहीं, यह एनाबेल एडम्स है।" लड़के ने बताया, "यह बैंक इसके पिता का है।"

जिमी मन-ही-मन कुछ तय करते हुए होटल पहुँचा। वहाँ उसने 'रैल्फ़ डी॰ स्पेंसर' के नाम से एक कमरा लिया।

साल के अंत में रैल्फ़ डी॰ स्पेंसर की स्थिति इस प्रकार थी– उसे समाज में आदर और मान्यता मिल गई थी। उसकी जूते की दुकान खूब चल रही थी और कुछ दिनों के बाद ही उसकी और एनाबेल एडम्स की शादी होने वाली थी।



शब्द-कलश

हाथापाई – उठा-पटक (Fighting)
प्रख्यात – अति प्रसिद्ध (Famous)
अनमोल – जिसका कोई मोल न हो (Priceless)
निरीक्षण – गौर से देखना (Inspection)
ठिठक जाना – सहसा रुक जाना (To stop suddenly)
आकर्षक – सुंदर (Attractive)

एक दिन उसने सेंट लुई स्थित अपने मित्र को एक पत्र लिखा–

> प्रिय दोस्त,
>
> बुधवार की रात नौ बजे लिट्ल रॉक में सलिवन के घर में मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। मेरे कुछ छोटे-मोटे काम हैं, जिन्हें मैं चाहता हूँ कि तुम पूरा कर दो। मैं तुम्हें अपने औज़ार भी भेंट करना चाहता हूँ। मुझे पता है, इन्हें पाकर तुम्हें खुशी होगी और हाँ बिली! अपना पुराना धंधा मैंने छोड़ दिया है। एक साल हो गया। मेरे पास एक अच्छी दुकान है। ईमानदारी से जीवन बिता रहा हूँ, और अब से दो सप्ताह बाद, मैं इस दुनिया की सबसे अच्छी लड़की से शादी करने जा रहा हूँ। यही ज़िंदगी है बिली–ईमानदार ज़िंदगी। एक अरब डॉलर के लिए भी मैं दूसरों के पैसे को हाथ नहीं लगाऊँगा। शादी करने के बाद मैं सबकुछ बेचकर कहीं और चला जाऊँगा, जहाँ मुझे अपनी पुरानी ज़िंदगी से कोई, खतरा नहीं रहेगा। सच कहता हूँ बिली! वह बहुत अच्छी है। उसे मुझपर विश्वास है। सारी दुनिया मिल जाए, फिर भी अब मैं ऐसा-वैसा काम नहीं करना चाहूँगा। सलिवन के घर ज़रूर आना। मुझे हर हाल में तुमसे मिलना है। औज़ार मैं अपने साथ लेता आऊँगा।
>
> तुम्हारा दोस्त
> जिमी

उसी रात जिमी को ढूँढ़ता हुआ बेन प्राइस भी एलमोर पहुँचा। शहर में उसे जो कुछ भी पता करना था, कर लिया। 'तो जिमी मिस्टर एडम्स की बेटी से शादी करने जा रहा है!' बेन ने अपने-आपसे कहा।

बुधवार की सुबह नाश्ता करने के बाद जिमी को अपनी शादी के कपड़े सिलवाने के लिए लिट्ल रॉक जाना था और इसी बहाने वह अपनी बहुमूल्य अटैची अपने दोस्त के सुपुर्द करने वाला था।

उस दिन एडम्स परिवार जिमी को साथ लेकर बैंक पहुँचा। जिमी के साथ उसकी अटैची भी थी।

एडम्स साहब ने हाल ही में अपने 'एलमोर बैंक' में नई तिजोरी लगवाई थी। वह अपने परिवार वालों को तिजोरी दिखा रहे थे। एनाबेल की बड़ी बहन की दो बेटियाँ– मे और अगाथा कभी तिजोरी के चमकते दरवाज़े को छूतीं तो कभी उसके ताले को। एडम्स साहब अपने होने वाले दामाद को तिजोरी के ताले की विशेषता बता रहे थे। लेकिन 'स्पेंसर साहब' उसमें कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे। कुछ दूरी पर खड़ा बेन प्राइस बड़ी उत्सुकता से सारी गतिविधियों को देख रहा था। तभी अचानक किसी बच्चे और औरत के चीखने की आवाज़ आई। हुआ यों था कि खेल-ही-खेल में मे ने अगाथा को उस तिजोरी में घुसाकर ताले का नंबर घुमा दिया था, जिससे दरवाज़ा बंद हो गया था। उसने मिस्टर एडम्स को ऐसा करते हुए देखा था।

मिस्टर एडम्स ने तिजोरी के हैंडिल को कई तरह से घुमाया, लेकिन असफल रहे। निराश होकर उन्होंने कहा, "यह ताला खास नंबर मिलाने से ही खुलेगा, और वह नंबर अभी सेट ही नहीं किया गया है।"

शब्द-कलश

सुपुर्द करना – सौंपना (Handover)
दिलचस्पी – रुचि (Interest)

अगाथा की माँ पागलों की तरह चीख रही थी, "दरवाज़ा तोड़ दो! मेरी बच्ची मर जाएगी! कोई कुछ तो करो," वह बेतहाशा दरवाज़े को पीटती जा रही थी।

"आसपास कोई ऐसा आदमी नहीं है जो इस दरवाज़े को खोल सके," एडम्स साहब ने काँपती आवाज़ में कहा, "हे भगवान! स्पेंसर, अब हम क्या करें?"

एनाबेल ने जिमी की ओर देखा और कहा, "रैल्फ़! क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?"

रैल्फ़ ने उसकी ओर हलकी मुसकराहट के साथ देखा और कहा, "एनाबेल! यह गुलाब मुझे दे दो!"

एनाबेल को विश्वास नहीं हुआ कि उसने ठीक सुना है, फिर भी अपने कोट में लगा गुलाब निकालकर जिमी के हाथ में पकड़ा दिया। जिमी ने अपना कोट उतार फेंका और उस गुलाब को जेब में डालकर वह कमीज़ की बाँहें मोड़ने लगा। 'रैल्फ़ स्पेंसर' की जगह अब जिमी वैलंटाइन ने ले ली थी।

"आप सभी लोग दरवाज़े के सामने से हट जाएँ," वहाँ खड़े लोगों को जिमी ने आदेश दिया।

आसपास की भीड़ से बेखबर होकर उसने अपनी अटैची खोली और औज़ार निकाले। साथ ही, वह धीरे-धीरे सीटी भी बजाने लगा। काम करते समय अकसर वह ऐसा ही करता था। कुछ क्षणों में ही जिमी का प्यारा बर्मा स्टील के दरवाज़े में बड़ी आसानी से छेद कर रहा था। चारों ओर सन्नाटा छा गया था और लोग मंत्रमुग्ध होकर उसकी कारीगरी को देख रहे थे।

सोचो-सोचो!

तिजोरी का ताला तोड़ने के बाद बेन अगर जिमी की सच्चाई सबको बता देता, तो क्या होता?

कुछ ही क्षणों में जिमी ने तिजोरी का दरवाज़ा खोल दिया था। बेहोशी के कगार पर पहुँच चुकी अगाथा को उसकी माँ ने गोद में उठा लिया और उसे बेतहाशा चूमने लगी।



जिमी ने अपना कोट पहना और चुपचाप बैंक के दरवाज़े की ओर आगे बढ़ने लगा। बढ़ते समय उसे लगा कि किसी ने उसे पुकारा, "रैल्फ़!" लेकिन वह रुका नहीं। दरवाज़े पर लगभग उसका रास्ता रोके हुए बेन प्राइस खड़ा था।

शब्द-कलश

बेखबर – अनजान (Unknown/unaware)
मंत्रमुग्ध होना – वश में होना (Mesmerised)
कगार – किनारा (On the edge)

"हैलो, बेन!" जिमी ने फीकी मुसकान के साथ कहा, "आखिर, तुम पहुँच ही गए।" चलो, चलते हैं। अब मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

"लगता है आपसे कोई गलती हो गई है मिस्टर स्पेंसर," बेन प्राइस की प्रतिक्रिया अप्रत्याशित थी, "मैं आपको नहीं जानता। बाहर खड़ी बग्घी शायद आप ही का इंतज़ार कर रही है, है न?"

इतना कहकर बेन प्राइस मुड़ा और बाहर निकलकर ओझल हो गया।

–ओ' हेनरी



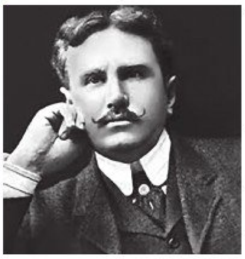
शब्द-कलश

प्रतिक्रिया – विपरीत क्रिया (Reaction)
अप्रत्याशित – जिसकी आशा न हो (Unexpected)
ओझल – गायब (Disappear)



रोचक तथ्य

मनुस्मृति और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी भारतवर्ष में गुप्तचरों का उल्लेख मिलता है।



लेखक-परिचय

ओ हेनरी एक अमेरिकी लेखक है, जिनका जन्म 11 सितंबर, 1862 को हुआ था। उनका मूल नाम विलियम सिडनी पोर्टर था। जब ओ हेनरी 3 साल के थे, उनकी माँ का निधन हो गया था। इन्होंने लगभग 250 कहानियाँ लिखीं। इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं– द लास्ट लीफ, द ग्रीन डोर, द गिफ़्ट ऑफ़ दे मैगी। इनका निधन 5 जून, 1910 को हुआ।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) जिमी कितने महीने की सज़ा काट चुका था?

☐ दस ☐ छह ☐ चार ☐ ग्यारह

(ख) चोरी के बाद कहाँ बहुत हंगामा हुआ था?

☐ फिलेडेल्फिया ☐ कैलीफोर्निया ☐ स्प्रिंगफ़ील्ड ☐ इंडियाना

(ग) जासूस का क्या नाम था?

☐ बेन प्राइस ☐ माइक ☐ मैकशावर ☐ डोरियन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक

(क) जिमी वैलंटाइन जेल में क्या काम कर रहा था?

(ख) 'जाना-पहचाना अजनबी' कहानी का लेखक कौन है?

(ग) चौकीदार जिमी को कहाँ ले गया?

(घ) जिमी को पकड़ने वाले प्रख्यात जासूस का क्या नाम था?

(ङ) तिजोरी में बंद होने वाली बच्ची का नाम क्या था?

लिखित

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) चौकीदार जिमी को वॉर्डन के पास क्यों ले गया था?

....

....

(ख) रिहाई के कागज़ लेते हुए भी जिमी ने कोई उत्सुकता क्यों नहीं दिखाई?

....

....

(ग) अगाथा तिजोरी में कैसे बंद हो गई थी?

....

....

(घ) जेल से रिहा होने के बाद जिमी ने क्या किया?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) जिमी वैलंटाइन को जेल की सज़ा क्यों हुई?

(ख) जिमी की अटैची में क्या-क्या सामान था?

(ग) बेन प्राइस को कैसे पता चला कि लूट की वारदातों के पीछे जिमी का हाथ है?

(घ) 'रैल्फ़ डी॰ स्पेंसर' की जगह अब 'जिमी वैलंटाइन' ने ले ली थी। प्रस्तुत पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) जिमी का एक कैदी से लेकर रैल्फ़ डी॰ स्पेंसर बनने तक का सफ़र कैसा था?

3. किसने-किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "आओ जिमी! तुम्हारे लिए खुशखबरी है।"	....	....
(ख) "मैं तो कभी स्प्रिंगफ़ील्ड गया ही नहीं।"	....	....
(ग) "सुबह सात बजे इसे रिहा कर देना।"	....	....
(घ) "माफ़ करना जिमी! स्प्रिंगफ़ील्ड में चोरी के बाद बहुत हंगामा हुआ।"	....	....
(ङ) "रैल्फ! क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?"	....	....

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) चौकीदार जिमी को वार्डन के पास ले गया। ....

(ख) जिमी को आठ महीने कैद की सज़ा और भुगतनी थी। ....

(ग) जिमी कभी स्प्रिंगफील्ड नहीं गया था। ....

(घ) वार्डन के ऑफिस में जिमी फटे कपड़े पहनकर आया। ....

(ङ) जिमी ने अलमारी से अपनी अटैची निकाली। ....

(च) जिमी अपनी अटैची लिए एलमोरा पहुँचा। ....

(छ) जिमी को अपने जन्मदिन के कपड़े सिलवाने थे। ....

5. निम्नलिखित पाठांश पढ़कर प्रश्नों के सही विकल्प पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

उसके बदन पर चुस्त, भड़कीला सूट था और पैरों में चरमराने वाले जूते, जो जेल अधिकारियों की ओर से सभी सरकारी दामादों को दिए जाते थे। इसके अतिरिक्त उसे रेल की एक टिकट और पाँच डॉलर भी मिले थे।

(क) प्रस्तुत पंक्तियों में किसकी बात की जा रही है?

(i) ☐ वार्डन की (iii) ☐ जिमी वैलंटाइन की

(ii) ☐ क्रोनिन की (iv) ☐ बेन प्राइस की

(ख) 'सरकारी दामादों' किन लोगों के लिए आया है?

(i) ☐ अधिकारियों के लिए (iii) ☐ पुलिस के लिए

(ii) ☐ नेताओं के लिए (iv) ☐ कैदियों के लिए

(ग) उसे रेल की टिकट और पाँच डॉलर किसलिए दिए गए?

(i) ☐ वह बेहतर व्यक्ति बने (iii) ☐ वह घूम सके

(ii) ☐ वह चोरी करे (iv) ☐ वह होटल में जाए

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

जब किसी वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो उसे 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं।

1. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जो दिखाई न दे – ....

(ख) हित चाहनेवाला – ....

(ग) तेज़ बुद्धिवाला – ....

(घ) जो अधिक जानता हो – ....

शब्दों के अंत में एँ, ए, याँ, जन, गण, वृंद, लोग आदि लगने से एकवचन शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं; जैसे– गाय + एँ = गाएँ बेटा + ए = बेटे गुरु + जन = गुरुजन नेता + गण = नेतागण

2. निम्नलिखित शब्दों का बहुवचन रूप लिखिए–

(क) लड़का – ....

(ख) नीति – ....

(ग) बहू – ....

(घ) ताला – ....

(ङ) खिड़की – ....

(च) तिजोरी – ....

'क्षमादान' शब्द 'क्षमा' और 'दान' दो शब्दों के मिलने से बना है। क्षम, क्षमणीय, क्षमा, क्षमालु, क्षमित, क्षमी, क्षम्य एक ही शब्द के कई अन्य रूप हैं। इसी प्रकार दान, दानी, दानव, दानीवर, दानवी, दाना, आदि एक ही शब्द के अन्य रूप हैं। इस प्रकार का रूपांतर दूसरे शब्दों में भी होता है।

3. पाठ में से पाँच शब्द चुनकर उनके तीन-तीन रूप लिखिए–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग, मूलशब्द और प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

(क) विशेषता = ... + ... + ...

(ख) अप्रत्याशित = ... + ... + ...

(ग) बेहोशी = ... + ... + ...

(घ) स्वाभाविक = ... + ... + ...

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

मधुर तथा धैर्यपूर्ण वचन हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



1. यदि कोई अपराधी अच्छा इनसान बनकर ज़िंदगी बिताना चाहता है, तो क्या हमें उसे एक मौका देना चाहिए? सोचकर बताइए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)
2. जेल में कैदियों से किस प्रकार के कार्य करवाए जाते होंगे? आपस में चर्चा कीजिए। (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)
3. प्रत्येक देश की अपनी-अपनी 'जासूसी संस्थाएँ' (खुफ़िया एजेंसी) होती हैं। किन्हीं चार देशों की संस्थाओं के नाम पता करके लिखिए। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. चाबी बनाने वाले की तरफ़ से किसी भी ताले की चाबी बना देने का एक विज्ञापन बनाइए।
2. एक आम नागरिक पुलिस की कैसे सहायता कर सकता है? जानकारी एकत्रित कीजिए।

मेरा पिटारा

देखो चकरा न जाना




"रँगे हाथों पकड़ना किसे कहते हैं?"
"जब हाथों को रँगकर किसी को पकड़ लेते हैं, तो उसे रँगे हाथों पकड़ना कहते हैं।"
"भारत में सबसे ज़्यादा ठंड कहाँ होती है?"
"जी, रेफ्रीजरेटर में।"
"बेटा! बताओ कि यह छोटूराम नमकीन के पैकेट पर ग्रीन डॉट क्या दर्शाता है?"
"इसका मतलब है कि छोटूराम नमकीन अभी ऑन लाइन है।"
"सोनू, तुम्हारे कान में दर्द है क्या? तुमने एक कान में रुई क्यों ठूँसी हुई है?"
"नैन्सी, तुमने ही तो कहा था कि एक कान से सुनकर दूसरे से मत निकालो।"
"कितनी भी ठंड हो, मैं रोज़ नहाता हूँ।"
"मैं तो दो बार नहाता हूँ।"
"वाह, तुम तो बहुत बहादुर हो।"
"नहीं समझे! मैं दो बार नहाता हूँ, पर महीने में।"

5 शक्ति और क्षमा

प्रस्तुत कविता रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य से ली गई है। कवि का मानना है कि व्यक्ति को क्षमाशील होने के साथ पराक्रमी होना भी ज़रूरी है। बिना शक्ति के पराक्रम का कोई मोल नहीं है। आइए, पाठ पढ़ने से पूर्व नीचे दी गई कविता पढ़ें–

हम वीर हैं तो फिर वीरों की,
तो शान ज़रूरी होती है।
शस्त्र से हो, या शास्त्र से हो,
पहचान ज़रूरी होती है।

दुष्टों को उनकी दुष्टता का,
कुछ दण्ड ज़रूरी होता है।
पापों के लिए पापियों का,
संहार ज़रूरी होता है।

भय बिन प्रीत नहीं होती,
यह बात सभी ने मानी है।
क्षमा उसी की शोभा देती,
जिसकी शक्ति जग ने जानी है।



विचार-मंथन

कविता के शीर्षक को पढ़कर आपके मस्तिष्क में कैसे विचार उमड़ते हैं? कवि ने 'शक्ति' और 'क्षमा' शब्द शीर्षक में क्यों रखे होंगे?

पठन

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल,
सबका लिया सहारा।
पर नरव्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो, कहाँ कब हारा।।



क्षमाशील हो रिपु समक्ष,
तुम हुए विनत जितना ही।
दुष्ट कौरवों ने तुमको,
कायर समझा उतना ही।।



शब्द-कलश

मनोबल – मन का बल (Willpower)
सुयोधन – दुर्योधन (Duryodhan)
क्षमाशील – दयालु (Kind)
रिपु समक्ष – शत्रु के सामने (In front of enemy)
विनत – विनम्र, झुका हुआ (Polite)

क्षमा शोभती उसी भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।।

तीन दिवस तक पंथ माँगते,
रघुपति सिंधु-किनारे।
बैठे पढ़ते रहे, छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।।

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से।
उठी धधक पौरुष की,
आग राम के शर से।।

सिंधु देह-धर 'त्राहि-त्राहि',
करता आ गिरा शरण में।
चरण-पूज, दासता ग्रहण की,
बँधा मूढ़, बंधन में।।

सच पूछो तो शर में ही,
बसती है दीप्ति विनय की।
संधि-वचन संपूज्य उसी का,
जिसमें शक्ति विजय की।।

सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

सोचो-सोचो!

इस कविता में कौन, किसे, क्या समझा रहा है?



रोचक तथ्य

महाभारत के युद्ध में कुरुक्षेत्र में इतना खून बहा था कि वहाँ की मिट्टी का रंग आज भी लाल है।

शब्द-कलश

भुजंग – साँप (Snake)
गरल – विष, ज़हर (Poison)
विनीत – सुशील, शिष्ट (Good natured)
सिंधु-किनारे – समुद्र के तट पर (At the sea shore)
छंद – श्लोक (Couplets)
अनुनय – प्रार्थना (Request)
नाद – शब्द (Word)
पौरुष – पुरुषत्व (Bravery/Manliness)
शर – बाण (Arrow)
त्राहि-त्राहि करना – बचाओ-बचाओ चिल्लाना (Crying for help)
दीप्ति – कांति, तेज (Glow)

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) सुयोधन को किसकी उपमा दी गई है?

☐ नरसर्प ☐ नरसिंह ☐ नरव्याघ्र ☐ नरोत्तम

(ख) दुष्ट कौरवों ने पांडवों को क्या समझा?

☐ सुशील ☐ प्रेमी ☐ कायर ☐ सज्जन

(ग) रघुपति सिंधु से कितने दिनों से पथ माँग रहे थे?

☐ चार ☐ दो ☐ तीन ☐ पाँच

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) सुयोधन कौन था?

(ख) क्षमाशील को लोग क्या समझते हैं?

(ग) क्षमा किसे शोभा देती है?

(घ) श्रीराम समुद्र से कितने दिनों से रास्ता माँग रहे थे?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) पांडवों ने किस-किसका सहारा लिया?

....

....

(ख) कवि के अनुसार क्षमा किसे शोभा नहीं देती?

....

....

(ग) श्रीराम को समुद्र पर क्रोध क्यों आया?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) संसार में किसका सम्मान होता है?

(ख) श्रीराम के प्रार्थना करने और फिर क्रोध करने से समुद्र के व्यवहार में क्या अंतर आया? अपने शब्दों में लिखिए।

(ग) कौरव पांडवों को कायर क्यों समझते थे?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए–

(क) क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत, सरल हो।।

भावार्थ– ....

....

....

....

....

(ख) सहनशीलता, क्षमा, दया को,
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके,
पीछे जब जगमग है।।

भावार्थ– ....

....

....

....

....

4. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) क्षमाशील हो ....

.... जितना ही।

दुष्ट कौरवों ....

.... उतना ही।

(ख) क्षमा शोभती ....

.... गरल हो।

उसको क्या, ...

.... सरल हो।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

'नरव्याघ्र' शब्द का अर्थ है नररूपी व्याघ्र (बाघ)। यह एक समस्त-पद है। आपस में संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को 'समास' कहते हैं। समासयुक्त शब्द को 'समस्त-पद' तथा समस्त-पद को अलग-अलग करने को 'समास-विग्रह' कहते हैं। विग्रह करने पर समस्त-पद के दो पद (शब्द) बन जाता है– पहले पद को 'पूर्वपद' तथा दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

नीचे कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं। इन्हें पढ़िए और समझिए–

समस्त-पद		विग्रह		समास का नाम
विषरहित	⟶	विष से रहित	⟶	तत्पुरुष समास
दंतहीन	⟶	दाँतों से रहित	⟶	तत्पुरुष समास

1. अब आप कुछ समस्त-पद लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) .... – ....

(ख) .... – ....

(ग) .... – ....

(घ) .... – ....

(ङ) .... – ....

जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में लगाकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं; जैसे– सहनशील शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर 'सहनशीलता' शब्द बना है।

2. 'ता' प्रत्यय का प्रयोग करके शब्द बनाइए–

(क) .... + ता = ...

(ख) .... + ता = ...

(ग) .... + ता = ...

(घ) .... + ता = ...

(ङ) .... + ता = ...

(च) .... + ता = ...

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) विष × ....
(ख) क्षमा × ....
(ग) सरल × ....
(घ) उत्तर × ....
(ङ) आग × ....
(च) विजय × ....

4. नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) भुजंग – ....
(ख) गरल – ....
(ग) दर्प – ....
(घ) पथ – ....
(ङ) शर – ....
(च) नर – ....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

मृगतृष्णा है और गहन अंधकार है-अहंकार,
संतोषी, सुखमय जीवन का क्षमा ही है आधार।

प्यार के बिना क्षमा और क्षमा के बिना नहीं है प्यार,
है शक्ति जिसके पास उसे ही क्षमा का है अधिकार।

दुष्ट न छोड़े दुष्टता, चाहे कितना करो दुलार,
कभी-कभी शक्ति पूजा से ही होता असुर उद्धार।

(क) क्षमा और प्यार किसके बिना नहीं हैं?
....

(ख) क्षमा का अधिकार किसके पास है?
....

(ग) दुष्ट क्या करने पर भी दुष्टता नहीं छोड़ता?
....

(घ) कभी-कभी शक्ति-पूजा से क्या होता है?
....

(ङ) 'असुर' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

मनुष्य के भीतर क्षमा और दया की भावना जाग्रत होने पर उसके स्वभाव पर क्या प्रभाव पड़ता है?

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. यदि कोई शक्तिशाली व्यक्ति अपने से कमज़ोर व्यक्ति को क्षमा प्रदान करता है तो क्या यह उसका गुण है या उसकी शक्ति को आघात? सोचकर बताइए।

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

2. दया अथवा क्षमा पर आधारित कोई दो दोहे लिखिए–

3. यदि शत्रु क्षमा और दया को कायरता समझे, तो क्या करना चाहिए? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(मेरी वाचन अभिव्यक्ति)
(Speaking Skills)

4. अपने सहपाठियों के साथ कक्षा में महाभारत के पात्रों पर आधारित 'फैन्सी ड्रेस' का आयोजन कीजिए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

5. महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में हुआ था। कुरुक्षेत्र किस राज्य में है। भारत के मानचित्र पर कुरुक्षेत्र को अंकित कीजिए।

(सह-संबंध)
(Connecting Link)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' के जीवन और रचना संसार पर एक परियोजना/प्रेजेंटेशन तैयार कीजिए।
2. कविता में आए मानवीय गुणों; जैसे– क्षमा, दया, त्याग इत्यादि पर कोई प्रेरक प्रसंग कक्षा में सुनाइए।



6 भोलाराम का जीव

प्रस्तुत पाठ भ्रष्टाचार पर आधारित एक व्यंग्यात्मक लेख है। आइए, 'भ्रष्टाचार' और इसके फैलाव के बारे में जानें–

'भ्रष्टाचार' से तात्पर्य किसी व्यक्ति द्वारा शक्तिशाली स्थिति में होकर बेईमानी या अनैतिक आचरण का कोई कार्य करना है। भ्रष्टाचार एक ज़हर है, जो व्यक्तियों और देश के मूल्यों को नष्ट कर देता है। यह एक ऐसा कृत्य है, जो जानबूझ कर किया जाता है; जिससे देश की प्रामाणिकता और गुणवता कम हो जाती है। मनुष्य का गिरता आत्ममूल्य केवल उस व्यक्ति का नहीं है जो रिश्वत ले रहा है बल्कि उस व्यक्ति का भी है, जो इसे देता है। लगभग हर क्षेत्र में हम भ्रष्ट कर्मियों को देख सकते हैं, जो अपनी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियों को तब तक सही तरीके से नहीं निभाते जब तक कि आम लोगों द्वारा उन्हें रिश्वत नहीं दी जाती। इस तरह की अवैध गतिविधियाँ दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं। भ्रष्टाचार हमारे राष्ट्र के आर्थिक विकास में बाधा है और हमारे समाज में अपराध को बढ़ा रहा है। यह देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सभी पहलुओं के विकास को प्रभावित करता है।



विचार-मंथन

भ्रष्ट व बेईमान लोगों को सबक सिखाने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

पठन

ऐसा कभी नहीं हुआ था...

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफ़ारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे। पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार पन्ने पलट, रजिस्टर-पर-रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में ही नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीझकर रजिस्टर इतने ज़ोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए वे बोले, "महाराज! रिकॉर्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह-त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।"

धर्मराज ने पूछा, "और वह दूत कहाँ है?"



शब्द-कलश

अलॉट – आवंटित करना (Allot)
चित्रगुप्त – धर्मराज की सभा में जन्म-मृत्यु का लेखा-जोखा लिखने वाला व्यक्ति (Chitragupta)

"महाराज! वह भी लापता है।"

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बड़ा बदहवास वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त जी चिल्ला उठे, "अरे! तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?"

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, "दयानिधान! मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया? आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह को त्यागा, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरंभ की। नगर के बाहर ज्योंही मैं उसे लेकर तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्योंही वह मेरी चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्मांड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।"

धर्मराज क्रोध से बोले, "मूर्ख! जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।"

दूत ने सिर झुकाकर कहा, "महाराज! मेरी सावधानी में बिलकुल कसर नहीं थी। मेरे अभ्यस्त हाथों से, अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके। पर इस बार तो कोई इंद्रजाल ही हो गया।"

इसी समय कहीं से घूमते-घूमते नारद मुनि वहाँ आ गए। धर्मराज को गुमसुम बैठे देखकर बोले, "क्यों धर्मराज! कैसे चिंतित बैठे हो? क्या नरक में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?"

धर्मराज ने कहा, "वह समस्या तो कभी की हल हो गई। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाईं। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मज़दूरों की हाज़िरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तैयार कर दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई, पर एक बड़ी विकट उलझन आ गई है। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्मांड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।"

नारद जी ने पूछा, "उसपर इनकम टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।"

चित्रगुप्त जी ने कहा, "इनकम होती तो टैक्स होता। भुखमरा था।"

नारद बोले, "मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा मुझे उसका नाम, पता तो बताओ। मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।"

चित्रगुप्त जी ने रजिस्टर देखकर बताया, "भोलाराम नाम था उसका। जबलपुर शहर में घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक

शब्द-कलश

बदहवास – बौखलाया हुआ (Worried)
विकृत – बिगड़ा हुआ (Deformed)
वायुतरंग – वायु की लहर (Wind)
चंगुल – पकड़ (Grip)
विकट – भयंकर (Serious)

लड़की। उम्र लगभग साठ साल। सरकारी नौकर था। पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत संभव है कि अगर मकान-मालिक वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफ़ी घूमना पड़ेगा।"

* * *

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रंदन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गए।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज़ लगाई, "नारायण...नारायण!" लड़की ने देखकर कहा, "आगे जाओ महाराज!"

नारद जी ने कहा, "मुझे भिक्षा नहीं चाहिए, मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को ज़रा बाहर भेजो, बेटी।"



भोलाराम की पत्नी बाहर आई। नारद जी ने कहा, "माता! भोलाराम को क्या बीमारी थी?"

"क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे। पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब आता ही नहीं था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में सब गहने बेचकर हमलोग खा गए। फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिंता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।"

नारद ने कहा, "क्या करोगी माँ? उनकी इतनी ही उम्र थी"।

ऐसा मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रुपया महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं करके गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।"

दुख की कथा सुनने की फ़ुरसत नारद को थी नहीं। वे अपने मुद्दे पर आए, "माँ! यह तो बताओ कि यहाँ किसी से उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?"

पत्नी बोली, "लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होता है।"

शब्द-कलश

सम्मिलित – मिला हुआ, मिश्रित (Common)
क्रंदन – रोना, विलाप (Cry)
फाके होना – भूखों मरना (To die of hunger)

"नहीं परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, किसी स्त्री..."

पत्नी ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, "ऐसा कुछ मत बको महाराज! तुम साधु हो, उचक्के नहीं हो। ज़िंदगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर नहीं देखा।"

नारद हँसकर बोले, "हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही हर अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता! मैं चला।"

स्त्री ने कहा, "महाराज! आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाए।"

नारद को दया आ गई थी। वे कहने लगे, "साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ़्तर में जाऊँगा और कोशिश करूँगा।"

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ़्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, "भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उनपर वज़न नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।"

नारद ने कहा, "भई यहाँ बहुत से पेपरवेट तो रखे हैं। इन्हें क्यों नहीं रख दिया?"

बाबू हँसा, "आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं। खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।"

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफ़सरों के पास घूम आए, तब एक चपरासी ने कहा, "महाराज! आप क्यों इस झंझट में पड़ गए। आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहे, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया, तो अभी काम हो जाएगा।"

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। बिना विज़िटिंग कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज़ हुए। बोले, "इसे कोई मंदिर-वंदिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आए। चिट क्यों नहीं भेजी?"

नारद ने कहा, "कैसे भेजता? चपरासी सो रहा है।"

"क्या काम है?" साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन केस बतलाया।

साहब बोले, "आप हैं वैरागी। दफ़्तरों के रीति-रिवाज़ नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भई, यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वज़न रखिए।"

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वज़न की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले, "भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ़्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। बीसों बार एक ही बात को बीस जगह लिखना पड़ता है। तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है। उतने की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ जल्दी भी हो सकता है, मगर"—साहब रुके।



नारद ने कहा, "मगर क्या?"

साहब ने कुटिल मुसकान के साथ कहा, "मगर वज़न चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना-बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधु-संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।"

सोचो-सोचो!

यदि नारद मुनि साहब को अपनी दिव्य वीणा देने से इनकार कर देते, तो क्या होता?

नारद अपनी वीणा छिनते देख ज़रा घबड़ाए। पर फिर सँभलकर उन्होंने वीणा टेबिल पर रखकर कहा, "यह लीजिए। अब ज़रा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।"

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुरसी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घंटी बजाई। चपरासी हाज़िर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, "बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।"

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागज़ात भी थे। साहब ने फाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, "क्या नाम बताया, साधु जी आपने?"

नारद समझे कि साहब कुछ ऊँचा सुनते हैं। इसलिए ज़ोर से बोले, 'भोलाराम!'

सहसा फाइल में से आवाज़ आई, "कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है? क्या पेंशन का ऑर्डर आ गया?"

नारद चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले, "भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?"

'हाँ!' आवाज़ आई।

नारद ने कहा, "मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इंतज़ार हो रहा है।"

शब्द-कलश

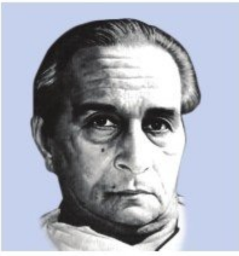
कुटिल – चालाकी से भरा हुआ (Cunning)

आवाज़ आई, "मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता।"

–हरिशंकर परसाई

रोचक तथ्य

देवर्षि नारद को दुनिया का प्रथम पत्रकार या पहले संवाददाता होने का गौरव प्राप्त है। क्योंकि देवर्षि नारद ने इस लोक से उस लोक में परिक्रमा करते हुए संवादों का आदान-प्रदान किया था।



लेखक-परिचय

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के जमानी गाँव में हुआ था। कुछ वर्ष अध्यापन करने के पश्चात इन्होंने जीवनपर्यंत स्वतंत्र लेखन किया। इन्होंने 'वसुधा' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। इन्हें व्यंग्य लेखन के लिए 'साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत किया गया। ये हिंदी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया। 10 अगस्त, 1995 को हिंदी के इस प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार ने आखरी साँस ली। सदाचार का तावीज़, तट की खोज, वैष्ठाव की फिसलन, पगडंड़ियों का ज़माना, बेईमानी की परत, ठिठुरता हुआ गणतंत्र आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) नरक में किसकी समस्या हल नहीं हुई?

☐ अन्न-पानी ☐ कपड़ा-भोजन ☐ निवास-स्थान ☐ रोटी-दाल

(ख) स्त्री के कहने पर नारद जी कहाँ गए?

☐ स्वर्ग ☐ सरकारी दफ़्तर ☐ घर ☐ बैंक

(ग) भोलाराम की दरख्वास्तों पर क्या नहीं रखा था?

☐ पेपरवेट ☐ वीणा ☐ वज़न ☐ कलम

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) भोलाराम के मरने का सही कारण क्या था?

(ख) फाइल में से जो आवाज़ आई, वह किसकी आवाज़ थी?

(ग) यमदूत बदहवास क्यों था?

(घ) नारद सरकारी दफ़्तर में क्यों गए थे?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) नरक में निवास स्थान की समस्या कैसे हल हुई?

....

....

(ख) धर्मराज ने नारद मुनि को क्या समस्या बताई?

....

....

(ग) चित्रगुप्त ने भोलाराम के जीव के बारे में क्या शंका ज़ाहिर की?

....

....

(घ) फ़ाइल पर 'वज़न' रखने का क्या आशय है?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) 'भोलाराम का जीव' कहानी के माध्यम से कहानीकार ने देश की सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था का कैसा चित्र अंकित किया है? लिखिए।

(ख) "भई यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है.... भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही है, उन पर वज़न रखिए।"– कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) कहानी के अनुसार भोलाराम व उसकी स्थिति का परिचय दीजिए। उसकी ऐसी हालत कैसे हुई?

(घ) नारद मुनि ने भोलाराम की पेंशन का काम कैसे करवाया?

(ङ) भोलाराम को ढूँढ़ते हुए यदि नारद जी स्वर्ग से न आते, तो कहानी के कथानक में क्या अंतर हो जाता?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) आज तक मैंने .... नहीं खाया था।

(ख) इन पाँच दिनों में मैंने सारा .... छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।

(ग) भोलाराम नाम के एक आदमी की .... दिन पहले मृत्यु हुई।

(घ) पाँच सालों में सब .... बेचकर हमलोग खा गए।

(ङ) दरख्वास्तें .... से नहीं दबतीं।

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) भोलाराम सरकारी नौकर था। ....

(ख) भोलाराम का जीव रास्ते में चकमा देकर भाग गया। ....

(ग) भोलाराम को गरीबी की बीमारी थी। ....

(घ) दरख्वास्तें पेपरवेट से दब जाती हैं। ....

(ङ) भोलाराम का परिवार के बाहर भी लगाव था। ....

(च) भोलाराम का मन पेंशन की दरख्वास्तों में लगा था। ....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

संक्षेपीकरण को 'समास' कहते हैं। समास का चौथा भेद है– 'अव्ययीभाव'।
जिस समस्त-पद का पहला शब्द अव्यय हो और समास होने के बाद समस्त-पद अव्यय बन जाए तो वहाँ 'अव्ययीभाव समास' होता है; जैसे– यथा शक्ति (समस्त पद) – शक्ति के अनुसार (समास-विग्रह)

1. निम्नलिखित सामासिक शब्दों के उचित विग्रह कीजिए–

(क) आजन्म – ....

(ख) यथाशीघ्र – ....

(ग) यथासंभव – ....

(घ) बेमतलब – ....

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) कुरूप × ....

(ख) स्वर्ग × ....

(ग) गुप्त × ....

(घ) मृत्यु × ....

(ङ) सज्जन × ....

(च) नाराज़ × ....

(छ) समझदार × ....

(ज) पाप × ....

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) हाथ – ....

(ख) घर – ....

(ग) पृथ्वी – ....

(घ) माँ – ....

(ङ) महाराज – ....

(च) देह – ....

जिन शब्दों का उच्चारण लगभग समान प्रतीत हों परंतु अर्थ अलग-अलग हों, वे 'श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द' कहलाते हैं; जैसे– अन्न–अनाज, अन्य–दूसरा आदि।

4. निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए सार्थक वाक्य बनाइए–

(क) परिमाण – ....

परिणाम – ....

(ख) चकमा – ....

चश्मा – ....

(ग) कम – ....

काम – ....

(घ) दम – ....

दाम – ....

5. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध कीजिए–

(क) धरमराज – ....

(ख) रजीस्टर – ....

(ग) बहमाड़ – ....

(घ) सम्मीलत – ....

(ङ) विणा-वादन – ....

(च) वासतविक – ....

(छ) सटेशनरी – ....

(ज) निश्चित – ....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

अपना कार्य ईमानदारी से न करना भ्रष्टाचार है। आज चारों और भ्रष्टाचार का बोल-बाला है। इस कारण यह धारणा आम हो चुकी है कि आज सिर्फ़ वही व्यक्ति ईमानदार है, जिसे भ्रष्टाचार करने का अवसर नहीं मिलता। हमें ऐसी खबरें खूब सुनने को मिलती रहती हैं कि फलाँ दफ़्तर का कोई कर्मचारी या अधिकारी रिश्वत लेते पकड़ा गया।

सरकारी कार्यालयों में होने वाले भ्रष्टाचार के लिए सिर्फ़ वहाँ के कर्मचारी ही दोषी नहीं, बल्कि आम नागरिक भी ज़िम्मेदार हैं क्योंकि वे अपना कार्य जल्दी कराने के लिए सरकारी कार्यालयों में घूस देते हैं, जो भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही आता है। चुनाव के समय में बहुत-से प्रत्याशियों द्वारा वोट पाने के लिए लोगों को पैसे, उपहार या मादक पदार्थ बाँटे जाते हैं। यह भी भ्रष्टाचार है। उच्च पदासीन लोग अपने पद और शक्ति का गलत उपयोग कर अपने किसी चहेते को अपने अधीन किसी ऐसे पद पर नियुक्त कर लेते हैं जिसके योग्य वह नहीं होता। ऐसे में उस पद हेतु योग्य व्यक्ति का हक छिन जाता है। यह भ्रष्टाचार की श्रेणी में गिना जाता है। कुछ व्यक्ति सरकार को अपनी आय का सही विवरण नहीं देते और टैक्स की चोरी करते हैं। यह भी भ्रष्टाचार है। शिक्षा तथा खेल के क्षेत्र में भी लोग घूस लेकर मेधावी व योग्य उम्मीदवारों को अवसर नहीं देते, जो एक भ्रष्टाचार है। इसी प्रकार खाने-पीने की चीज़ों में मिलावट करना, अवैध मकान निर्माण, अस्पताल और स्कूल में अत्यधिक फ़ीस वसूली आदि भी भ्रष्टाचार में ही आते हैं।

(क) भ्रष्टाचार क्या है?

....

....

(ख) भ्रष्टाचार के लिए आम नागरिक क्यों ज़िम्मेदार हैं?

....

....

(ग) प्रचार में भ्रष्टाचार की क्या संभावना रहती है?

....

....

(घ) भ्रष्टाचार के कारण योग्य व्यक्ति का हक कैसे छिन जाता है?

....

....

(ङ) शिक्षा तथा खेल के क्षेत्र में भ्रष्टाचार कैसे फैलता है?

....

....

(च) कौन-कौन से कार्य भ्रष्टाचार की श्रेणी में आते हैं?

....

....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

भ्रष्टाचार का समूल नाश होना क्यों अनिवार्य है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



1. नारद जी को सरकारी दफ़्तर में हुई परेशानी हमारी देश की कौन-सी बुराई की ओर संकेत करती है? सोचकर बताइए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)
2. भोलाराम को ढूँढ़ते हुए यदि नारद जी स्वर्ग से न आते तो कहानी के कथानक में क्या अंतर होता? कक्षा में बताइए। (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)
3. सरकारी कार्यों की घूसखोरी तथा उससे निपटने के उपाय बताते हुए अपनी कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. सरकार ने भ्रष्टाचार मिटाने के लिए अनेक नियमों एवं संस्थाओं का गठन किया है। इन नियम एवं संस्थाओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर प्रेजेंटेशन बनाइए।
2. कहानी में इमारत बनाने के लिए ठेकेदार, इंजीनियर तथा ओवरसीयरों का वर्णन किया गया है। इमारत बनाने में और किन-किन लोगों की ज़रूरत होती है तथा वे क्या काम करते हैं? पता लगाइए।

7 बहादुर बेटा

प्रस्तुत पाठ में बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा और उससे होने वाली तबाही को एकांकी के माध्यम से दर्शाया गया है। यदि आपके क्षेत्र में बाढ़ आने वाली हो, तो आपको निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए–

- आवश्यक सूचना के लिए रेडियो सुनना या टेलीविजन देखना।
- यदि बाढ़ आने की कोई संभावना हो, तो तुरंत किसी ऊँचे स्थान पर चले जाएँ।
- अन्य बाढ़-ग्रस्त क्षेत्रों से परिचित रहें। इन क्षेत्रों में भारी बारिश जैसी किसी विशिष्ट चेतावनी के साथ या उसके बिना आकस्मिक बाढ़ आ सकती है।
- अपने घर की नालियों में बाढ़ के पानी को घुसने से रोकने के लिए मोरी की जालियों (सीवर ट्रैप्स) में "चेक वाल्व" लगाना।

विचार-मंथन



कहानी के शीर्षक को पढ़कर आपको क्या लगता है कि लड़के ने बहादुरी का ऐसा क्या काम किया होगा, जो इस पाठ का शीर्षक 'बहादुर बेटा' रखा गया?

पठन

पात्र-परिचय

माँ	: तीन बच्चों की माँ
संदीप	: बड़ा बेटा
कुलदीप	: छोटा बेटा
माधुरी	: बेटी
एक युवा डॉक्टर और एक युवती	: दोनों रेडक्रॉस के सदस्य
एक युवक	: संदीप का मित्र

(साधारण-से घर का एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में कार्निस पर रखी घड़ी की ओर देख लेती है। उसी समय माँ कमरे में प्रवेश करती है।)

माँ : क्या बज गया मधुर... अरे, चार बजने वाले हैं और उन दोनों में से कोई भी नहीं आया।

मधुर : यही तो मैं देख रही हूँ। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहाँ रह गए?

(उसी समय कुलदीप तेज़ी से भागता हुआ आता है।)



कुलदीप : माँ! माँ! तुमने सुना?

मधुर : तुम अब तक कहाँ थे कुलदीप?

माँ : हाँ! आज इतनी देर कैसे हो गई?

कुलदीप : तुमने सुना नहीं माँ! बहुत बुरी हालत है।

माँ : किसकी बुरी हालत है? क्या हुआ?

कुलदीप : माँ! बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया है। नदियों में बाढ़ आ गई है। मास्टर जी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गए। सैकड़ों आदमी मर गए। जानवरों का तो कहना ही क्या? मकान गिर पड़े। बस चारों तरफ़ **हाहाकार** मचा है। मास्टर जी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेज़ी से बोलता चला जाता है।)

माँ : तू तो बेटा, एक साँस में इतनी बात कह गया कि मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया। सुना तो मैंने भी है कि ज़ोर की बाढ़ आई है, पर इतना नुकसान हो गया यह किसी ने नहीं बताया था।

मधुर : चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी, पर ऐसी कोई बात मैंने नहीं सुनी कि इतना नुकसान हुआ।

कुलदीप : तुमको कुछ पता भी है? इतने ज़ोरों का तूफ़ान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया और अभी भी नदी बढ़ रही है। कल तक यहाँ भी बुरी हालत होने वाली है। इसलिए यह **हुक्म** हुआ है कि जो कुछ भी कर सकें, करें। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है, वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें...

शब्द-कलश

हाहाकार मचना – घबराहट के कारण बहुत-से लोगों के मुँह से निकलने वाली चिल्लाहट (Loud cry)

हुक्म – आदेश (Order)

माँ : हाँ! हाँ! यह तो होना ही चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है, लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूँगी। कहाँ भेजना होगा पैसा?

कुलदीप : वह तो लेने वाले यहीं आ जाएँगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ।

मधुर, माँ : (एक साथ) तू कहाँ जा रहा है?

कुलदीप : लोगों को बचाने।

माँ : (हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचाएगा। खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जाएँगे।

मधुर : काम करने को तो यहाँ भी बहुत है। चाहो तो तुम घर-घर जाकर चंदा इकट्ठा कर सकते हो।

कुलदीप : वह तुम करना। मैं छोटा हूँ तो क्या, मैं भी बहुत कुछ कर सकता हूँ।

माँ : अच्छा, अच्छा पहले तू रोटी तो खा ले। और हाँ, संदीप अभी तक क्यों नहीं आया। कहीं वह भी...

मधुर : हाँ, माँ! वे ज़रूर चले गए होंगे। वे दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं–मैं कुछ करना चाहता हूँ। मेरे पिता और मेरे चाचा ने आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश के हज़ारों लोगों ने अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।

(सहसा एक युवक का प्रवेश)

युवक : संदीप का घर यही है?

सब : (एक साथ) हाँ, हाँ!

युवक : यह बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़-पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चले गए हैं।

माँ : (घबराकर) क्या?

मधुर : तो भैया चले ही गए।

युवक : लेकिन आप कोई चिंता न कीजिए। (तेज़ी से कहकर लौटता है।)

माँ : सुनो तो बेटा, सुनो! कितनी देर हो गई उसे गए?

युवक : वे तो सुबह ही चले गए थे। लेकिन मैं आपको जल्दी खबर नहीं दे सका।

(तेज़ी से चला जाता है)

शब्द-कलश

सहसा – अचानक (Suddenly)

मधुर : मैं जानती हूँ। यह सब सुनकर वे रुक ही नहीं सकते थे।

कुलदीप : लेकिन मुझे तो रुकना पड़ेगा। बहुत बुरे हैं। सब कामों में वही आगे रहते हैं।

माँ : (हँसकर) वह बड़ा जो है। मुझे खुशी है कि वह ऐसा है। बिलकुल अपने पिता पर गया है। ज़िंदगी-भर वे भी यही करते रहे। कभी चैन से नहीं बैठे।

मधुर : और अब भैया भी नहीं बैठेंगे। अच्छा ही है, पिता जी का काम कोई तो करे। (एकदम) माँ!

(सहसा रुक जाती है। माँ अब तक जैसे ध्यानस्थ हो गई है और धीरे-धीरे बोल रही है।)

माँ : हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है? कब दूर होंगी ये परेशानियाँ। कितना बलिदान चाहता है तू? हे भगवान! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर... पर...

मधुर : (माँ को झकझोरकर) माँ! माँ! तुम कहाँ खो गई हो? क्या सोचने लगीं कि हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़-पीड़ितों के लिए खाने-पीने के सामान की ज़रूरत भी तो होगी।



कुलदीप : खाना, कपड़ा, मकान, सभी चीज़ों की ज़रूरत होगी। मास्टर जी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिए हैं। माँ, मैं जाता हूँ। स्कूल में स्वयंसेवकों की ज़रूरत है। कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।

माँ : क्यों नहीं कर सकता? तू भी जा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप : मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गई है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला।

माँ : लेकिन खाना तो खाता जा।

कुलदीप : नहीं, नहीं, देर हो जाएगी। वहीं कुछ खा लूँगा।

शब्द-कलश

बलिदान – कुर्बानी (Sacrifice)
कैंप – शिविर (Camp)
स्वयंसेवक – जो अपनी इच्छा से स्वयं ही किसी काम में सम्मिलित हो (Volunteer)

(तेज़ी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।)

मधुर : देखो, देखो माँ! कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं। और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़-पीड़ित गाँवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

माँ : क्या ही अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें। फिर तो बहुत सारी समस्याएँ यों ही खत्म हो जाएँ। पता नहीं सरकार क्या करेगी? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवा-कार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करे।

मधुर : जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

माँ : हाँ, करते तो हैं।

(सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती हैं और वहीं बैठ जाती हैं। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है। लेकिन सहसा रुक जाती है। जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों ओर देखती है। तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रॉस का चिह्न लगा हुआ है।)

युवती : क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधुर : जी।

माँ : (आँखें खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप? कैसा है वह?

युवती : आप शायद उनकी माँ हैं? चिंता न कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर : लेकिन आप हैं कौन?

युवती : मैं रेडक्रॉस की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत-से साथी हैं। हम सबलोग बाढ़-पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। आपके पुत्र संदीप जी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिंता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हमलोग दंग रह गए। हमारे मना करने पर भी उन्होंने ज़रा आराम नहीं किया। लेकिन अचानक...

माँ और मधुर : (एक साथ) अचानक क्या हुआ? बोलती क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ?

युवती : आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते-बचाते अचानक उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वे नहीं चढ़े। और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े ज़ोर से रेला आया और वे बह गए।

शब्द-कलश

झकझोरना – पकड़कर ज़ोर से हिलाना (To shake violently)

माँ : (चीखकर) हाय राम!

युवती : (शीघ्रता से) नहीं, नहीं दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्रता से बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वे बेहोश हो गए हैं। लेकिन हमने उन्हें फर्स्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वे ठीक हो जाएँगे।

सोचो-सोचो!

अगर बाढ़ पीड़ितों की मदद करते हुए संदीप को कुछ हो जाता तो क्या होता?

मधुर : वे हैं कहाँ?

युवती : बाहर हमारी गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए। उन्हें अंदर ले आएँ।

(सब तेज़ी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है। तभी वे सभी संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।)



युवती : (युवक को दिखाकर) ये हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में इन्हें होश आ जाता है।

युवक : मैं अभी एक और इंजेक्शन दिए देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आपका बेटा बहुत बहादुर है।

मधुर : और आपलोग कम बहादुर हैं?

(इसी बीच युवक संदीप को इंजेक्शन लगाता है। माँ संदीप के ऊपर झुकी हुई है। बार-बार उसके चेहरे को छूती है। मधुर कभी भैया की ओर देखती है, कभी रेडक्रॉस के सदस्यों के बैज को देखती है। तभी कुलदीप भागा हुआ आता है।)

कुलदीप : माँ माँ! मैंने सुना है... (एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गए। क्या हुआ इन्हें, और ये लोग कौन हैं?

शब्द-कलश

रेला – तेज़ बहाव (A strong wave)
फर्स्ट-एड – प्राथमिक चिकित्सा (First-aid)
रेडक्रॉस – एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था जो पीड़ितों तथा घायल लोगों की घटनास्थल पर सहायता करती है (Red Cross)
बैज – चिह्न, बिल्ला (Badge)

मधुर : बाढ़-पीड़ितों को बचाते-बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गए। इन लोगों ने उन्हें बचाया है। थक गए हैं और कोई खास बात नहीं है।

(अंदर जाती है।)

युवक : बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आपलोग इनसे ज़्यादा बातें मत कीजिएगा। शाम तक चुपचाप लेटे रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा।

माँ : भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप : (आँखें खोलकर) मैं कहाँ हूँ?

युवक : अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ हैं, बहन है, भाई है। और हम हैं तुम्हारे साथी।

संदीप : ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतना ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूँ और फिर कोई अंतरिक्ष में से आकर बचा रहा है। वे तुम थे।

युवती : संदीप बाबू, आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप : बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन करना होगा। (सब हँस पड़ते हैं)

युवक और युवती : (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

माँ : नहीं, नहीं, ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किए तुम नहीं जा सकते। अरे, मधुर... लो वह तो अंदर चली भी गई। शायद चाय बना रही होगी।

युवक : माँ, हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप : समझ लीजिए, भैया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनट लगेंगे।

(सब हँसते हैं। वह भी अंदर चला जाता है।)

माँ : आपलोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी तो अवसर दिया कीजिए।

युवती : हम भी तो आपके ही हैं। और फिर आपने कम सेवा की है?

(दोनों मुसकराते हैं और अंदर से मधुर व कुलदीप चाय लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।)

—विष्णु प्रभाकर

शब्द-कलश

अंतरिक्ष – आकाश (Space)

रोचक तथ्य

इंडियन रेड क्रॉस एक स्वैच्छिक मानवतावादी संगठन है, जिसकी पूरे भारत में 700 से अधिक शाखाएँ हैं। यह आपदा के समय राहत प्रदान करता है और लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल करता है।



लेखक-परिचय

हिंदी लेखक व साहित्यकार विष्णु प्रभाकर का जन्म 1912 ई॰ में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुआ था। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक व निबंध विधाओं में सृजन किया। विष्णु प्रभाकर ने 'ढलती रात', 'स्वप्नमयी', 'अर्धनारीश्वर', 'दो मित्र', 'पाप का घड़ा', इत्यादि उपन्यास लिखे। उनकी आत्मकथा, 'पंखहीन' तीन खंडों में प्रकाशित हुई है। उन्होंने कई यात्रा-वृत्तांत भी लिखे, जिनमें 'ज्योतिपुंज', 'हिमालय' जैसे नाम शामिल हैं। 11 अप्रैल, 2009 को दिल्ली में प्रभाकर जी का निधन हो गया।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) बड़े भैया कितने बजे तक आ जाते थे?

☐ 12 बजे तक ☐ 11 बजे तक ☐ 2 बजे तक ☐ 5 बजे तक

(ख) संदीप किसकी सहायता के लिए चला गया है?

☐ बाढ़ पीड़ितों की ☐ अकाल पीड़ितों की ☐ तूफ़ान पीड़ितों की ☐ भूकंप पीड़ितों की

(ग) संदीप के पानी में बह जाने पर युवती ने उन्हें क्या दिया?

☐ लाइफ जैकेट ☐ ट्यूब ☐ फर्स्ट ऐड ☐ रस्सी

(घ) युवती किसकी सदस्या थी?

☐ रेडक्रॉस की ☐ विधान सभा की ☐ ग्राम पंचायत की ☐ संसद की

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) माँ किसकी प्रतीक्षा कर रही थीं?

(ख) कुलदीप के देर से घर आने का क्या कारण था?

(ग) मास्टर जी ने बच्चों से क्या कहा था?

(घ) माँ को कुलदीप की कुछ भी बात समझ में क्यों नहीं आई?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) माँ संदीप के किस व्यवहार से खुश थीं?

....

....

(ख) कुलदीप बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए कहाँ गया था?

....

....

(ग) मधुर ने कुलदीप को बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए क्या काम सुझाया था?

....

....

(घ) संदीप घर न आकर कहाँ चला गया था?

....

....

(ङ) इस नाटक से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कुलदीप ने माँ को बाढ़ और तूफ़ान के बारे में क्या बताया?

(ख) युवती ने संदीप के बेहोश होने तक की घटना का वर्णन उसकी माँ के सामने किन शब्दों में किया?

(ग) होश में आने पर संदीप को केवल कौन-सी घटना याद रही थी?

(घ) कुलदीप बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए किस हुक्म का पालन करने की बात कर रहा था?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) बड़े ज़ोर का .... आया है।

(ख) तुम घर-घर जाकर .... इकट्ठा कर सकते हो।

(ग) मेरे पिता और मेरे चाचा ने .... की लड़ाई लड़ी।

(घ) हम दोनों घर-घर से .... और .... इकट्ठा करेंगे।

(ङ) मुझे भी अपने देश की .... करनी चाहिए।

4. किसने-किससे तथा क्यों कहा?

(क) "नदियों में बाढ़ आ गई है।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(ख) "काम करने को तो यहाँ भी बहुत है।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(ग) "तेरे विचार बहुत अच्छे हैं।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(घ) "शाम तक चुपचाप लेटे रहने दीजिए।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(ङ) "कठिन परिश्रम के कारण वे बेहोश हो गए हैं।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित विदेशी शब्दों के लिए हिंदी शब्द लिखिए–

(क) मास्टर – ....

(ख) बैज – ....

(ग) फर्स्ट-एड – ....

(घ) इंजेक्शन – ....

(ङ) स्कूल – ....

(च) हुक्म – ....

(छ) डॉक्टर – ....

(ज) कैंप – ....

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ भेद होते हैं–

(क) विधानवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने का सामान्य कथन होता है।
जैसे– आपके विचार बहुत अच्छे हैं। मधुर बैठी पढ़ रही है।

(ख) निषेधवाचक वाक्य– जिन वाक्यों से किसी कार्य के निषेध का बोध होता है।
जैसे– संदीप अभी तक नहीं आया है। वह कभी चैन से नहीं बैठता है।

(ग) प्रश्नवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में प्रश्न किया जाए या किसी से कोई बात पूछी जाए।
जैसे– क्या संदीप जी का मकान यही है? कहाँ है संदीप?

(घ) विस्मयवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में विस्मय, हर्ष, शोक आदि के भाव प्रकट हों।
जैसे– अरे! कितना भयानक दृश्य है। वाह! तुम इतनी जल्दी लौट भी आए।

(ङ) आज्ञावाचक वाक्य– जिन वाक्यों से आज्ञा या अनुमति का बोध होता है।
जैसे– आप मेरे साथ आइए। भगवान करे सब सकुशल लौटें।

(च) संदेहवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह अथवा संभावना का बोध हो।
जैसे– शायद अब वर्षा रुक जाए। संभवतः सरकार बाढ़-पीड़ितों के लिए कुछ करे।

(छ) संकेतवाचक वाक्य– जिन वाक्यों में एक वाक्य दूसरे की संभावना पर निर्भर हो।
जैसे– यदि वर्षा थमी तो हम बाहर खेलेंगे। यदि गाड़ी आई तो हम घूमने जाएँगे।

2. अर्थ की दृष्टि से वाक्यों के भेद लिखिए–

(क) बहुत जल्दी ही वे ठीक हो जाएँगे। ....

(ख) अचानक उन्हें क्या हुआ? ....

(ग) नदी के पास मत जाना। ....

(घ) लेकिन खाना तो खाता जा। ....

(ङ) भगवान इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं। ....

(च) भैया को अभी होश नहीं आया है। ....

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) युवक – ....

(ख) माँ – ....

(ग) भाई – ....

(घ) सेवक – ....

(ङ) शिक्षक – ....

जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं। कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

अकर्मक क्रिया– जिस वाक्य में कर्म नहीं होता और क्रिया के व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़ता है, वहाँ 'अकर्मक क्रिया' होती है; जैसे– जागना, सोना आदि।

सकर्मक क्रिया– जिस वाक्य में क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है और क्रिया को कर्म की आवश्यकता पड़ती है, वहाँ 'सकर्मक क्रिया' होती है; जैसे– लिखना, पढ़ना आदि।

4. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियापद को रेखांकित कर क्रिया का भेद भी लिखिए–

(क) दादी माँ खर्राटे लेकर सोती हैं। ....

(ख) चाचा छक्कन ने केले खरीदे। ....

(ग) दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्रता से बचा लिया। ....

(घ) मैं अभी एक और इंजेक्शन दिए देता हूँ। ....

(ङ) मधुर व कुलदीप चाय लेकर आते हैं। ....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

चंचल पग दीपशिखा के घर,
गृहमन, वन में आया बसंत।
सुलगा फाल्गुन का सूनापन,
सौंदर्य शिखाओं में अनंत।।

सौरभ शीतल की ज्वाला से,
फैला उर-उर में मधुर दाह।
आया बसंत, भर पृथ्वी पर,
स्वर्गिक सुंदरता का प्रवाह।।

कली के पलकों में मिलन-स्वप्न,
अलि के अंतर में प्रणय गान।
लेकर आया, प्रेमी बसंत,
आकुल जड़-चेतन स्नेह प्राण।।

(क) बसंत का आगमन कहाँ-कहाँ हुआ है?

....

(ख) कली की पलकों में क्या था?

....

(ग) बसंत किस रूप में है?

....

(घ) 'पृथ्वी' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

जीवन में अच्छे लोगों की संगति का हमपर क्या प्रभाव पड़ता है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



1. **बाढ़ पीड़ितों की मदद करते समय यदि संदीप को कुछ हो जाता, तो कहानी का अंत क्या होता? सोचकर बताइए।** (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)
2. **कहानी में लेखक ने मुश्किल समय में एकजुट होकर लोगों की मदद करने का महत्व दर्शाया है। ऐसी किसी भी स्थिति में आप किन-किन तरीकों से लोगों की मदद करने में अपना योगदान दे सकते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।** (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)
3. **यदि आपके क्षेत्र में कोई प्राकृतिक आपदा आती है, तो उस स्थिति में कैसे साहस बनाए रखना है तथा उससे कैसे निपटना है, विषय पर विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों को समझाने हेतु एक सभा का आयोजन कीजिए।** (मेरी सहभागिता) (My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. **शिक्षक/शिक्षिका अथवा इंटरनेट की सहायता से रेडक्रॉस के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए और एक परियोजना बनाइए।**
2. **सरकार ने प्राकृतिक आपदा से निपटने व उसकी चपेट में आए लोगों को बचाने हेतु अनेक संगठनों का गठन किया है। उनकी एक सूची बनाइए अथवा उनपर एक प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।**

8 उपन्यास सम्राट प्रेमचंद

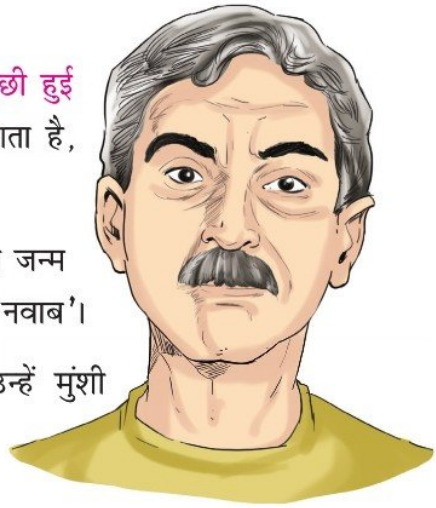
प्रस्तुत पाठ उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के जीवन पर आधारित है। पाठ पढ़ने से पूर्व आइए जानते हैं, उनके जीवन के कुछ अनछुए पहलू। उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने उनके विषय में अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद : घर में' में लिखा है–
उन दिनों मुंशी प्रेमचंद शिक्षा विभाग के डिप्टी इंस्पेक्टर थे। एक दिन इंस्पेक्टर स्कूल का निरीक्षण करने आए। उन्होंने इंस्पेक्टर को स्कूल दिखा दिया। दूसरे दिन वह स्कूल नहीं गए और अपने घर पर ही अखबार पढ़ रहे थे। तभी सामने से इंस्पेक्टर की गाड़ी निकली। इंस्पेक्टर को उम्मीद थी कि प्रेमचंद कुरसी से उठकर उसको सलाम करेंगे। लेकिन प्रेमचंद कुरसी से हिले तक नहीं। यह बात इंस्पेक्टर को नागवार गुजरी। उसने अपने अर्दली को मुंशी प्रेमचंद को बुलाने भेजा। जब मुंखी प्रेमचंद गए तो इंस्पेक्टर ने शिकायत की कि तुम्हारे दरवाज़े से तुम्हारा अफ़सर निकल जाता है तो तुम सलाम तक नहीं करते हो। यह बात दिखाती है कि तुम बहुत घमंडी हो। इस पर मुंशी प्रेमचंद ने जवाब दिया, "जब मैं स्कूल में रहता हूँ, तब तक ही नौकर रहता हूँ। बाद में मैं अपने घर का बादशाह बन जाता हूँ।"



विचार-मंथन

प्रेमचंद का नाम सुनते ही उनके किस उपन्यास या कहानी का नाम आपके मस्तिष्क में आता है?

पठन



गोरी सूरत, घनी-काली भौंहे, छोटी-छोटी आँखें, नुकीली नाक, बड़ी-बड़ी और गुछी हुई विरल मूँछोंवाला यह मुसकराता चेहरा किसका है? यह चेहरा प्रेमचंद का है। लगता है, अभी हँसने वाले हैं; लगता है, अभी ज़ोरों के कहकहे लगाएँगे।

वाराणसी से चार मील दूर लमही में शनिवार, 31 जुलाई, 1880 को धनपतराय का जन्म हुआ। माँ-बाप ने नाम रखा था– 'धनपत'। चाचा लाड़-प्यार में कहा करते थे– 'नवाब'।

पिता का नाम था– 'अजायबराय'। डाकखाने में किरानी थे, इसी से लोग उन्हें मुंशी अजायबलाल कहा करते थे। माता का नाम था– 'आनंदी'। अक्सर बीमार रहती थीं। पिता को दवा-दारू से फ़ुरसत नहीं मिलती थी।



शब्द-कलश

गुछी हुई – मिली हुई (Mixed)
विरल – जो घना न हो, पतला (Sparse)
किरानी – लिपिक (Clerk)

बालक धनपत सात वर्ष का ही हुआ था कि माँ चल बसीं। माँ के बिछोह ने धनपत के बचपन का सारा रस सोख लिया। कुछ वर्ष बाद मुंशी अजायबलाल ने दूसरी शादी की। अभाव और अभियोग तो पहले से थे ही, विमाता का निष्ठुर व्यवहार भी उनमें आ मिला। नई माँ बात-बात पर डाँटती थीं। उसे धनपत में बुराइयाँ-ही-बुराइयाँ दिखतीं।

कदाचित् प्रेमचंद अपने उपन्यास 'कर्मभूमि' के पात्र चंद्रकांत के द्वारा खुद अपनी ही व्यथा सुना रहे हैं, "बचपन वह उम्र है जब इनसान को मुहब्बत की सबसे ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। उस वक्त पौधे को तरी मिल जाए तो ज़िंदगी-भर के लिए उसकी जड़ें मज़बूत हो जाती हैं। मेरी माँ के देहांत के बाद मेरी रूह को खुराक नहीं मिली। वही भूख मेरी ज़िंदगी है।"

और, यही कारण था कि बालक धनपत घर-आँगन से भागकर बाहर खुले मैदान में, अमराई में, खेतों की तरफ़ निकल जाता था। साथियों के साथ गुल्ली-डंडा खेलता था। पेड़ों पर चढ़ता था। आम के टिकोरे चुनता था। मटर की फलियाँ तोड़ता था... हवाई किले बनाता था।

गरीबी, घुटन और रुखेपन से त्राण पाने के लिए बालक धनपत ने इस तरह एक सहज रास्ता निकाल लिया था। प्रेमचंद ने बचपन से ही मुसीबतों पर हँसना सीखा था।

धनपत के छात्र-जीवन की आपबीती प्रेमचंद की कहानियों, उपन्यासों और आत्मकथाओं में बिखरी पड़ी है। 'मेरी उम्र आठ साल की थी। अपने चचेरे भाई हलधर के साथ मैं पास के गाँव में एक मौलवी साहब के यहाँ पढ़ने जाया करता था। हम दोनों सवेरे बासी रोटियाँ खा लेते, दोपहर के लिए मटर और जौ का चबेना लेकर चल देते थे। फिर तो सारा दिन अपना था। मौलवी साहब के यहाँ कोई हाज़िरी का रजिस्टर तो था नहीं, और न गैरहाज़िरी का जुर्माना ही देना पड़ता था। फिर डर किस बात का? कभी-कभी हम हफ़्तों गैरहाज़िर रहते, पर मौलवी साहब से ऐसा बहाना कर देते कि उनकी चढ़ी त्योरियाँ उतर जातीं...।'

पिता का तबादला गोरखपुर हुआ। बच्चे भी साथ गए। गाँव के मदरसे से शहर का स्कूल अच्छा था। धनपत की तबीयत पढ़ने में लग गई। गुल्ली-डंडे का खेल पीछे छूट गया। शहरी नज़ारे आगे सरक आए, किताबें चाटने का चस्का इसी उम्र में लगा। हज़ारों कहानियाँ और सैकड़ों छोटे-मोटे उपन्यास धनपत ने इसी उम्र में पढ़ डाले। यह सारा साहित्य उर्दू का था।

हमारा कहानीकार शायद पैदा हो चुका था। रात को अकेले में ढिबरी की मद्धिम रोशनी में उसने गल्प-रचना शुरू कर दी थी। बीसियों पन्ने यों ही लिख जाना और फिर उन्हें फाड़ डालना... यह सब कितना अच्छा लगता होगा तब धनपत को!



शब्द-कलश

- बिछोह – वियोग (Separation)
- विमाता – सौतेली माँ (Step mother)
- निष्ठुर – कठोर (Cruel)
- रूह – आत्मा (Soul)
- अमराई – आम का बाग (Mango orchard)
- हवाई किले – बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ (Fantasise)
- त्राण – मुक्ति, छुटकारा (Freedom)
- सहज – आसान, सरल (Easy)
- त्योरियाँ – माथे पर सिलवट पड़ना (Frown)
- तबादला – बदली, स्थानांतरण (Transfer)
- तबीयत – जी, मन (Mind)
- गल्प – छोटी कथा या कहानी बनाना (Short stories)

उन्हीं दिनों पिता ने शादी करवा दी। निश्चय ही, उसमें सौतेली माँ की राय रही होगी। जो लड़की धनपत के लिए चुनी गई थी, वह धनपत को कभी पसंद नहीं आई। पुत्र के पाँवों में 'अष्टधातु की बेड़ियाँ' डालकर मुंशी अजायबलाल ने हमेशा के लिए आँखें मूँद लीं। परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

अपनी इन दिनों की दशा का वर्णन प्रेमचंद ने 'जीवनसार' में किया है 'पाँव में जूते न थे। देह पर साबुत कपड़े न थे। महँगाई अलग थी। रुपये में बीस सेर का जौ था। स्कूल से साढ़े तीन बजे छुट्टी मिलती थी। काशी के क्वीन्स कॉलेज में पढ़ता था। हेडमास्टर ने फीस माफ़ कर दी थी। इम्तहान सिर पर था और मैं बाँस फाटक, एक लड़के को पढ़ाने जाता था। जाड़ों के दिन थे। चार बजे पहुँचता था। पढ़ाकर छह बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज़ चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच पाता। प्रातःकाल आठ बजे फिर से चलना पड़ता था। कभी वक्त पर स्कूल न पहुँचता। रात को खाना खाकर कुप्पी के सामने पढ़ने बैठता और न जाने कब सो जाता! फिर भी, हिम्मत बाँधे रहता।'

गरीबी। पिता की मृत्यु। खर्च में बढ़ती। असामान्य परिश्रम। कुप्पी के सामने बैठकर रात की पढ़ाई!

जैसे-तैसे द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक पास किया। गणित से बेहद घबराते थे। इंटरमीडिएट में दो बार फेल हुए। निराश होकर परीक्षा का विचार ही छोड़ दिया। आगे चलकर, दस-बारह वर्ष बाद, जब गणित के विकल्प में दूसरा विषय लेना संभव हो गया तभी धनपतराय ने यह परीक्षा पास की।

सन 1891 की बात है। हमारे भावी उपन्यास-सम्राट् के पास एक फूटी कौड़ी न थी। दो दिन एक-एक पैसे को खाकर काटे थे। महाजन ने उधार देने से इंकार कर दिया था। बड़ी विवशता से पुरानी पुस्तकों को लेकर एक पुस्तक-विक्रेता के पास पहुँचे। वहीं एक सौम्य पुरुष से, जो एक छोटे-से स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, उनका परिचय हुआ। उन्होंने इनकी गरीबी और विवशता के साथ ही कुशाग्रता और लगन से प्रभावित होकर अपने यहाँ सहायक अध्यापक के रूप में नियुक्त करने का आश्वासन दिया और दूसरे दिन इन्हें दस रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त कर लिया।

1919 ई० में बी०ए० भी कर लिया। विषय लिए थे—अंग्रेज़ी, फ़ारसी, इतिहास। वे एम०ए० भी करना चाहते थे, कानून भी पढ़ना चाहते थे। लेकिन परीक्षाओं की तरफ़ से उदास हो गए थे। जब उमंग थी तब गणित ने बाधा पहुँचाई। अब जब वह बाधा दूर हुई तो जीवन का लक्ष्य ही बदल चुका था।



सोचो-सोचो!

महाजन ने उधार देने से इनकार क्यों कर दिया था?

स्कूल मास्टर का उनका जीवन भारी घुटन और बेबसी का जीवन रहा। तो क्या प्रेमचंद की कहानियों में इसी का उल्लेख है? पंडित चंद्रधर के रूप में स्वयं प्रेमचंद कहते हैं– "मुदर्रिसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछताया करते थे कि कहाँ से इस जंगल में आ फँसे? यदि किसी अन्य विभाग में नौकरी की होती तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता। यहाँ तो महीने-भर प्रतीक्षा करने के बाद कहीं पंद्रह रुपये देखने को मिलते हैं। वे भी इधर आए, उधर गए। न खाने का सुख, न पहनने का आराम। हमसे तो मज़दूर ही भले।"



शब्द-कलश

विवशता – लाचारी (Helplessness)
कुशाग्रता – तेज़ बुद्धि (Intelligence)
आश्वासन – विश्वास, भरोसा (Assured)

इनकी पहली शादी चाची (विमाता) और चाची के पिता की राय से रचाई गई थी। लड़की न केवल बदसूरत थी, बल्कि प्रेमचंद से उम्र में भी बड़ी थी, ढीठ और नासमझ भी थी। पति से भी लड़ती थी और पति की सौतेली माँ से भी।

दस-बारह वर्ष तक, यानी वर्ष 1905 तक तो धनपतराय ने पहली बीवी का साथ जैसे-तैसे निभाया, किंतु जब उसके साथ एक दिन भी निभाना मुश्किल हो गया तो शिवरानी देवी नाम की बाल-विधवा से शादी करके धनपतराय ने समाज के सामने भारी साहस और आत्मबल का परिचय दिया।

धनपत राय पढ़ाकू तो थे ही, कलम भी चलने लगी। मैट्रिक पास करने से पहले ही उनको लिखने का चस्का लग गया था। पढ़ाई और ट्यूशन आदि से जो वक्त बचता, वह सारा-का-सारा किस्से-कहानियाँ पढ़ने में लगाते। किताबी कहानियों का जो भी असर दिमाग पर पड़ता, उसे अपनी सहज कल्पनाओं में घोल-घोलकर मुंशी जी नई कथावस्तु तैयार करने लगे और वह कागज़ पर उतरने भी लगी।

वर्ष 1901-02 में उनके एक-दो उपन्यास निकले। कहानियाँ वर्ष 1907 में लिखनी शुरू कीं। अंग्रेज़ी में रवींद्रनाथ की कई गल्पें पढ़ी थीं। मुंशी जी ने उन गल्पों के उर्दू-रूपांतर पत्रिकाओं में छपवाए। पहली कहानी थी 'संसार का सबसे अनमोल रतन', जो वर्ष 1907 में कानपुर के उर्दू-मासिक 'ज़माना' में प्रकाशित हई। 'ज़माना' में धनपतराय की अन्य रचनाओं का प्रकाशन वर्ष 1903-04 से ही शुरू हो गया था। वर्ष 1904 के अंत तक नवाब राय 'ज़माना' के स्थायी और विशिष्ट लेखक हो चुके थे।

चाचा का प्यार का नाम नवाबराय शुरू की रचनाओं के साथ वर्षों तक चमकता रहा, किंतु वर्ष 1910-11 में 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के साथ 'नवाबराय' की नवाबी खत्म हो गई। बाद में 'ज़माना' के पाठकों का प्रेमचंद से परिचय हुआ और 'नवाबराय' जाने किस पर्दे की ओट में सदा के लिए छिप गए। बात यह थी कि 'सोज़े वतन' की ज़ब्ती के बाद अंग्रेज़ी सरकार और पिट्ठुओं की नज़र में 'नवाबराय' काँटे की तरह खटकने लगे थे। कई तरह की पाबंदियाँ लग गईं 'नवाबराय' पर...

नई पत्नी के साथ रहने लगे तब से लिखाई का सिलसिला जम गया। वर्ष 1905 से वर्ष 1920 के दरम्यान प्रेमचंद ने बहुत कुछ लिखा– दसियों छोटे-बड़े उपन्यास, सैंकड़ों कहानियाँ। पत्र-पत्रिकाओं में निबंध और आलोचनाएँ भी कम नहीं लिखीं। मास्टरी के दिनों में भी लिखते रहे। स्कूलों के सब डिप्टी इंस्पेक्टर थे, अक्सर दौरे पर रहना होता था, फिर भी रोज़ कुछ-न-कुछ लिख लेते थे।

बीमारी के दिनों में भी छिपकर लिखते थे। पत्नी और बच्चों की नज़रें बचाकर दिन में और रात में चारपाई पर बैठे-बैठे प्रेमचंद के लिए लिखना ही सबसे प्यारा काम था। कभी किसी वजह से उनकी लिखाई छूट जाती तो उनके लिए यह भारी सज़ा थी।

वर्ष 1928 के बाद ज़्यादातर वे हिंदी में ही लिखने लगे। माधुरी (लखनऊ) के संपादक होने पर उनकी प्रतिभा और योग्यता की एक-एक बूँद हिंदी-संसार को मिलने लगी। फिर भी, 'ज़माना' को प्रेमचंद की मौलिक उर्दू-रचनाएँ लगातार मिलती रहीं।

शब्द-कलश

बदसूरत – कुरूप (Ugly)

अब वे अपना निजी पत्र निकालना चाहते थे। पत्र-पत्रिकाएँ संपादित करने की दीक्षा दरअसल प्रेमचंद को कानपुर में ही मिल चुकी थी। वर्ष 1905 से ही 'ज़माना' और 'आज़ाद' के कॉलम उनकी कलम के लिए 'खेल का मैदान' बन चुके थे। वर्ष 1921-22 में काशी से निकलने वाली मासिक पत्रिका 'मर्यादा' का संपादन बड़ी कुशलता से किया था। अब वे मँजे हुए पत्रकार थे। फलतः वर्ष 1930 में 'हंस' निकला और वर्ष 1932 में 'जागरण'।

हद दर्ज़े की ईमानदारी और अपनी ड्यूटी को अच्छी तरह निभाने की मुस्तैदी, खुद तकलीफ़ झेलकर भी दूसरों को सुख पहुँचाने की लगन, सौ-सौ बंधनों में जकड़ी हुई भारत माता की स्वाधीनता के लिए आतुरता, बाहरी और भीतरी बुराइयों की तरफ़ से लोगों को आगाह रखने का संकल्प, हर तरह के शोषण का विरोध... अपनी इन खूबियों से प्रेमचंद खूब लोकप्रिय हो उठे।

प्रेमचंद का स्वभाव बहुत ही विनम्र था। किंतु उनमें स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा था। दिखावा उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था। कुर्ता और धोती। वर्ष 1920 के बाद गांधी टोपी ली थी। सरकारी नौकरी और स्वाभिमान में संघर्ष चलता ही रहता था। आखिर में जीत हुई स्वाभिमान की। वर्ष 1920 में सरकारी सेवा से त्यागपत्र दिया और गाँव आकर जम गए। कलम चलाकर 40-50 रुपये की फुटकर मासिक आमदनी होने लगी। बड़े संतोष और धीरज से वे दिन प्रेमचंद ने गुज़ारे।

वर्ष 1921 में काशी के नामी देशभक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने 150 रुपये मासिक पर प्रेमचंद को 'मर्यादा' का संपादक बना लिया। पहले संपादक बाबू संपूर्णानंद, असहयोग-आंदोलन में गिरफ़्तार होकर जेल पहुँच गए थे। 'मर्यादा' को सँभालने के लिए किसी सुयोग्य संपादक की आवश्यकता थी।

वर्ष 1922 में संपूर्णानंद जी जेल से छूटे तो उन्हें 'मर्यादा' वाला काम वापस मिला। लेकिन बाबू शिवप्रसाद गुप्त प्रेमचंद को छोड़ना नहीं चाहते थे। काशी विद्यापीठ में उन्हें स्कूल-विभाग का हेडमास्टर नियुक्त कर दिया।

डेढ़-दो वर्ष प्रेमचंद काशी विद्यापीठ में रहे होंगे। आगे चलकर उन्हें महसूस हुआ कि विद्यापीठ को पैसे की तंगी है। ऐसी स्थिति में वहाँ लदे रहना उन्हें ठीक नहीं जँचा। दूसरी बात यह थी कि प्रेमचंद स्वाधीनता-संग्राम में कभी जेल नहीं गए थे। विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थाओं में जेल-यात्रा किसी शिक्षक के लिए साधारण योग्यता नहीं, विशेष योग्यता समझी जाती थी।

वर्ष 1923 में 'सरस्वती प्रेस' चालू हुआ। प्रेमचंद की आज़ाद तबीयत को नौकरी भाती नहीं थी। स्वाधीन रहकर लिखने-पढ़ने का धंधा करना चाहते थे। प्रेस खोलते वक्त उनके दिमाग में यही एक बात थी कि अपनी किताबें आप ही छापते रहेंगे। मगर प्रेमचंद अपने प्रेस को वर्षों तक नहीं चला सके, किताबों का प्रकाशन करके कागज़ और छपाई-बँधाई का खर्चा निकालना भी मुश्किल था।

वर्ष 1930 तक प्रेस की हालत खराब रही। फिर भी, वह प्रेमचंद का लहू पी-पीकर किसी तरह चलता रहा। इसमें जो कुछ कसर थी, उसे 'हंस' और 'जागरण' ने पूरा कर दिया। घाटा, घाटा और घाटा। कर्ज़, कर्ज़ और कर्ज़।



शब्द-कलश

मुस्तैदी – तत्परता, उत्साह (Alertness)
आतुरता – शीघ्रता, अधीरता (Eagerness)
लहू पी-पीकर – अत्यधिक पीड़ा सहकर (After much pain)

बार-बार निश्चय करते थे कि अब दुबारा नौकरी नहीं करेंगे, अपनी किताबों से गुज़ारे लायक रकम निकल ही जाएगी–बार-बार जमकर प्रेस में बैठते थे, बार-बार पुराना कर्ज़ पाटकर नए सिरे से मशीन के पुर्जों में तेल डालते थे–काम बढ़ता था, परेशानियाँ बढ़ती थीं, बुढ़ापा और उसी रफ़्तार से आगे बढ़ता जाता था।

पेट की बीमारियाँ हमेशा प्रेमचंद के पीछे पड़ी रहीं। लेकिन, चिंता का रोग उनका सबसे बड़ा रोग था। परिवार बड़ा था, आमदनी कम। थोड़ी-बहुत कटौती करके शिवरानी जो कुछ भी बचातीं, उसे आप प्रेस के पेट में डाल देते।

पढ़ने-लिखने का सारा काम रात को करते थे। तंदुरुस्ती बीच-बीच में टूट जाती थी। दवा-दारू के लिए शिवरानी रुपए देतीं, तो प्रेमचंद उस रकम को भी प्रेस में खर्च कर देते थे। खाना भी मामूली किस्म का खाते थे।

वर्ष 1930 के बाद दशा कुछ बदली ज़रूर; मगर प्रेमचंद का परिश्रम और भी बढ़ गया।

उनका जीवन ऐसा दीप था जिसकी लौ मद्धिम नहीं, तेज़ प्रकाश देने को मज़बूर थी। उसपर दीप में कभी पूरा-पूरा तेल नहीं डाला गया। लौ हमेशा बत्ती के रेशों को ही जलाती रही।

उनकी बेचैनी इसीलिए थी कि वे चाहते थे कि जीवन-दीप का प्रकाश दूर-दूर फैले, वक्त पर फैले, अच्छी तरह फैले। अपनी सारी किताबें, अपना सारा साहित्य अपने प्रेस में ही छपवाकर समूचे देश में फैला देना चाहते थे। किसानों, मज़दूरों, युवकों, विद्यार्थियों, स्त्रियों और अछूतों की दर्दनाक ज़िंदगी को आधार बनाकर जो कोई भी लिखे, सभी कुछ छापकर जनता को सजग-सचेत बना देने का संकल्प प्रेमचंद के अंदर हिलोरें ले रहा था। अधिक-से-अधिक लिखते जाना, अधिक-से-अधिक छापते जाना, अधिक-से-अधिक लोगों को जागरूक बनाते जाना–शोषण, गुलामी, ढोंग, दंभ, स्वार्थ, रूढ़ि, झूठ, अन्याय, अत्याचार इन सबकी जड़ें खोद डालना और धरती को नई मानवता के लायक बनाना–यही प्रेमचंद का उद्देश्य था।

वर्ष 1934 के बाद प्रेमचंद को लगने लगा कि अब वे दो-चार वर्ष से ज़्यादा नहीं जिएँगे। इससे उनके अंदर दिन-रात लिखने की, दिन-रात काम करने की भावना ज़ोर पकड़ती गई।

आजीवन संघर्षरत और अभावग्रस्त लेखक ने अपना स्वास्थ्य चौपट कर दिया। अंतिम दिनों में वे संतरे लेने लगे थे। पथ्य-परहेज़ पर भी थोड़ा-बहुत ध्यान दिया था; लेकिन तब तक तंदुरुस्ती बिलकुल रूठ चुकी थी।

उन्हें 'हंस' की चिंता थी, 'जागरण' की चिंता थी, सरस्वती प्रेस और प्रकाशन की चिंता थी।

उन्हें 'ज़माना' (उर्दू मासिक) की चिंता थी, मरते दम तक जिसके लिए मज़मून तराशते रहे। उन्हें चिंता नहीं थी तो बस धनपतराय की हाँ, प्रेमचंद को प्रेमचंद की चिंता नहीं थी।

वे अच्छी तरह जानते थे कि दुबला-पतला लकड़-सरीखा यह बीमार आदमी धनपतराय हो सकता है, प्रेमचंद हमेशा ज़िंदा रहेगा, कह-कहे लगता रहेगा।



तंदुरुस्ती – स्वास्थ्य (Health)
आजीवन – जीवन पर्यंत (Life long)
मज़मून – लेख का विषय (Subject)

तभी तो हानि-लाभ की भावनाओं में निर्लिप्त रहकर प्रेमचंद अंत तक लिखते रहे।

नींद नहीं आती थी। बीमारी बढ़ गई थी। प्रेस जाना बंद था। फिर भी, आप घरवालों की नज़रें बचाकर उठ जाते और कलम तेज़ी से चल पड़ती—इतनी तेज़ी से कि जीवन समाप्त होने से पहले ही सब कुछ लिख देना चाहते थे।

'मंगलसूत्र' के बीसियों सफ़े प्रेमचंद ने अपनी मृत्यु-शय्या पर ही लिखे। 'महाजनी सभ्यता', 'कफ़न' और प्रगतिशील लेखकों की पहली कांफ्रेंस के लिए अध्यक्ष का भाषण—काफ़ी कुछ उन्होंने हमें अपने अंतिम क्षणों तक दिया।

'मैं मज़दूर हूँ, जिस दिन न लिखूँ—उस दिन मुझे रोटी खाने का अधिकार नहीं', ये शब्द उनके होंठों के केवल आभूषण ही न थे। प्रेमचंद के बारे में उनके विरोधियों की भी यही धारणा रही।

प्रेमचंद को राष्ट्रीयता की दीक्षा इसी अड्डे पर मिली थी। एक साधारण कथाकार वहीं 'युगदृष्टा साहित्यकार' के रूप में ढलने लगा। बड़ी-से-बड़ी बातों को सीधे और संक्षेप में कहना या लिखना प्रेमचंद ने वहीं सीखा।

वर्ष 1930 में प्रेमचंद की कहानियों का एक और संकलन ज़ब्त हुआ—'समरयात्रा'। प्रकाशित होते ही अंग्रेज़ी सरकार ने इस पुस्तक को आपत्तिजनक घोषित कर दिया। पुलिस सरस्वती प्रेस से किताब की सारी प्रतियाँ उठा ले गई।

वर्ष 1930 में प्रेमचंद स्वयं राष्ट्रीय स्वाधीनता-आंदोलन में कूद पड़ना चाहते थे। सत्याग्रहियों की कतार में शामिल होकर पुलिस की लाठियों के मुकाबले डटना चाहते थे। किंतु, जेल जाने का उनका मनोरथ अधूरा ही रह गया।

प्रेमचंद मन मसोसकर रह गए। मज़बूरी थी, पर तसल्ली थी। हर परिवार से एक आदमी को जेल जाना ही चाहिए—उन दिनों यह भावना ज़ोर पकड़ चुकी थी।

यह दूसरी बात है कि वे कभी गिरफ़्तार नहीं हुए, न कभी जेल गए। मगर प्रेमचंद स्वाधीनता-संग्राम के ऐसे सेनापति थे जिसकी वाणी ने लाखों सैनिकों के हृदय में जोश भर दिया था। स्वाधीनता के लिए जनता की लड़ाई का समर्थन करते समय प्रेमचंद यह कभी नहीं भूले कि आज़ादी केवल एक ही व्यक्ति के जीवन को सुखमय नहीं बनाएगी, मुट्ठी-भर आदमियों के लिए ही ऐशो-आराम नहीं लाएगी—वह 'बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय' होगी।

फ़िल्मों के द्वारा जनता तक अपने संदेशों को प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने और साथ ही अभावों से मुक्ति पाने के लिए वे बंबई (मुंबई) गए। किंतु, धनपत को धनपतियों का सहवास और बंबई (मुंबई) का प्रवास रास नहीं आया; वह उनकी अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं कर पाया।

वर्ष 1933 के मध्य में प्रेमचंद बंबई (मुंबई) से लौटकर बनारस आ गए।

फिर वही प्रेस, फिर वही प्रकाशन, फिर वही घिसाई। रातों-रात जागकर प्रेमचंद ने 'गोदान' खत्म किया। 'गोदान' छपकर निकल आया था कि उनकी लेखनी 'मंगलसूत्र' पर तेज़ी से चल रही थी।

मरते-मरते प्रेमचंद इस उपन्यास को पूरा करना चाहते थे—चार ही अध्याय लिख पाए थे कि खाना नहीं हज़म हो पा

शब्द-कलश

निर्लिप्त – अनासक्त, विषयों से अलग रहना (Indifferent)
मनोरथ – इच्छा (Wish)

रहा था। खून की कै करने लगे थे। पेट में पानी भर गया था। दूध, बार्ली, फलों का रस तक नहीं पचा पाते थे। पर, इतने पर भी काम करने की ललक पीछा नहीं छोड़ती थी; लिखने की अभिलाषा शांत नहीं हो पाती थी। देश को अपने जीवन, अपने अनुभव और अपने विचारों की अंतिम बूँद तक दे जाने की इच्छा चैन नहीं लेने देती थी।

8 अक्टूबर, 1936 रात का पिछला पहर। प्रेमचंद ने हमेशा के लिए अपनी आँखें मूँद लीं। अभी साठ के भी नहीं हुए थे। 56 वर्ष की आयु क्या कोई लंबी आयु थी?

संयोग तो देखिए, विश्व के तीन महान उपन्यासकारों–प्रेमचंद, मैक्सिम गोर्की और शरतचंद्र का देहावसान उसी वर्ष हुआ।

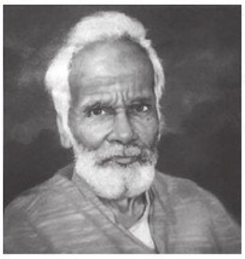
–नागार्जुन

शब्द-कलश

कै – उल्टी (Vomitting)

रोचक तथ्य

प्रेमचंद को 'कलम का सिपाही' भी कहा जाता था।



लेखक-परिचय

नागार्जुन का जन्म 30 जून, 1911 को वर्तमान मधुबनी जिले के सतलखा नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम उमा देवी था। नागार्जुन का असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था, परंतु हिंदी साहित्य में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। नागार्जुन लगभग 68 वर्ष तक रचनाक्रम से जुड़े रहे। कविता, उपन्यास, कहानी-संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, निबंध, बाल-साहित्य, सभी विधाओं में उन्होंने अपनी कलम चलाई। नागार्जुन का निधन 5 नवंबर, 1998 को हुआ।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) चाचा प्रेमचंद को प्यार से क्या बुलाते थे?

☐ साहब ☐ मालिक ☐ नवाब ☐ राजा

(ख) माँ के देहांत के समय धनपत की आयु कितनी थी?

☐ पाँच वर्ष ☐ चार वर्ष ☐ सात वर्ष ☐ तीन वर्ष

(ग) पिता का तबादला कहाँ हुआ था?

☐ चंदौसी ☐ गोरखपुर ☐ पीलीभीत ☐ बरेली

(घ) प्रेमचंद का स्वभाव कैसा था?

☐ घमंडी ☐ चतुर ☐ आलसी ☐ विनम्र

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) धनपत के माता-पिता का क्या नाम था?

(ख) बालक धनपत घर-आँगन से भागकर बाहर क्यों जाता था?

(ग) बालक धनपत को किताबें पढ़ने का शौक कहाँ लगा?

(घ) धनपतराय की पहली कहानी कौन-सी थी? वह किस पत्रिका में छपी थी?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) धनपतराय का छात्र जीवन कैसे व्यतीत हुआ?

....

....

(ख) प्रेमचंद को बुढ़ापे में किसकी चिंता सताती थी?

....

....

(ग) प्रेमचंद की कौन-कौन-सी पुस्तकें अंग्रेज़ों ने ज़ब्त की थीं?

....

....

(घ) वर्ष 1936 में किन तीन महान उपन्यासकारों का देहावसान हुआ?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) प्रेमचंद का शिवरानी देवी के साथ विवाह करने का क्या कारण था? इससे घर में क्या परिवर्तन आया?

(ख) प्रेमचंद के लेखन के सफ़र का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(ग) "प्रेमचंद की कहानियों का विषय समयानुकूल बदलता रहा।", कैसे? स्पष्ट कीजिए।

(घ) प्रेमचंद स्वाधीनता-संग्राम के कैसे सेनापति थे?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) नई माँ बात-बात पर .... थी।

(ख) उसे .... में बुराइयाँ ही बुराइयाँ दीखतीं।

(ग) हमारा .... शायद पैदा हो चुका था।

(घ) जब उमंग थी तब .... ने बाधा पहुँचाई।

(ङ) काशी विद्यापीठ में उन्हें स्कूल-विभाग का .... नियुक्त कर दिया।

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) मुंशी अजायब लाल ने दूसरी शादी कर ली थी। ....

(ख) नई माँ धनपत से बहुत प्यार करती थीं। ....

(ग) उस समय रुपये में बीस सेर का जौ था। ....

(घ) धनपत ने द्‌वितीय श्रेणी में मैट्रिक पास किया। ....

(ङ) धनपत को गणित बहुत पसंद था। ....

(च) प्रेमचंद ने मृत्यु-पूर्व उपन्यास 'मंगलसूत्र' पूरा कर लिया था। ....

5. निम्नलिखित पाठांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

वाराणसी से चार मील दूर लमही में शनिवार, 31 जुलाई, 1880 को धनपतराय का जन्म हुआ। माँ-बाप ने नाम रखा था– 'धनपत'। चाचा लाड़-प्यार में कहा करते थे– 'नवाब'।

पिता का नाम था– 'अजायबराय'। डाकखाने में किरानी थे, इसी से लोग उन्हें मुंशी अजायब लाल कहा करते थे। माता का नाम था– 'आनंदी'। अक्सर बीमार रहती थीं। पिता को दवा-दारू से फ़ुरसत नहीं मिलती थी।

(क) प्रेमचंद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

....

(ख) माँ-बाप ने प्रेमचंद का क्या नाम रखा था?

....

(ग) प्रेमचंद के माता-पिता का क्या नाम था?

....

(घ) प्रेमचंद के पिता क्या काम करते थे?

....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं; जैसे– लंबा आदमी।

1. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित विशेषण पाठ में से छाँटकर लिखिए–

(क) .... सूरत

(ख) .... भौंहें

(ग) .... आँखें

(घ) .... नाक

(ङ) .... चेहरा

(च) .... रोटियाँ

(छ) .... रोशनी

(ज) .... कहानियाँ

(झ) .... पुरुष

(ञ) .... लेखक

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) माँ – ....

(ख) पिता – ....

(ग) आँख – ....

(घ) संसार – ....

(ङ) स्त्री – ....

3. निम्नलिखित वाक्यों के सामने रचना के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए–

(क) पिता का तबादला गोरखपुर हुआ। – ....

(ख) जो लड़की धनपत के लिए चुनी गई थी, वह धनपत को कभी पसंद नहीं आई। – ....

(ग) यह कारण था कि बालक धनपत घर-आँगन से भागकर बाहर खुले मैदान में चला जाता था। – ....

(घ) वह पेड़ों पर चढ़ता था और आम के टिकोरे चुनता था। – ....

(ङ) उनके दिमाग में यही एक बात थी कि अपनी किताबें आप ही छापते रहेंगे। – ....

कभी-कभी हफ़्तों गैर हाज़िर रहते, पर मौलवी साहब से ऐसा बहाना कर देते कि उनकी चढ़ी त्योरियाँ उतर जाती।

इस वाक्य में 'पर' और 'कि' शब्द वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य कर रहे हैं, ऐसे शब्द 'योजक' कहलाते हैं। कुछ योजक शब्द परिणामसूचक होते हैं; जैसे– क्योंकि, इसलिए, लेकिन, किंतु आदि। कुछ योजक शब्द जोड़ने का कार्य करते हैं जैसे– और, तथा, एवं आदि।

4. निम्नलिखित योजकों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) इसलिए – ....

(ख) परंतु – ....

(ग) क्योंकि – ....

(घ) तथा – ....

(ङ) और – ....

(च) तथा – ....

(छ) एवं – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

पुस्तकों का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. "विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय शिक्षक-संस्थाओं में जेल-यात्रा किसी शिक्षक के लिए साधारण योग्यता नहीं, विशेष योग्यता समझी जाती थी।"

जेल जाना विशेष योग्यता कैसे हो सकती है? उस काल में भारत की स्थिति को ध्यान में रखकर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

2. सफल व्यक्ति बनने के लिए विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या और सुव्यवस्थित कार्यशैली पर एक लेख लिखिए–

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

....

....

....

....

....

....

....

3. मुंशी प्रेमचंद की जयंती के उपलक्ष्य में सहपाठियों के साथ मिलकर प्रेमचंद की किसी प्रसिद्ध कहानी पर नाटक तैयार करके प्रस्तुत कीजिए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियों को पढ़िए तथा उनकी एक सूची तैयार कीजिए। साथ ही किन्हीं दो कहानियों में दी गई सीख पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

2. प्रेमचंद ने अनेक उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी हैं। उनकी जो कहानी आपको अच्छी लगती है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

मेरा पिटारा

नोबेल पुरस्कार प्राप्त कुछ प्रमुख भारतीय

नोबेल पुरस्कार का इतिहास

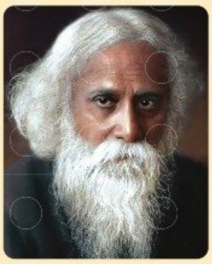
स्वीडन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और डायनामाइट के आविष्कारक अल्फ्रेड बी॰ नोबेल ने अपनी वसीयत में लिखा था कि–

मेरी संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा एक फंड में डाला जाए और उसके ब्याज को हर साल मानव जाति की सेवा करने वाले लोगों को पुरस्कार के रूप में दिया जाए। उनके निधन के बाद 'नोबेल पुरस्कार' दिया जाने लगा। वर्तमान में प्रतिवर्ष भौतिकी, रसायन, अर्थशास्त्र, चिकित्सा, साहित्य और शांति के क्षेत्रों में अद्‌वितीय काम करने वालों को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। आज हम आपको ऐसे भारतीयों के बारे में बता रहे हैं, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट कार्यों से यह पुरस्कार प्राप्त करके पूरे देश को गौरवान्वित किया।

कुछ ऐसे प्रमुख भारतीय, जिन्होंने नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया–

नाम	कब, किस क्षेत्र में	क्यों
रवींद्रनाथ ठाकुर	1913 – साहित्य	'गीतांजलि' रचना के लिए
डॉ॰ चंद्रशेखर वेंकटरमन	1930 – भौतिकी	प्रकाश के प्रकीर्णन की खोज पर
मदर टेरेसा	1979 – शांति	दीन-दुखियों की सेवा के लिए
डॉ॰ अमर्त्य सेन	1998 – अर्थशास्त्र	अर्थशास्त्र का कल्याणकारी पहलू उजागर करने पर
कैलाश सत्यार्थी	2014 – शांति	बाल-अधिकारों के संरक्षण के लिए

1. विश्वकवि गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर (1867-1941)



कोलकाता में जन्मे विश्वविख्यात साहित्यकार और शिक्षाशास्त्री रवींद्रनाथ ठाकुर को सन 1913 में उनकी कृति 'गीतांजलि' के लिए साहित्य का 'नोबेल पुरस्कार' दिया गया था। यह सम्मान पाने वाले वे पहले भारतीय थे। कवि के साथ-साथ वे उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, कला-प्रवीण, पत्रकार, अध्यापक और तत्वज्ञाणी भी थे, भारत के राष्ट्रगान 'जन गन मन....' की रचना इन्होंने ही की थी।

उनकी ये पंक्तियाँ हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं :

"जहाँ मन निर्भय हो और सिर ऊँचा रखा जा सके,
जहाँ संकीर्ण घरेलू दीवारों के कारण, संसार टुकड़ों में बँटा न हो,
परम पिता, स्वाधीनता के उस स्वर्ग में,
मेरा देश जाग्रत हो..."

2. डॉ॰ चंद्रशेखर वेंकटरमन (1889-1970)



भौतिक विज्ञान शास्त्री डॉ॰ चंद्रशेखर वेंकटरमन का जन्म तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के पास तिरुवानैक्कवल में हुआ था। उन्होंने प्रेसिडेंसी कॉलेज मद्रास में शिक्षा पाई थी। प्रकाश के प्रकीर्णन पर अध्ययन के लिए सन 1930 में डॉ॰ रमन को भौतिकी का 'नोबेल पुरस्कार' प्रदान किया गया। उनकी खोज को 'रमन प्रभाव' नाम दिया गया।

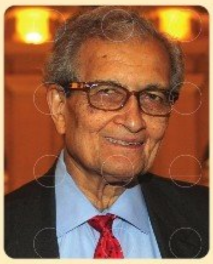
विज्ञान में रमन की प्रतिभा और लगन देखते ही बनती थी। उन्हें सन 1945 में भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान 'भारतरत्न' से सम्मानित किया गया। डॉ॰ रमन ने बैंगलोर (बेंगलुरु) में 'रमन रिसर्च संस्थान' की स्थापना की। सन 1970 में इस महान वैज्ञानिक का 82 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

3. मदर टेरेसा (1910-1997)



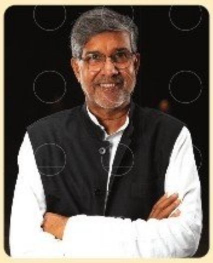
मदर टेरेसा का जन्म युगोस्लाविया में हुआ था। पहले उनका नाम एग्नेस था। भारत में वे 18 वर्ष की आयु में ईसाई धर्म की मिशनरी के रूप में कोलकाता आई थीं। वे दीनों, अनाथों और रोगियों की दशा से द्रवित होकर, उनकी सेवा-सुश्रूषा में प्रवृत्त हो गईं। अब उनका नाम एग्नेस के बजाय टेरेसा हो गया, जो दीन-दुखियों की सेवा का पर्याय बन गया। मदर टेरेसा की निःस्वार्थ सेवा से प्रभावित होकर सन 1979 में उन्हें शांति के 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया।

4. अर्थशास्त्री डॉ॰ अमर्त्य सेन (जन्म 1933)



अर्थशास्त्री डॉ॰ अमर्त्य सेन का जन्म शांति निकेतन, कोलकाता में हुआ था। प्रो॰ अमर्त्य सेन ऐसे अकेले अर्थशास्त्री हैं, जिन्होंने अर्थशास्त्र के क्लासिकल नैतिक मूल्यों और मानवीय आग्रहों से अर्थशास्त्र की गरिमा को बढ़ाया है। प्रो॰ अमर्त्य सेन ने अर्थशास्त्र के कल्याणकारी स्वरूप पर अनेक पुस्तकें लिखीं हैं। उनकी लिखी विशिष्ट पुस्तकें हैं– 'थ्योरी ऑफ़ सोशल च्वाइस', 'डेफिनिशन ऑफ़ वेलफेयर एंड पावर्टी और स्टडी फेमिन' इन्हीं पुस्तकों को आधार मानकर उन्हें 1998 में अर्थशास्त्र के 'नोबेल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

5. कैलाश सत्यार्थी (जन्म 1954)



मध्य प्रदेश में जन्मे कैलाश सत्यार्थी जी को वर्ष 2014 में 'नोबेल शांति पुरस्कार' प्रदान किया गया। उन्हें यह पुरस्कार लाखों-करोड़ों बच्चों का जीवन सुधारने के लिए मिला। कैलाश जी के चलाए गए 'बचपन बचाओ आंदोलन' के अंतर्गत दुनिया भर के 1 लाख से अधिक बच्चों को मानव-तस्करी, गुलामी और बाल-श्रम के कुचक्र से आज़ादी दिलाई जा चुकी है।

9 नर हो, न निराश करो मन को

प्रस्तुत कविता 'निराशा में आशा' पर आधारित है। आइए, कविता पढ़ने से पूर्व दी गई कविता पढ़े–

जब जीवन में कुछ बाधा हो,
कुछ भी न सीधा-सादा हो।
जब जीवन की कठिन पगडंडी पर,
घटता चलने का इरादा हो।
जब मन-में कुछ-कुछ घुटता हो,
साँसें अवरोहित होती हों।
जब एक पल एक युग-सा लगता हो,
पाँव में बेड़ियाँ चुभती हों।

तब भी तुम न होना निराश,
मन में रखना बस एक आस।
जीवन में सब कुछ संभव है,
जब तुमको खुद पर हो दृढ़ विश्वास।
बस अटल इरादा रखना है,
चट्टान-सा अड़कर रहना है।
मृत्यु भी अगर सामने है तो,
डर-डर कर क्यों रहना है।

विचार-मंथन

कवि निराश न होने की बात क्यों कर रहे हैं?

पठन

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।।1।।

सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?



सोचो-सोचो!

प्रभु ने प्रत्येक मानव को लगभग समान बनाया है। फिर भी कोई व्यक्ति अति सुखी अथवा कोई व्यक्ति अति दुखी क्यों हो जाता है?

शब्द-कलश

अर्थ – निमित्त, हेतु, के लिए (Purpose)
उपयुक्त – उचित (Appropriate)
सुयोग – सुअवसर (Opportunity)
सदुपाय – अच्छा उपाय (Good solution)

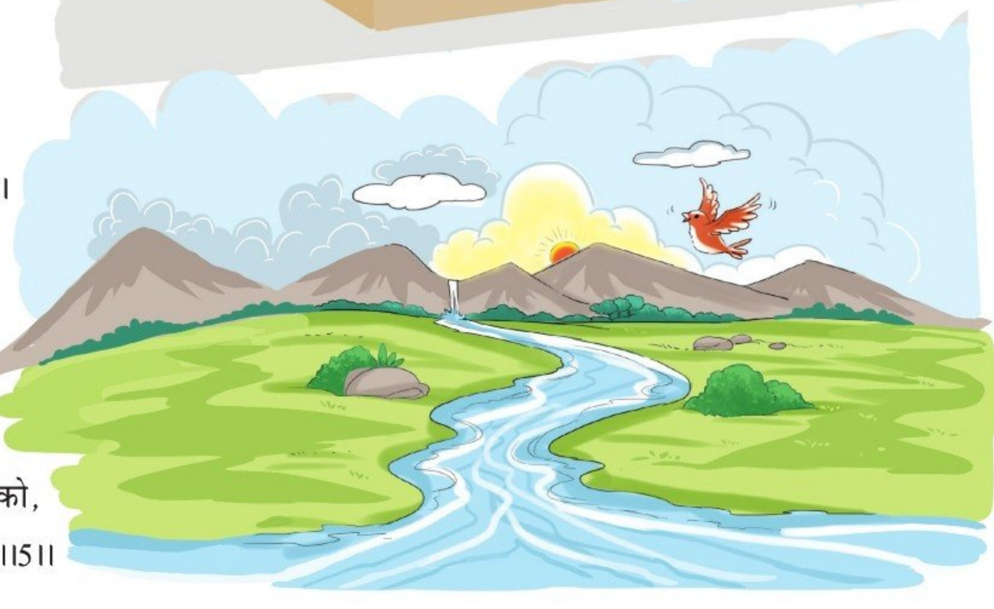
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर है, अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को।।2।।

जल-तुल्य निरंतर शुद्ध रहो,
प्रबलानल ज्यों अनिरुद्ध रहो।
पवनोपम सत्कृतिशील रहो,
अवनी-तल-वद् धृतिशील रहो।
कर लो नभ-सा शुचि जीवन को,
नर हो, न निराश करो मन को।।3।।



जब प्राप्त तुम्हें सब तत्व यहाँ,
फिर जा सकता वह सत्व कहाँ?
तुम स्वत्व-सुधा रसपान करो,
उठकर अमरत्व-विधान करो।
दव-रूप रहो भव-कानन को
नर हो, न निराश करो मन को।।4।।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे।
मरणोत्तर गुंजित गान रहे,
सब जाए अभी, पर मान रहे।
कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।।5।।



शब्द-कलश

निरा – कोरा, मात्र (Sheer)
प्रशस्त – दिशा दिखाना (Direct)
अखिलेश्वर – भगवान (God)
अवलंबन – सहारा (Support)
प्रबलानल – तेज़ आग (Wild fire)
अनिरुद्ध – अबाध, जो रोका न जाए (Unstoppable)
पवनोपम – वायु के समान (Wind like)
सत्कृतिशील – अच्छे कार्य करने के स्वभाव वाला (Good natured)
अवनी – धरती (Earth)
शुचि – पवित्र (Pious)
सत्व – मूलतत्व, सार, जीवन (Summarg, gist)
दव – दावानल, जंगल की आग (Forest fire)
मरणोत्तर – मरने के बाद (After death)

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु-विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो!
फिर है किसका यह दोष कहो।
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को।।6।।



किस गौरव के तुम योग्य नहीं?
कब, कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।
फिर दुर्लभ क्या उसके जन को?
नर हो, न निराश करो मन को।।7।।



करके विधि वाद न खेद करो,
निज लक्ष्य निरंतर भेद करो।
बनता बस उद्‌यम ही विधि है,
मिलती जिससे सुख की निधि है।
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को
नर हो, न निराश करो मन को।।8।।

–मैथिलीशरण गुप्त



रोचक तथ्य

उत्साह के साथ किए गए काम व्यक्ति को सफल बनाते हैं। कभी भी निराश न होना यही सफलता का मूलमंत्र है।



शब्द-कलश

वांछित – इच्छित (Desired)
अलभ्य – प्राप्त न कर सकने योग्य (Unattainable)
विधि – भाग्य (Luck)
उद्‌यम – मेहनत (Hardwork)
निधि – खजाना (Wealth)
निष्क्रिय – कर्महीन (Logy/Idle)



कवि-परिचय

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त, 1881 को झाँसी (उ॰प्र॰) में हुआ था। गुप्त जी खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। गुप्त जी कबीरदास के भक्त थे। इन्हें साहित्य जगत में 'दद्‌दा' नाम से संबोधित किया जाता था। उनकी मुख्य कृतियों में– 'पंचवटी', 'साकेत', जयद्रथ वध', 'यशोधरा' जैसे नाम सम्मिलित हैं। गुप्त जी का निधन 12 दिसंबर, 1964 को झाँसी में हो गया।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) जीवन क्या नहीं होना चाहिए?

☐ संपन्न ☐ व्यर्थ ☐ सफल ☐ समर्थ

(ख) कवि किसे निराश नहीं होने की प्रेरणा दे रहा है?

☐ समाज को ☐ मन को ☐ परिवार को ☐ व्यक्ति को

(ग) मनुष्य के पास क्या अवलंब है?

☐ जलचर ☐ अखिलेश्वर ☐ थलचर ☐ निशाचर

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) कवि क्या करने के लिए कहता है?

(ख) कवि के अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा सहारा कौन है?

(ग) मनुष्य को धैर्यशील क्यों रहना चाहिए?

(घ) मनुष्य को हमेशा किसका ज्ञान रहना चाहिए?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) मनुष्य का जीवन सार्थक बनाने के लिए कवि क्या प्रेरणा दे रहा है?

....

....

(ख) मनुष्य अपना पथ कैसे प्रशस्त कर सकता है?

....

....

(ग) कवि के अनुसार कोई भी धन अलभ्य क्यों नहीं है?

....

....

(घ) कवि ने कैसे जीवन को धिक्कार कहा है?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कवि के अनुसार मनुष्य के लिए कुछ भी दुर्लभ क्यों नहीं है?

(ख) कवि मनुष्य को भाग्यवादी विचारधारा तोड़कर किस धारा की ओर प्रवृत्त होने की प्रेरणा दे रहा है?

(ग) कवि ने मनुष्य को पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंच महाभूतों से क्या शिक्षा ग्रहण करने के लिए कहा है?

(घ) निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

(i) किस गौरव के तुम योग्य नहीं?
कब, कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।।

(ii) सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।।

3. निम्नलिखित भाव वाली कविता की पंक्तियाँ लिखिए–

(क) यह अमूल्य जन्म व्यर्थ न चला जाए, इसलिए संसार में कुछ नाम कमाकर दिखाओ।

....

(ख) अपने जीवन को आसमान की तरह साफ़-सुथरा और पवित्र कर लो।

....

(ग) संसार में उपलब्ध सभी वस्तुएँ प्राप्य हैं, यदि तुम उन्हें प्राप्त न कर सको तो फिर यह किसका दोष है।

....

(घ) भाग्य मेहनत से बनता है, सोचते रहने से नहीं।

....

4. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

किस गौरव ....

.... भोग्य नहीं?

जन हो ....

.... घर के।

फिर दुर्लभ ....

.... मन को।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

वाक्य में किसी शब्द या पद के बाद कुछ अव्यय लगकर विशेष बल या अवधारणा को व्यक्त करते हैं, उन्हें 'निपात' कहते हैं; जैसे– ही, भी, तो, तक, मात्र, भर आदि। निपात में लिंग, वचन, कारक की दृष्टि से रूप भेद नहीं होता। निपात का प्रयोग अर्थ के अनुसार वाक्य में अलग-अलग स्थान पर हो सकता है परंतु यह छूट अव्यय को नहीं दी जा सकती; जैसे–
भी – तुम भी जा रहे हो, मुझे राँची भी जाना है।
ही – तुमको ही आना होगा; रमेश आज ही मुंबई जा रहा है।

1. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थान में उचित निपात शब्द भरिए–

(क) तुम अब .... क्यों नहीं पहुँचे?

(ख) मैं तुम्हें .... दस रुपये दे सकता हूँ।

(ग) ओहो! तो आप आ .... गए।

(घ) क्या तुम .... अभिनय करोगी?

(ङ) विशाल पढ़-लिखकर डॉक्टर .... बनेगा।

2. यदि 'मौलिक' शब्द में से मूलशब्द और प्रत्यय अलग करें तो होगा– 'मूल + इक'। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों से मूलशब्द व प्रत्यय अलग-अलग करके लिखिए–

(क) भौगोलिक – .... + ...

(ख) भौतिक – .... + ...

(ग) मौखिक – .... + ...

(घ) बौद्धिक – .... + ...

क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है, कि वाक्य में क्रिया कर्ता, कर्म या भाव के अनुसार है, उसे 'वाच्य' कहते हैं। वाच्य के तीन भेद होते हैं–

कर्तृवाच्य– जिस वाक्य की क्रिया कर्ता के अनुसार होती है, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं; जैसे–बच्चे खेल रहे हैं।

कर्मवाच्य– जिस वाक्य की क्रिया उसके कर्म के अनुसार होती है, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं; जैसे– सुमन से कार चलाई जाती है।

भाववाच्य– जो क्रिया वाक्य के कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होती है, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं; जैसे– दादी से सोया नहीं जाता।

3. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य बदलकर लिखिए–

(क) विभा ने सहेलियों को बुलवाया। (कर्मवाच्य में)

....

(ख) बालक निबंध लिख रहे हैं। (कर्मवाच्य में)

....

(ग) वैभव से नहीं पढ़ा जाता। (कर्तृवाच्य में)

....

(घ) अंशुमन खेल रहा है। (भाववाच्य में)

....

(ङ) हमसे गाना गाया जाएगा। (कर्तृवाच्य में)

....

'कब व्यर्थ हुआ सदुपयोग भला' उपयोग शब्द से पहले 'सद्' लगाकर 'सदुपयोग' बना है, जिसका अर्थ है– सही उपयोग। 'सद्' एक उपसर्ग है। 'सद्' उपसर्ग से बनने वाले कुछ और शब्द हैं– सद्भावना, सद्गुरु आदि।

4. निम्नलिखित उपसर्गों से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए–

(क) वि – ....

(ख) सु – ....

(ग) स्व – ....

(घ) बे – ....

(ङ) प्रति – ....

(च) हर – ....

(छ) अ – ....

(ज) अन – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

निष्क्रिय रहने के क्या नुकसान हैं?

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. यदि दुनिया में हर व्यक्ति निराश अथवा हताश होना छोड़ दे तो इस संसार की काया-पलट कैसे होगी? सोचकर बताइए।

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

2. कविता-लेखन की प्रतियोगिता में असफल हुए मित्र को निराश न होने और प्रयास करते रहने का संदेश देते हुए एक पत्र लिखिए–

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

3. दुनिया में विभिन्न लोग विभिन्न कारणों से निराश, परेशान व हताश रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों की सहायता के लिए 'परामर्शदाता' व 'मनोचिकित्सकों' की सलाह ली जाती है। सहपाठियों के साथ मिलकर लोगों की निराशा व परेशानियों के कारणों व उपायों पर मनोचिकित्सक से बातचीत करने हेतु प्रश्न तैयार कीजिए।

प्र॰ 1 ....

प्र॰ 2 ....

प्र॰ 3 ....

प्र॰ 4 ....

(मेरी श्रवण कुशलता)
(Listening Skills)

4. आपके अध्यापक/अध्यापिका पुस्तक के पृष्ठ संख्या 171 से एक पद्यांश पढ़कर सुनाएँगे। उसे ध्यानपूर्वक सुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) दूध-दही की नदियाँ कहाँ बह रही हैं?

☐ घरों पर ☐ मैदानों पर ☐ पर्वतों पर ☐ धरती पर

(ख) देश के लाल क्या झुकाना नहीं जानते?

☐ पेड़ ☐ शीश ☐ फूल ☐ इसमें से कोई नहीं

(ग) धरती की माँग किससे भरी है?

☐ मोती से ☐ रंग से ☐ तारों से ☐ घास से

(घ) किसके शिखरों पर ध्वजा लहरा रही है?

☐ भवनों के ☐ हिमालय के ☐ चट्टानों के ☐ पर्वतों के

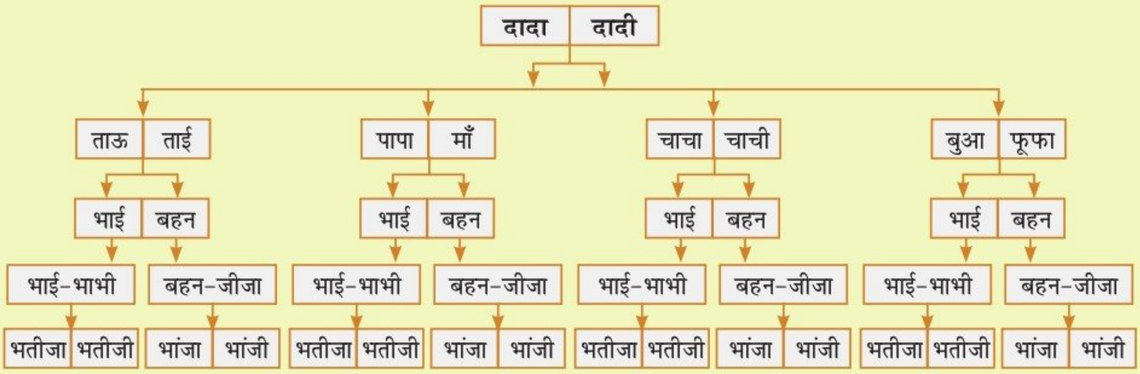
मेरी परियोजना (Project Work)

1. कई बार निराश व्यक्ति को हवा-पानी बदलने के लिए कुछ समय के लिए किसी प्राकृतिक जगह पर घूमने की सलाह दी जाती है। आपके अनुसार और कौन-से तरीकों से किसी हताश व्यक्ति के उपचार में सहायता हो सकती है?

2. निराशा से बचने में योगाभ्यास व ध्यान का बहुत महत्व है। किसी प्रशिक्षक के सहयोग से प्रतिदिन योगाभ्यास कीजिए।

10 ताई

आइए, पाठ को पढ़ने से पूर्व दिए गए फ्लो चार्ट की सहायता से पारिवारिक ताने-बाने को समझें–



विचार-मंथन

लेखक ने इस पाठ में प्रस्तुत अपनी कहानी का नाम 'ताई' रखा है। शीर्षक पढ़कर क्या आपको लगता है कि पाठ में लेखक एवं ताई के रिश्ते की कहानी होगी?

पठन

"ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी ला दोगे?" कहता हुआ एक पंचवर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा। बाबू साहब ने दोनों बाँहें फैलाकर कहा, "हाँ बेटा, ला देंगे।"



उनके इतना कहते-कहते बालक उनके निकट आ गया। उन्होंने बालक को गोद में उठा लिया और उसका मुख चूमकर बोले, "क्या करेगा रेलगाड़ी का?"

बालक बोला, "उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे। हम भी जाएँगे, चुन्नी को भी ले जाएँगे। बाबू जी को नहीं ले जाएँगे। हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते। ताऊ जी तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे।"

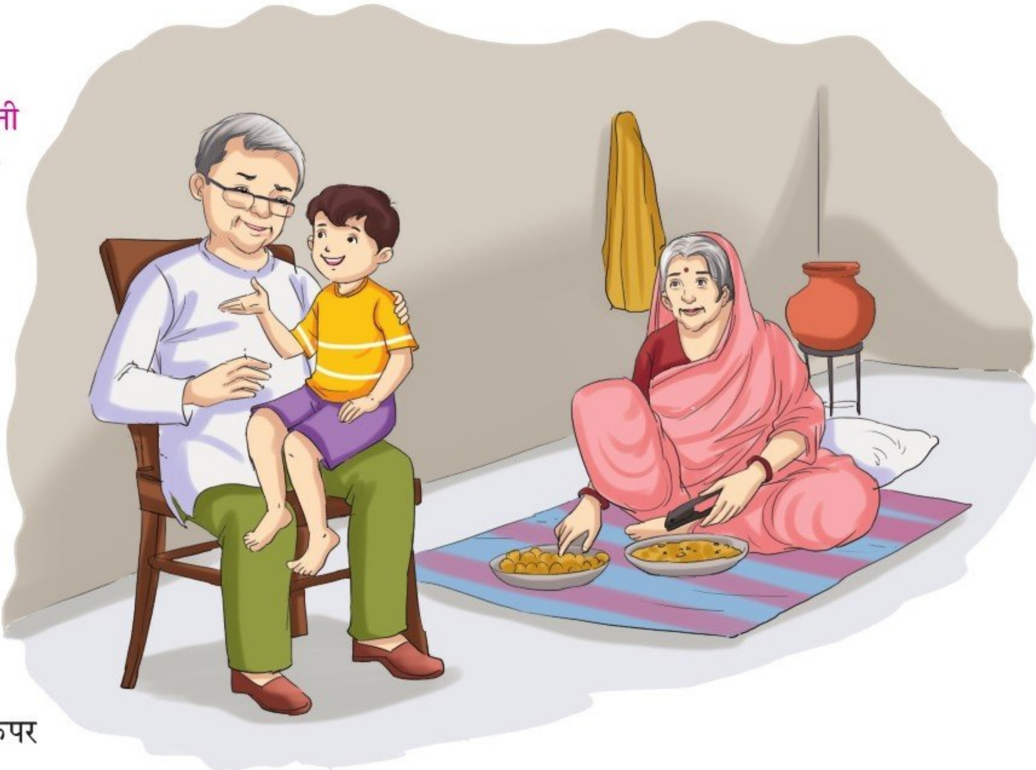
बाबू साहब–"और किसे ले जाएगा?"

बालक दमभर सोचकर बोला, "बछ, औल किछी को नहीं ले जाएँगे।"

पास ही बाबू रामजीदास की अर्धांगिनी बैठी थीं। बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा, "और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा?"

बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा। ताई जी इस समय कुछ चिढ़ी हुई-सी बैठी थीं। बालक को उनके मुख का यह भाव अच्छा न लगा। अतएव वह बोला, "ताई को नहीं ले जाएँगे।"

ताई जी सुपारी काटती हुई बोलीं, "अपने ताऊ को ही ले जा। मेरे ऊपर दया रख।"



ताई ने यह बात रुखाई के साथ कही। बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया। बाबू साहब ने पूछा, "ताई को क्यों नहीं ले जाएगा?"

बालक–"ताई हमें प्याल नहीं कलती।"

बाबू साहब–"जो प्यार करें तो ले जाएगा?"

बालक को इसमें कुछ संदेह था। ताई का भाव देखकर उसे यह आशा नहीं थी कि वह प्यार करेगी। इससे बालक मौन रहा।

बाबू साहब ने फिर पूछा, "क्यों रे, बोलता क्यों नहीं? ताई प्यार करे तो रेल पर बिठाकर ले जाएगा?"

बालक ने ताऊ जी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया, परंतु मुख से कुछ नहीं कहा।

बाबू साहब उसे अपनी अर्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले, "लो, प्यार कर लो, यह तुम्हें भी ले जाएगा।"

परंतु बच्चे की ताई श्रीमती रामेश्वरी को पति की चुहलबाज़ी अच्छी न लगी। वह तुनककर बोली, "तुम्हीं रेल पर बैठकर जाओ, मुझे नहीं जाना है।"

बाबू साहब ने रामेश्वरी की बात पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे को उनकी गोदी में बिठाने की चेष्टा करते हुए बोले, "प्यार नहीं करोगी, तो फिर रेल में नहीं बिठाएगा। क्यों रे, मनोहर?"

शब्द-कलश

अर्धांगिनी – पत्नी (Wife)
शुष्क व्यवहार – रूखा व्यवहार (Rude behaviour)
चुहलबाजी – हँसी-मज़ाक (Prankishness)

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया। उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया। मनोहर नीचे गिर पड़ा। बाबू साहब ने उसे गोद में उठा लिया, पुचकारकर चुप किया और तत्पश्चात उसे कुछ पैसे तथा रेलगाड़ी ला देने का वचन देकर छोड़ दिया। बालक मनोहर भयपूर्ण दृष्टि से अपनी ताई की ओर ताकता हुआ उस स्थान से चला गया।

मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले, "तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है? बच्चे को ढकेल दिया। जो उसके चोट लग जाती तो?"

रामेश्वरी मुँह लटकाकर बोली, "लग जाती तो अच्छा होता। क्यों मेरी खोपड़ी पर लाद देते थे? आप ही तो उसे मेरे ऊपर डालते थे और अब आप ही ऐसी बातें करते हैं!"

बाबू साहब कुढ़कर बोले, "इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं?"

रामेश्वरी–"और नहीं तो किसे कहते हैं? तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं। न जाने कब किसका जी कैसा होता है। तुम्हें इन बातों की कुछ परवाह ही नहीं, अपनी चुहल से काम है।"

बाबू साहब–"बच्चों की प्यारी-प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है। मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है।"

रामेश्वरी–"तुम्हारा हो जाता होगा। और होने को होता भी है; मगर वैसा बच्चा भी तो हो। पराए धन से भी कहीं घर भरता है?"

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले, "यदि अपना सगा भतीजा पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे।"

रामेश्वरी कुछ उत्तेजित होकर बोली, "बातें बनाना बहुत आता है। तुम्हारा भतीजा, तुम चाहे जो समझो, पर मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगतीं। हमारे भाग्य ही फूटे हैं। नहीं तो ये दिन काहे को देखने पड़ते। तुम्हारी चलन तो दुनिया से निराली है। आदमी संतान के लिए न जाने क्या-क्या करते हैं, पूजा-पाठ कराते हैं, व्रत रखते हैं, पर तुम्हें इन बातों से क्या काम! रात-दिन भाई-भतीजों में मगन रहते हो।"

बाबू साहब के मुख पर घृणा का भाव झलक आया। उन्होंने कहा, "पूजा-पाठ, व्रत, सब ढकोसला है। जो भाग्य में नहीं, वह पूजा-पाठ से कभी प्राप्त नहीं हो सकता है। मेरा यह अटल विश्वास है।"

श्रीमती जी कुछ रुआँसे स्वर में बोलीं, "इसी विश्वास ने तो सब चौपट कर रखा है। ऐसे विश्वास पर ही बैठे रहे, आदमी काहे को किसी बात के लिए चेष्टा करे।"

बाबू साहब ने सोचा कि मूर्ख स्त्री के मुँह लगना ठीक नहीं, अतएव स्त्री की बात का कुछ उत्तर न देकर वहाँ से चले गए।



शब्द-कलश

पुचकारकर – प्यार करके (Show affection)
उत्तेजित – क्षुब्ध होकर (Excited)

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं। कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन-देन भी है। इनके एक छोटा भाई है। उसका नाम है कृष्णदास। दोनों भाइयों का परिवार एक ही घर में रहता है। बाबू रामजीदास की आयु 35 वर्ष के लगभग है और छोटे भाई कृष्णदास की आयु 21 के लगभग। रामजीदास निस्संतान हैं। कृष्णदास की दो संतानें हैं, एक पुत्र–वही पुत्र जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं–और एक कन्या है। कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है।

रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुख है। वह दिन-रात संतान ही की सोच में घुला करती है। छोटे भाई की संतान पर पति का प्रेम उनकी आँख में काँटे की तरह खटकता है।

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, जब तक उससे प्रेम नहीं करता। किंतु भद्दी-से-भद्दी और काम में न आने वाली वस्तु को भी यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है। पराई वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, कितनी ही उपयोगी क्यों न हो, कितनी ही सुंदर क्यों न हो; उसके नष्ट होने पर मनुष्य कुछ भी दुख का अनुभव नहीं करता; इसलिए कि वह वस्तु उसकी नहीं, पराई है। अपनी वस्तु कितनी ही भद्दी हो, काम में न आने वाली हो, उसके नष्ट होने पर मनुष्य को दुख होता है; इसलिए कि वह अपनी चीज़ है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मनुष्य पराई चीज़ से प्रेम करने लगता है। ऐसी दशा में भी जब तक मनुष्य उस वस्तु को अपनी बनाकर नहीं छोड़ता, अथवा अपने हृदय में यह विचार नहीं दृढ़ कर लेता कि वह वस्तु मेरी है, तब तक उसे संतोष नहीं होता। ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, प्रेम से ममत्व। इन दोनों का साथ चोली-दामन का सा है। ये कभी पृथक् नहीं किए जा सकते।

शाम का समय था। रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थीं। उनके पास ही देवरानी भी बैठी थी। दोनों बच्चे छत पर दौड़कर खेल रहे थे; रामेश्वरी उनके खेलों को देख रही थी। इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था। हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले हुए उनके नन्हे-नन्हे मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उनके हृदय को शीतल कर रही थीं। सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा। वह खिलखिलाती हुई दौड़कर रामेश्वरी की गोद में जा गिरी। उसके पीछे-पीछे मनोहर भी दौड़ा हुआ आया और वह भी ताई की गोद में जा गिरा। रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गईं। उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है, जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो। उन्होंने बड़ी सहिष्णुता से दोनों को प्यार किया। उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता, तो उसे यही विश्वास होता कि रामेश्वरी ही उन बच्चों की माता है।

दोनों बच्चे बड़ी देर तक उनकी गोद में खेलते रहे। सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई।

"मनोहर, ले रेलगाड़ी!" कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए। उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे। रामजीदास ने पहले दोनों को प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे।



शब्द-कलश

निस्सतांन – संतान रहित (Childless)
आँख में काँटे की तरह खटकना – बहुत बुरा लगना (To be unpleasant)
ममत्व – अपनापन (Affection)
सहिष्णुता – सहनशीलता (Tolerance)

इधर रामेश्वरी की नींद-सी टूटी। पति को बच्चों में मगन देखकर उनकी भवें तन गईं। बच्चों के प्रति फिर वही घृणा और द्वेष का भाव जाग उठा।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुसकराकर बोले, "आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं। इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी उनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है।"

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी। उन्हें अपनी कमज़ोरी पर बड़ा दुख हुआ। केवल दुख ही नहीं, अपने ऊपर क्रोध भी आया। वह दुख और क्रोध पति के उस वाक्य से और भी बढ़ गया। उनकी कमज़ोरी पति पर प्रकट हो गई, यह बात उनके लिए असह्य हो उठी।

रामजीदास बोले, "इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है। यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो तुम्हें ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे। मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो।"

यह बात बाबू साहब ने नितांत शुद्ध हृदय से कही थी, परंतु रामेश्वरी को इसमें व्यंग्य की तीक्ष्ण गंध मालूम हुई। उन्होंने कुढ़कर मन में कहा, 'इन्हें मौत भी नहीं आती। मर जाएँ, पाप कटे। आठों पहर आँखों के सामने रहने से प्यार करने को जी ललचा ही उठता है। इनके मारे कलेजा और भी जला करता है।'

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा, "अब झेंपने से क्या लाभ? अपने प्रेम को छिपाना व्यर्थ है। छिपाने की आवश्यकता भी नहीं।"

रामेश्वरी जल-भुनकर बोली, "मुझे क्या पड़ी है, जो प्रेम करूँगी? तुम्हीं को मुबारक रहें। निगोड़े आप ही गोद में आ-आकर घुसते हैं। एक घर में रहने से कभी-कभी हँसना-बोलना ही पड़ता है। अभी परसों ज़रा यों ही ढकेलदिया, उसपर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं। संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न यों चैन।"

बाबू साहब को पत्नी के वाक्य सुनकर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कर्कश स्वर में कहा, "न जाने कैसे हृदय की स्त्री है। अभी अच्छी-खासी बैठी बच्चों को प्यार कर रही थी। मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी। अपनी इच्छा चाहे जो करे, पर कहने से बल्लियों उछलती है। न जाने मेरी बातों में कौन-सा विष घुला रहता है। यदि मेरा कहना ही बुरा मालूम होता है तो न कहा करूँगा। इतना याद रखो कि अब जो कभी उनके विषय में निगोड़े-सिगोड़े अपशब्द निकाले तो अच्छा न होगा। तुमसे मुझे बच्चे कहीं प्यारे हैं।"

रामेश्वरी ने इसका उत्तर न दिया। अपने क्षोभ तथा क्रोध को वे आँखों द्वारा निकालने लगीं।



शब्द-कलश

- भवें तनना – क्रोध आना (Get angry)
- असह्य – जिसे सहन न किया जा सके (Intolerable)
- वृथा – बेकार (Idle)
- जी ललचाना – मन करना (Temptation)
- कलेजा जलना – कुढ़ना (Grumble)
- निगोड़ा – दुष्ट (Wretch)
- गिरगिट की तरह रंग बदलना – एक रंग-ढंग पर न रहना (To be two faced)
- अपशब्द – गाली-गलौज (Abusive words)
- क्षोभ – दुख (Annoyance)

जैसे–जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे-वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी। प्राय: बच्चों के पीछे पति-पत्नी में कहा-सुनी हो जाती थी और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे। जब रामेश्वरी ने यह देखा कि बच्चों के कारण वे पति की नज़रों से गिरती जा रही हैं, तब उनके हृदय में बड़ा तूफ़ान उठा। उन्होंने सोचा, "पराए बच्चों के पीछे ये मुझसे प्रेम कम करते जाते हैं। मुझे हर समय बुरा-भला कहा करते हैं। इनके लिए बच्चे ही सब कुछ हैं। मैं कुछ भी नहीं। दुनिया मरती जाती है, पर इन दोनों को मौत नहीं। ये पैदा होते ही क्यों न मर गए! न होते, न मुझे ये दिन देखने पड़ते! जिस दिन ये मरेंगे, उस दिन घी के चिराग जलाऊँगी। इन्होंने ही मेरा घर सत्यानाश कर रखा है।"

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए। एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थीं। उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे। विचार और कुछ नहीं, वही अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग इत्यादि। कुछ देर बाद उनके विचार स्वयं उन्हें कष्टदायक प्रतीत होने लगे, तब वे अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए उठकर टहलने लगीं।

वह टहल रही थीं कि मनोहर दौड़ता हुआ आया। मनोहर को देखकर भृकुटी चढ़ गई और वे छत की चहारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं।

संध्या का समय था। आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रही थीं। मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे तो क्या ही आनंद आए। देर तक पतंग गिरने की आशा के बाद वह दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला, "ताई, हमें पतंग मँगा दो।"

रामेश्वरी ने झिड़ककर कहा, "चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर।"

मनोहर कुछ अप्रतिभ होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा। थोड़ी देर बाद उससे फिर न रहा गया। इस बार उसने बड़े लाड़ में आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा, "ताई, पतंग मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे।"

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा पसीज गया। कुछ देर तक उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखती रहीं। फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन-ही-मन कहा, "यदि यह मेरा पुत्र होता, तो आज मुझ-सी भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती। कितना सुंदर है, और प्यारी-प्यारी बातें करता है! जी चाहता है कि उठाकर छाती से लगा लूँ।"

यह सोचकर वे उसके सिर पर हाथ फेरने वाली ही थीं, इतने में मनोहर उन्हें मौन देखकर बोला, "तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी तो ताऊ जी से कहकर पिटवाएँगे।"

यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी बड़ी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुख क्रोध के मारे लाल हो गया। वे उसे झिड़ककर बोलीं, "जा, कह दे अपने ताऊ से। देखूँ, वे मेरा क्या कर लेंगे!"

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट गया और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा।



शब्द-कलश

अप्रतिभ – उदास (Sad)
कलेजा पसीजना – दया करना (To show mercy)
सतृष्ण – ललचाई हुई, प्यास से भरी (Greedy)

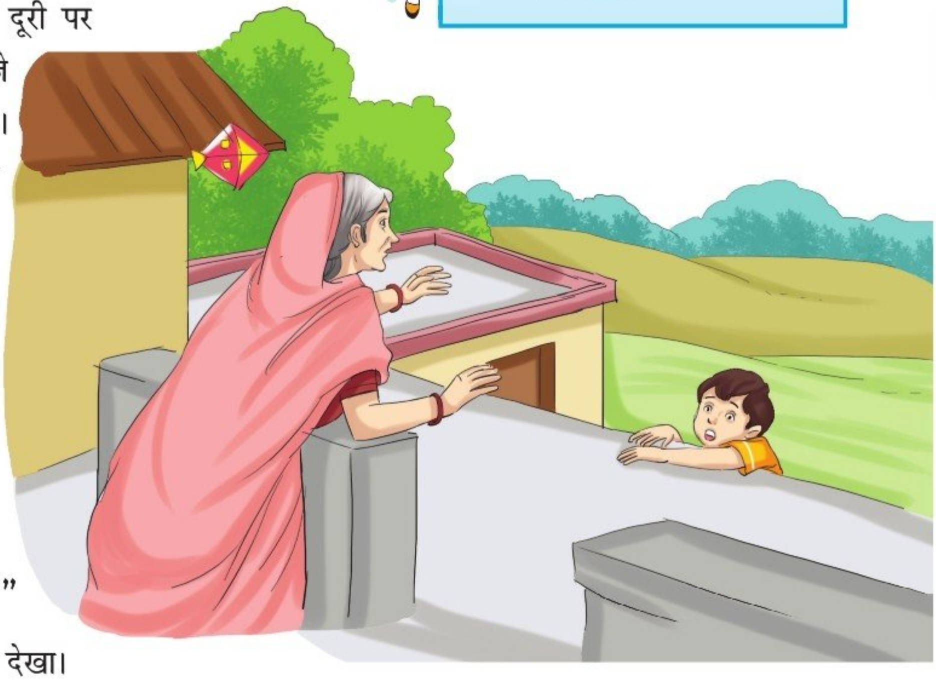
इधर रामेश्वरी ने सोचा, "यह सब ताऊ जी के दुलार का फल है कि बालिश्त-भर का लड़का मुझे धमकाता है। ईश्वर करे, इस दुलार पर बिजली टूटे।"

उसी समय आकाश में एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई। छत के चारों ओर चहारदीवारी थी। जहाँ रामेश्वरी खड़ी थीं, केवल वहाँ पर एक द्वार था जिससे छज्जे पर आ-जा सकते थे। रामेश्वरी इस द्वार पर सटी हुई खड़ी थीं। मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा। पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला। रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं। मनोहर उसके पास से होकर छज्जे पर चला गया और उनसे दो फुट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग को देखने लगा। पतंग छज्जे से होती हुई नीचे, घर के आँगन में जा गिरी। एक पैर छज्जे की मुँडेर पर रखकर मनोहर नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देख प्रसन्नता के मारे फूला न समाया। वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँडेर से उसका पैर फिसल गया। वह नीचे की ओर चला। नीचे जाते-जाते उसके दोनों हाथों में मुँडेर आ गई। वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया, "ताई!"



सोचो-सोचो!

क्या रामेश्वरी ने मनोहर को बचाया होगा?



रामेश्वरी ने धड़कते हुए कलेजे से घटना को देखा। उनके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा के लिए पाप कट जाएगा। यही सोचकर वे क्षणभर के लिए रुकीं। उधर मनोहर के हाथ मुँडेर से फिसलने लगे। वह अत्यंत भयभीत तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया, "अरी ताई!"

रामेश्वरी की आँखों से मनोहर की आँखें आ मिलीं। मनोहर की यह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह को आ गया। उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। उसका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा भी नहीं था कि मनोहर के हाथ से मुँडेर छूट गई। वह नीचे आ गिरा। रामेश्वरी चीख मारकर छज्जे पर गिर पड़ीं।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार में बेहोश पड़ी रहीं। कभी-कभी वे ज़ोर से चिल्ला उठतीं और कहतीं, "देखो, देखो, वह गिरा जा रहा है—उसे बचाओ, दौड़ो, मेरे मनोहर को बचा लो।" कभी वे कहतीं, "बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं



शब्द-कलश

कलेजा मुँह को आ गया – बेचैन हो जाना (Get restless)

बचाया। हाँ, हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी, मैंने देर कर दी।" इसी प्रकार के प्रलाप वे किया करतीं। मनोहर की टाँग उखड़ गई थी। टाँग बिठा दी गई। वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ। अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा, "मनोहर कैसा है?" रामजीदास ने उत्तर दिया, "अच्छा है।"

रामेश्वरी–"उसे मेरे पास लाओ।"

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया। रामेश्वरी ने उसे प्यार से हृदय से लगाया। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई। हिचकियों से गला रुँध गया।

रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं। अब वे मनोहर की बहन चुन्नी से भी द्‌वेष और घृणा नहीं करती और मनोहर तो अब उनका प्राणाधार हो गया है। उसके बिना उन्हें एक क्षण भी कल नहीं पड़ती।

–विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'



रोचक तथ्य

हमारे देश के अहमदाबाद शहर के एक पतंगबाज ने एक ही डोर से 300 पतंगों को उड़ाने का करिश्मा कर दिखाया है।



शब्द-कलश

प्रलाप – व्यथा सुनाना (Delirium)
प्राणाधार – जीवन का सहारा (Life support)



लेखक-परिचय

कथाकार विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का जन्म अंबाला छावनी में 1891 ई० में हुआ। उन्होंने लगभग 300 कहानियाँ लिखी हैं। इनकी गणना प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के समकक्ष की जाती है।

इनकी कहानी 'ताई' हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इनकी कहानियाँ उस समय की प्रसिद्‌ध पत्रिकाओं; जैसे– 'सरस्वती', 'माधुरी' और 'सुधा' इत्यादि में प्रकाशित होती रहती थीं।

इनकी मुख्य साहित्यिक कृतियाँ हैं– माँ, भिखारिणी (उपन्यास); इनकी खोटा बेटा, पेरिस की नर्तकी, साध की होली, चित्रशाला, मणिमाला, कल्लोल (कहानी-संग्रह) आदि। सन् 1945 में 'कौशिक' जी का निधन हो गया।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) बालक ने ताऊ जी से क्या लाने को कहा?

☐ स्कूटर ☐ कार ☐ रेलगाड़ी ☐ बस

(ख) रामेश्वरी के मन में देवर के बच्चों के प्रति कैसा भाव था?

☐ घृणा व क्रोध का ☐ घृणा व द्वेष का ☐ प्यार व सम्मान का ☐ क्रोध व लोभ का

(ग) रामेश्वरी को किसका दुख था?

☐ संतानहीनता का ☐ अपमान का ☐ निर्धनता का ☐ पति से झगड़े का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) मनोहर रेलगाड़ी का क्या करना चाहता था?

(ख) मनोहर अपनी ताई को साथ क्यों नहीं ले जाना चाहता था?

(ग) बाबू रामजीदास क्या काम करते थे?

(घ) छत पर मनोहर अपनी ताई के पैरों में क्यों लिपट गया?

(ङ) एक हफ़्ते के बाद ज्वर से उठते ही रामेश्वरी ने सबसे पहले क्या पूछा?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) रामेश्वरी ने अपने बुरे व्यवहार का क्या कारण बताया?

....

....

(ख) बाबू रामजीदास ने संतान प्राप्ति के लिए पूजा-पाठ या व्रत जैसे उपाय क्यों नहीं किए?

....

....

(ग) बाबू रामजीदास को स्वयं की संतान न होने की चिंता क्यों नहीं थी?

....

....

(घ) ताई को अचानक बच्चों पर प्रेम क्यों आ गया?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) "कभी-कभी तो तुम्हारा व्यवहार बिलकुल ही अमानुषिक हो उठता है।"

बाबू रामजीदास रामेश्वरी के किस व्यवहार को अमानुषिक कह रहे हैं?

(ख) रामेश्वरी अपने पति बाबू रामजीदास की नज़रों में क्यों गिरती जा रही थी?

(ग) रामेश्वरी बच्चों के मरने पर घी के चिराग जलाने की क्यों सोच रही थी?

(घ) मनोहर को अपनी आँखों के सामने छत से गिरता देखने के बाद रामेश्वरी की क्या अवस्था हुई? यह अवस्था रामेश्वरी के कौन-से गुणों को उजागर करती है?

3. किसने-किससे तथा क्यों कहा?

(क) "जो प्यार करें तो ले जाएगा।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(ख) "हमारे तो भाग्य ही फूटे हैं।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(ग) "ताई हमें पतंग मँगा दो।"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....

....

(घ) "देखूँ वे मेरा क्या कर लेंगे?"

किसने कहा? – .... किससे कहा? – ....

क्यों कहा? – ....
....

4. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) बालक ताई के .... व्यवहार को तुरंत ताड़ गया।

(ख) बाबू रामजी दास ने उसे .... में उठा लिया।

(ग) इसी को .... पर लादना कहते हैं।

(घ) बाबू रामजीदास .... आदमी हैं।

(ङ) अपने प्रेम को छिपाना .... है।

(च) इनके मारे .... और भी जला जाता है।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण तथा विशेष्य (जोड़ों) पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) वह किसी लंबी समुद्री-यात्रा पर निकल गए।

☐ किसी लंबी ☐ वह किसी ☐ यात्रा पर ☐ लंबी समुद्री यात्रा

(ख) निराकार भाप ऊपर जाकर साकार बादल में बदल जाती है।

☐ निराकार भाप ☐ ऊपर जाकर ☐ बादलों में ☐ जाकर साकार

(ग) ऊँचे पहाड़ों या घने जंगलों तक मानसून पहुँचता है।

☐ पहाड़ों या घने ☐ घने जंगलों ☐ मानसून पहुँचता ☐ पहुँचता है

(घ) ऊँची अटारी पर से नीचे उतरो।

☐ अटारी पर ☐ ऊँची अटारी ☐ पर से ☐ नीचे उतरो

2. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए–

(क) हम प्रदूषण फैलाकर अपनी धरती को विकृत कर रहे हैं। (संयुक्त वाक्य में)

....

(ख) नदियों को साफ़ कर रहे हैं और रेगिस्तान में पानी ला रहे हैं। (सरल वाक्य में)

....

(ग) हवा कितनी स्वच्छ और मादक लग रही है। (मिश्र वाक्य में)

....

(घ) वह एक ऐसे ग्रह पर निवास करता है जिस पर पानी का आधिपत्य है। (सरल वाक्य में)

....

(ङ) जैसे ही घने जंगलों तक मानसून पहुँचता है, वैसे ही वह ठंडक पाकर ठहर जाता है। (संयुक्त वाक्य में)

....

जो वाक्यांश सामान्य अर्थ को प्रकट न करके किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, वे 'मुहावरा' कहलाते हैं; जैसे– अँधेरे में रखना, तारे गिनना आदि।

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) कलेजा जलना – ....

वाक्य – ....

(ख) बल्लियों उछलना – ....

वाक्य – ....

(ग) गिरगिट की तरह रंग बदलना – ....

वाक्य – ....

(घ) कलेजा मुँह को आना – ....

वाक्य – ....

(ङ) आँखों का तारा – ....

वाक्य – ....

जिस वाक्य में कर्ता स्वयं काम न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वहाँ 'प्रेरणार्थक क्रिया' होती है; जैसे– माता जी ने नौकर से सब्ज़ी मँगवाई।

4. निम्नलिखित क्रिया शब्दों की प्रेरणार्थक क्रिया लिखिए–

(क) पीटना – पिटवाना

(ख) लिखना – ....

(ग) उड़ना – ....

(घ) चलना – ....

(ङ) देखना – ....

(च) कहना – ....

(छ) रखना – ....

(ज) करना – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

"घृणा से प्रेम बड़ा होता है।"– स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)

1. मनोहर के मन में ताई की अपेक्षा ताऊ जी के लिए अधिक प्यार क्यों था? सोचकर बताइए।

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति) (Writing Skills)

2. कहानी के आधार पर निम्नलिखित पात्रों की एक-एक चारित्रिक विशेषता लिखिए–

   बाबू रामजीदास – ....

   रामेश्वरी – ....

   मनोहर – ....

(मेरी सहभागिता) (My Participation)

3. समझकर रिश्ता बताइए–

   (क) आपके पिता जी की बहन के पति आपके क्या लगे? – ....

   (ख) आपके पिता जी की माता जी के बेटे आपके क्या लगे? – ....

   (ग) आपकी माता जी की बहन के पति आपके क्या लगे? – ....

   (घ) आपके पिता जी की भाभी के पति आपके क्या लगे? – ....

   (ङ) आपके भाई के पिता जी की बेटी आपकी क्या लगी? – ....

मेरी परियोजना (Project Work)

1. अपने परिवार के लोगों के चित्र, नाम, शिक्षा, गुण व उपलब्धियाँ लिखकर एक स्क्रैप बुक बनाइए।
2. अपने सहपाठियों के साथ मिलकर संयुक्त परिवार और एकल परिवार के फ़ायदे व नुकसान एक परियोजना के माध्यम से दर्शाइए।

11 धूपबत्ती : बुझी-जली

प्रस्तुत पाठ में बताया गया कि यदि हम थोड़ा झुक जाएँ या विनम्र रहें तो कुछ भी पाना असंभव नहीं है। आइए, पाठ पढ़ने से पूर्व विनम्रता पर आधारित प्रसिद्ध व्यक्तियों के कथन पढ़ें–

- हमें थोड़ा विनम्र रहना चाहिए; हम यह सोचे कि शायद सत्य पूर्णरूप से हमारे साथ न हो। - जवाहरलाल नेहरू
- सबसे दुखद चीज़ जिसकी मैं कल्पना कर सकता हूँ, वह है विलासिता का आदी होना। - चार्ली चैपलिन
- संकट और नुकसान से गुज़रने के बाद ही मनुष्य नम्र और बुद्धिमान बनता है। – बेंजामिन फ्रैंकलिन
- अपने आप को कम सोचना नहीं बल्कि अपने बारे में कम सोचना नम्रता है। – सी०एस० लुविस
- अपना सही आंकलन करना ही नम्रता है। – चार्ल्स स्पर्जन
- अनिश्चय नम्रता का प्रतीक है और नम्रता कुछ सीखने की तत्परता की क्षमता मात्र है। – चार्ली शीन

विचार-मंथन



भीनी सुगंध बिखेरती धूपबत्ती को देखकर आपके मन में कैसे विचार आते हैं?

पठन

अपनी कोठरी में आते ही देखा कि कल सुबह की धूपबत्ती, जो पूरी तरह जली नहीं थीं, कुछ जलकर बुझ गई थी; वह अब भी ज्यों-की-त्यों खड़ी है। मुझे वह सिर-जली ऐसी लगी कि जैसे कोई मनुष्य हो, थोड़े-बहुत ज्ञान से जिसका बौद्धिक जागरण तो हो गया हो, पर मानसिक विकास न हुआ हो और वह उस बौद्धिक जागरण को अपना संपूर्ण विकास मानकर अहंकार में उफना फिरता हो।

मेरा मन दया से भर गया और मैंने उस धूपबत्ती को बिना उठाए ही फिर से जलाने का निश्चय कर लिया। दीयासलाई जलकर बुझ गई, पर धूपबत्ती न जली। मैंने दीयासलाई की दूसरी सींक जलाई और उसे उसके दाहिनी ओर लगाया, पर धूपबत्ती न जली। मैंने तीसरी दियासलाई जलाई और उसे उसके बाईं ओर लगाया, पर वह भी जलकर बुझ गई।

धूपबत्ती अब भी बिना जली, पहले जैसी ही सिर-जली खड़ी थी। मेरे लिए अब कोई मार्ग न था कि उसे खड़ी रहते जला दूँ। मैंने उसे उसके स्थान से उखाड़ दिया और उसे झुकाकर चौथी दीयासलाई जलाई। अरे साहब, वह



शब्द-कलश

बौद्धिक जागरण – बुद्धि का जागना (Intellectual awakening)

दियासलाई से छूते ही जल उठी। दीयासलाई में अब भी इतना दम था कि तैयार हों तो वह चार-पाँच धूपबत्तियाँ और जला दे।



जलती धूपबत्ती ने अपनी सुगंध से कोठरी को भर दिया। यह काम समाप्त हुआ, तो बुद्धि ने अपनी कलाबाज़ी दिखाई। तीन दियासलाइयाँ पूरी तरह जलकर बुझ गईं पर धूपबत्ती न जली और एक दीयासलाई के स्पर्शमात्र से वह भभक उठी, यह क्या बात है?

मन ने कहा, "कोई बात तो है यह, प्रश्न तो यह है कि क्या बात है यह?"

जब तक तीन दीयासलाइयाँ जलकर बुझीं, धूपबत्ती खड़ी थी और जब वह चौथी को छूते ही जल उठी, तो झुकी हुई थी।

लगता है, इस अनुभव में मेरे प्रश्न का उत्तर आ गया है। धूपबत्ती खड़ी हो या तिरछी, उसमें जलने की शक्ति बराबर ही है, पर खड़ी हुई धूपबत्ती दीयासलाई की ज्वाला को ग्रहण करने में असमर्थ रहती है और तिरछी धूपबत्ती उसे सुगमता से ग्रहण कर लेती है। क्योंकि झुकी हुई धूपबत्ती को दियासलाई अपनी लौ के पूरे घेरे में ले पाती है जबकि सीधी खड़ी को नहीं।

तो यह निकली आ रही है बात में से बात कि किसी से कुछ लेना हो, तो झुकना आवश्यक है। साफ़-साफ़ यों कि पाने के लिए नम्र होना आवश्यक है, एक लोकोक्ति है–'बेटा बनकर सबने खाया, बाप बनकर किसी ने नहीं।' यह बेटा बनना नम्रता ही तो है।

याद आ रहा है संस्कृत का एक श्लोक, जिसमें विनय को सुख की कुंजी बताया गया है। भाव है–विद्या से विनय, विनय से पात्रता (पाने की योग्यता), पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है। इस तरह पात्रता का मूल है विनय–नम्रता।

एक बार काशी जाकर पूज्य मदनमोहन मालवीय जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, बातों-ही-बातों में उन्होंने कहा था, "देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है अपनी खुली थैली लिए, पर कमी उन हाथों की है; जिनमें वह अपनी भेंट दे सके।" इस तरह देनेवाले से बढ़कर लेनेवाले की पात्रता है। और बंबई मेल के उस थर्डक्लास कंपार्टमेंट में उस दिन पूज्य मालवीय जी के संदेश का परीक्षण कितना सफल रहा था।

बंबई मेल का हर डिब्बा करीब-करीब 'एयरटाइट' था; बस खाली था एक डिब्बा, पर उसमें चढ़ना शेर की दाढ़ से गोश्त निकालना था। स्टेशन के आते ही उसकी बंद खिड़की से एक रोबीले पेशावरी पठान का चेहरा बाहर

शब्द-कलश

कलाबाज़ी – चतुराई (Finesse)	लोकोक्ति – कहावत (Proverb)
स्पर्शमात्र – छूने भर से ही (Just touch)	पात्रता – पाने की योग्यता (Eligiblity)
सुगमता – सरलता (Ease)	परीक्षण – जाँच (Test)

निकल आया। खिड़की के बाहर हम सात मुसाफ़िर थे। खान और फ़ौजी उस युग के शेर-साँप थे, उन्हें लाँघना– 'कठिन क्या असंभव ही था।'



खान ने मुसाफ़िरों को देखा और पूरे रौब से कहा, "खिड़की नहीं खुलेगी।"

हम सबने समझ लिया कि ठीक यह ही है कि खिड़की नहीं खुलेगी, तो हम सात मुसाफ़िरों में से पाँच तो उसी क्षण दूसरे डिब्बे की ओर भाग निकले। छठे ने सामने से आते चैकर से शिकायत की, "जनाब, ये हज़रत पूरा डिब्बा घेरे बैठे हैं और हमें चढ़ने नहीं देते।"

चैकर महोदय ने अपनी नई यूनिफार्म के रौब में ज़रा डाँट के स्वर में खान से कहा, "आप दूसरे मुसाफ़िरों को चढ़ने से नहीं रोक सकते, खोलिए खिड़की।"

खान ने सचमुच खिड़की खोल दी और चैकर की ओर मुसकराते हुए कहा, "ओ तुम बैठाएगा, तुम बैठाएगा इशको? बैठाओ। जब गाड़ी चलेगा और हम इशको बाहर फेंकेगा, तो तुम झंदी हिलाना।"

चैकर तो खिसका ही, वे मुसाफ़िर महाशय भी नौ दो ग्यारह हो गए।

मैं अब भी अपनी जगह खड़ा था, अपनी अटैची हाथ में लटकाए। खान ने मुझे देखा, मैंने खान को। उसने क्या सोचा, मैं नहीं जानता; पर मैंने सोचा, "मालवीय जी महाराज का वचन है कि हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, तो क्या यह खान भी दाता है?"

तभी खान ने मुझसे कहा, "तुम नहीं गया?"

मैंने संक्षेप में कहा, "नहीं, खान साहब!"

"क्यों, गाड़ी में नहीं चढ़ेगा?"

"चढूँगा, अगर आप प्यार से चढ़ाएँगे।"

"क्यों, दूसरे डिब्बे में नहीं चढ़ेगा?"



"खान साहब, आप एक बहादुर पठान हैं और बहादुर आदमी का दिल बहुत बड़ा होता है। उसमें ही जगह न मिले, तो फिर कहाँ जगह मिलेगी?"



शब्द-कलश

मुसाफ़िर – यात्री (Traveller)
नौ-दो ग्यारह हो जाना – भाग जाना (To slip quietly away)

"तुम डरता नहीं, हम तुम्हें नीचे फेंक देगा!"

"नहीं खान साहब, बहादुर आदमी के पंजे सख्त होते हैं, दिल मुलायम होता है। आप मुझे नीचे नहीं फेंक सकते।"

खान ने कुछ सोचा कि तभी गार्ड की सीटी बजी और हरी झंडी हिली। खान ने खिड़की खोली और मुझे बुलाया। मैं झपटकर खिड़की पर पहुँचा कि खान ने सहारा देकर मुझे भीतर ले लिया।



सोचो-सोचो!

अगर गार्ड की सीटी बजने तथा हरी झंडी हिलने पर भी पठान लेखक को डिब्बे में न चढ़ने देता, तो क्या होता?

अट्ठारह आदमियों के बैठने लायक उस छोटे-से डिब्बे में खान था, उसकी बीवी थी और दो बच्चे थे। सबके बिस्तर बिछे थे। मैंने खान की बीवी को सलाम किया और खान को धन्यवाद देकर दूसरी तरफ़ बैठ गया। कुछ देर बाद धीरे-से खान मेरे पास आया और उसने मुझे दो बहुत बढ़िया सेब दिए। मैंने सोचा, "मालवीय जी का कथन सत्य है कि देश के हर द्वार पर एक दाता खड़ा है, पर कमी उन हाथों की है जिनमें वह अपनी भेंट दे सके।" मैंने भी अब अपने दाता की कसकर परीक्षा लेने का विचार किया।

दूसरे स्टेशन पर गाड़ी आकर रुकी तो समय की बात, स्टेशन मेरी तरफ़ था। तीन मुसाफ़िर बाहर थे–दो जवान, एक बूढ़ा। बिना खान की तरफ देखे ज़ोर से मैंने कहा, "बूढ़े बाबा, यह खान साहिब का डिब्बा है। उन्होंने मेहरबानी करके मुझे बैठने की जगह दे दी है। वह जगह मैं तुम्हें दे दूँगा और खुद खड़ा रहूँगा। तुम भीतर आ जाओ।" उन दोनों जवानों से मैंने किसी और डिब्बे में चले जाने को कहा। बूढ़े को भीतर ले अपनी जगह बैठा दिया और मैं दीवार से लगकर खड़ा-खड़ा अपनी पुस्तक पढ़ने लगा। कोई बीस मिनट बाद खान ने पूछा, "तुम क्यों खड़ा है, मेरे भाई?"

सरलता से मैंने कहा, "खान साहब, आपने मेहरबानी करके जो जगह मुझे दी थी, वह मैंने बूढ़े बाबा को दे दी। लेकिन मुझे कोई दिक्कत नहीं है, आप आराम से लेटिए।" खान ने कहा, "नहीं, तुम भी बैठो।" खान को धन्यवाद देकर मैं बैठ गया।

दूसरे स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो मैंने एक स्त्री और उसके बालक को अपनी जगह बैठा दिया और खड़ा हो गया। कुछ देर बाद खान की बीवी ने खान के कान में कुछ कहा और खान ने मुझे फिर बैठा दिया।

अब दोपहर भर गई थी। सोने के लिए करवट लेते-लेते खान ने कहा–"तुम चाएगा तो किसी को बैठाएगा, पर तुम ज़रूर बैठेगा, हम सोता है।"

और खान जब सोकर उठा तो हम बाहर थे। खान देखकर हँसा और बोला, "सरकार तुमको रोज़ बौंबे मेल में रखे तो बौत मुसाफ़िर को आराम होगा।"

मैंने कहा, "पर खान साहब, आपको भी मेरे साथ रहना पड़ेगा नहीं तो मुझे खाली डिब्बा कहाँ मिलेगा?" सभी जोर से हँस पड़े।

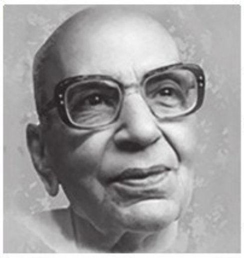
शाम को सात बजे मैं अपने स्टेशन पर उतरा, तो खान ने मुझसे हाथ मिलाया और उसकी बीवी ने मुझे सलाम किया।

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'



रोचक तथ्य

प्रथम भारतीय रेल 16 अप्रैल 1853 बोरीबंदर/मुंबई से ठाणे के बीच चलाई गई, जिसकी दूरी 34 किलोमीटर थी। इसमें तेरह डिब्बे थे।



लेखक-परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 21 मई, 1906 ई॰ को सहारनपुर जनपद के देवबन्द नामक कस्बे में हुआ था। घर की आर्थिक परिस्थितियों के प्रतिकूल होने के कारण 'प्रभाकर' जी की प्रारम्भिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाई। इन्होंने स्वाध्याय से ही हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया।

'प्रभाकर' जी उदार, राष्ट्रवादी तथा मानवतावादी विचारधारा के व्यक्ति थे। हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र, निबंधकारों में प्रभाकर जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका निधन 9 मई, 1995 को हो गया था। इनकी प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ–जिंदगी मुसकाई, माटी हो गई सोना, दीप जले शंख बजे आदि हैं।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) किसने सुगंध से कोठरी को भर दिया?

☐ अगरबत्ती ने ☐ धूपबत्ती ने ☐ सेंट ने ☐ कपूर ने

(ख) सुख की कुंजी किसे बताया गया है?

☐ संपन्नता को ☐ विनय को ☐ सौभाग्य को ☐ प्रज्ञा को

(ग) खान ने लेखक को खाने की क्या चीज़ दी?

☐ बादाम ☐ खजूर ☐ केले ☐ सेब

(घ) किस ट्रेन का डिब्बा 'एयरटाइट' था?

☐ कानपुर मेल ☐ बंबई मेल ☐ दिल्ली मेल ☐ झाँसी मेल

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) अपनी कोठरी में आते ही लेखक ने क्या देखा?

(ख) लेखक ने आधी जली धूपबत्ती को देखकर क्या निश्चय किया?

(ग) लेखक को काशी में किसके दर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ?

(घ) छठे आदमी ने चैकर से क्या शिकायत की?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) "मधुर वचन से सभी को वश में किया जा सकता है।"– यह कथन कहाँ तक सही है? पाठ के आधार पर बताइए।

....

....

(ख) विनय सुख की कुंजी किस प्रकार है?

....

....

(ग) चौथी बार 'धूपबत्ती जलने' के प्रसंग में लेखक ने क्या सिद्ध किया है?

....

....

(घ) लेखक ने मालवीय जी से क्या सीखा?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) मुंबई मेल के एक डिब्बे में चढ़ना शेर की दाढ़ से गोश्त निकालने जैसा क्यों था?

(ख) कहानी में पठान यात्री लेखक को ट्रेन से बाहर नहीं रोक सका। इससे कठोर दिल वाले पठान यात्री की कौन-सी विशेषता उभरकर सामने आती है?

(ग) "पाने के लिए नम्र होना आवश्यक है।"– इस तथ्य को कहानी में आए उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

(घ) मालवीय जी द्वारा दिए गए संदेश का परीक्षण लेखक ने कब और कैसे किया?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) मेरा मन .... से भर गया।

(ख) खिड़की के बाहर हम .... मुसाफ़िर थे।

(ग) .... भी नौ दो ग्यारह हो गए।

(घ) खान को .... देकर मैं बैठ गया।

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) जलती धूपबत्ती ने कोठरी को सुगंध से भर दिया। ....

(ख) पहली दीयासिलाई से ही धूपबत्ती जल गई। ....

(ग) विनय को सुख की कुंजी बताया गया है। ....

(घ) लेखक एक बार काशी जाकर सरदार पटेल से मिला। ....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. पाठ में आए चार उपसर्ग-प्रत्यय युक्त शब्दों को छाँटकर लिखिए। उनके मूलशब्द भी लिखिए–

उपसर्ग वाले शब्द	मूलशब्द
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रत्यय वाले शब्द	मूलशब्द
....	....
....	....
....	....
....	....

2. किन्हीं चार लोकोक्तियों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

3. निम्नलिखित वाक्यों में उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए–

(क) हाय रे बेचारे ज्ञानदग्ध

....

(ख) बात हाथ आ गई पर बात अपने में इकली इकहरी बात ही तो नहीं है

....

(ग) मुंबई मेल का हर डिब्बा करीब करीब एयरटाइट था

....

(घ) तुम डरता नहीं हम तुमको नीचे फेंक देगा

....

तत्सम शब्द– वे शब्द जो संस्कृत भाषा के समान ही हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'तत्सम शब्द' कहते हैं; जैसे– अग्नि, हस्त आदि।

तद्‌भव शब्द– वे शब्द जो संस्कृत शब्दों का रूप बदलकर हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'तद्‌भव शब्द' कहते हैं; जैसे– आग, हाथ आदि।

4. निम्नलिखित तद्‌भव शब्दों के तत्सम रूप लिखिए–

(क) खुशबू – ....

(ख) हाथ – ....

(ग) सिर – ....

(घ) सुबह – ....

(ङ) काम – ....

(च) रात – ....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित गद्‌यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

विनम्रता एक ऐसा गुण है जिससे शांति स्थापित होती है। विनम्रता न केवल आपके व्यक्तित्व में निखार लाती है, बल्कि कई बार सफलता का कारण भी बनती है। विनम्रता के एवज में जो सम्मान मिलता है, उसका एक अलग महत्व है। मन की कोमलता और व्यवहार में विनम्रता एक बड़ी शक्ति है।

दुनिया में हर इंसान अगर विनम्र हो, तो यह दुनिया कितनी खूबसूरत होगी। लोग एक-दूसरे से ज़्यादा की माँग नहीं करेंगे, आपसी झगड़े कम होंगे, कंपनियों में आपस में ज़्यादा मुकाबले नहीं होंगे और देशों के बीच युद्‌ध कम होंगे। विनम्रता शब्द के कई अर्थ हैं, जैसे अहंकार या घमंड न करना और अपनी सफलता, योग्यता एवं धन-दौलत के बारे में शेखी न बघारना, वगैरह-वगैरह। विनम्रता का अर्थ– "अपनी सीमाओं के अंदर रहना" भी है। विनम्र व्यक्ति चालचलन के मामले में अपनी सीमाओं के अंदर ही रहता है। विनम्र व्यक्ति को हर कोई पसंद करता है। एक अंग्रेज़ कवि, जोसफ़ एडिसन ने लिखा है– "विनम्र होना सबसे बड़ी खूबसूरती है।"

सभी इनसानों में विनम्रता का गुण पैदाइशी नहीं होता। इसलिए हमें अपने अंदर इसे बढ़ाने के लिए प्रयास करने चाहिए।

(क) विनम्रता से क्या स्थापित होती है?

☐ अशांति ☐ अराजकता ☐ शांति ☐ हिंसा

(ख) विनम्रता किसका कारण बनती है?

☐ युद्‌ध का ☐ शांति का ☐ नरसंहार का ☐ सफलता का

(ग) व्यवहार में कौन-सा गुण एक बड़ी शक्ति है?

☐ विनम्रता ☐ नवीनता ☐ क्रूरता ☐ दक्षता

(घ) लोगों के विनम्र होने पर दुनिया कैसी बन जाएगी?

- [ ] शानदार
- [ ] अनोखी
- [ ] खूबसूरत
- [ ] विनम्र

(ङ) 'जोसेफ़ एडिसन' के अनुसार विनम्र होना क्या है?

- [ ] सबसे बड़ी दुविधा
- [ ] सबसे बड़ी खूबसूरती
- [ ] सबसे बड़ी सुविधा
- [ ] सबसे बड़ी बदसूरती

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

मीठे-मधुर-धैर्यपूर्ण वचन हमारे जीवन में किस प्रकार सहायक होते हैं?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



1. ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी से कुछ पाना है, तो उसके सामने झुकना या विनम्र व्यवहार करना आवश्यक है? सोचकर बताइए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)
2. थर्ड क्लास कंपार्टमेंट में बैठा पठान पहले तो एक भी यात्री को डिब्बे में नहीं बैठने दे रहा था। उसने लेखक के साथ अन्य बारह व्यक्तियों को कैसे बैठने दिया? पठान के इस हृदय-परिवर्तन का कारण क्या था? कक्षा में चर्चा कीजिए। (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)
3. अपने सहपाठियों के साथ 'अगरबत्ती' अथवा 'धूपबत्ती' के बनाने की प्रक्रिया जानकर उसे बनाने का प्रयास करें। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. हमारे देश में रेलवे विभाग की वर्तमान स्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
2. पुराने समय की भारतीय रेल और वर्तमान समय की भारतीय रेल प्रणाली में अंतर को एक प्रेज़ेंटेशन के माध्यम से दर्शाइए।
3. अपने सहपाठियों के साथ मिलकर 'भारतीय रेल' तथा 'मेट्रो ट्रेन' की कार्यप्रणाली को एक प्रोजेक्ट के माध्यम से समझाइए।

12 गिरिधर की कुंडलियाँ

प्रस्तुत पाठ में गिरिधर की कुंडलियाँ दी गई हैं। आइए, पाठ को पढ़ने से पूर्व कुंडलियों के विषय में कुछ जानें–

रोला एक सम मात्रिक छंद है। इसमें 24 मात्राएँ होती हैं तथा दोहा अर्धसम मात्रिक छंद है। यह दो पंक्ति का होता है, इसमें चार चरण माने जाते हैं। 'कुंडलियाँ' दोहा और रोला के संयोग से बना छंद है। दोहा के प्रथम एवं तृतीय चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

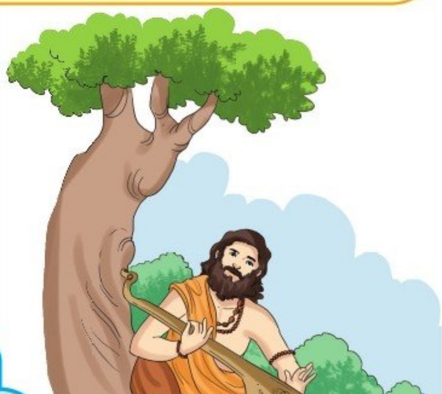
छंद के छह चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि कुंडलियों के पहले दो चरण दोहा तथा शेष चार चरण रोला के बने होते हैं। कुंडलियाँ छंद का प्रारंभ जिस शब्द या शब्द-समूह से होता है, उसका अंत भी उसी शब्द या शब्द-समूह से होता है।

विचार-मंथन

क्या कुंडलियों में भी दोहों के समान जीवन की सीख होती है?

पठन

दौलत पाय न कीजिए, सपनेहुँ अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाउँ न रहत निदान।।
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सबही की कीजै।।
कह गिरिधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसिदिन चारि, रहत सबहीं के दौलत।।



सोचो-सोचो!
मधुर वचन बोलने से क्या होता है?

शब्द-कलश

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दौलत	संपत्ति (Wealth)	लीजै	प्राप्त कर लीजिए (To get)
पाय	प्राप्त करके (Having received)	सुनाय	सुनाकर (To Listen)
अभिमान	घमंड (Pride)	कीजै	कीजिए (To do)
ठाउँ	स्थिर (Stable)	घट	कम (Less)
निदान	अंत में (In the end)	तौलत	तोलते हैं (To weigh)
जियत	जीवित रहते हुए (While alive)	पाहुन	मेहमान, अतिथि (Guest)
जस	यश (Fame)	सबहीं	सभी के पास (Everyone has)

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा-कोकिला, सबद सुनै सब कोय।।
सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भए अपावन।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के।।



बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ।।
ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित्त में खता न पावै।।
कह गिरिधर कविराय, यहै करू मन परतीती।
आगे को सुख समुझि, होय बीती सो बीती।।

–गिरिधर

रोचक तथ्य

गिरिधर की कुंडलियाँ अवधी और पंजाबी भाषा में हैं। जिसमें अधिकांश नीति विषयक हैं।

शब्द-कलश

- गुन – गुण (Quality)
- गाहक – ग्रहण करने वाले (Customer)
- न कोय – कोई भी नहीं (Nobody)
- कागा – कौआ (Crow)
- कोकिला – कोयल (Cuckoo)
- सबद – वाणी, बोली (Voice)
- सबै – सभी को (Every body)
- सुहावन – अच्छी लगती है (Nice)
- अपावन – अपवित्र (Unholy)
- ठाकुर मन के – मन के स्वामी (Master of mind)
- गुन – अच्छे गुण (Good qualities)
- बीती ताहि – जो बात (घटना) समाप्त हो गई (elapsed)
- बिसारि दे – भुला दे (Forgot)
- आगे की सुधि लेइ – इसमें आगे विचार करके आचरण (व्यवहार) करना चाहिए (Focus on future)
- जो बनि आवै – जो भी कुछ हो सके उसे (All possibilities)
- सहज में – सरलता से, आसानी से (Easily)
- ताही में – उसी में (In the same)
- चित देइ – मन लगाना चाहिए (Be interested in)
- बात जोई बनि आवै – जो भी बात बन सके (Whatever it may be)
- खता – दोष या चूक (Mistake)
- पावै – प्राप्त होने दो (Have received)
- करू – कीजिए (To do)
- मन परतीती – मन में विश्वास के साथ (Believed)
- आगे को – भविष्य का (आने वाले समय का) (In future)
- समुझि – समझकर (To understand)
- बीती सो बीती – जो बात (घटना) बीत गई (हो गई), सो हो गई (What has passed)



कवि-परिचय

अधिकांश विद्वानों के मतानुसार इनका जन्म 1717 ई० में माना जाता है। यह अत्यंत दयालु व्यक्ति थे। गिरिधर कविराय हिंदी के एक ऐसे बहुचर्चित कवि थे, जिनके द्वारा रचित की गई कुंडलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। गिरिधर कविराय ग्रंथावलि में 500 से अधिक कुंडलियाँ संकलित हैं।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) दौलत पाकर क्या नहीं करना चाहिए?

☐ अभिमान ☐ चिंतन ☐ परिश्रम ☐ स्वाध्याय

(ख) किसके बहुत गाहक होते हैं?

☐ गुण के ☐ निर्गुण के ☐ अवगुण के ☐ स्वगुण के

(ग) कवि के अनुसार किन दोनों का रंग एक है?

☐ बिल्ली और कुत्ते का ☐ बंदर और शेर का

☐ कौए और कोयल का ☐ चूहे और भालू का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) कवि तथा पाठ का नाम बताइए।

(ख) कवि ने जल को चंचल क्यों कहा है?

(ग) हमें जग में क्या प्राप्त करना चाहिए?

(घ) सबकी विनय करना क्यों ज़रूरी है?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) हमें कैसे वचन बोलने चाहिए?

....

....

(ख) कोयल सबको क्यों अच्छी लगती है?

....

....

(ग) धनी व्यक्ति को क्या नहीं करना चाहिए?

....

....

(घ) 'गुन के गाहक' से कवि का क्या आशय है?

....

....

(ङ) व्यक्ति कैसी वस्तु नहीं लेना चाहता और क्यों?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) "बीति ताहि बिसार दे" से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ख) कोयल और कौए की वाणी में क्या अंतर होता है?

(ग) क्या करने पर कोई भी व्यक्ति हमारी हँसी नहीं उड़ा सकेगा?

(घ) बीती बातों को भुलाने से क्या लाभ तथा क्या हानि है?

(ङ) कवि के अनुसार दौलत चार दिन की मेहमान क्यों होती है?

3. निम्नलिखित कुंडली की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा-कोकिला, सबद सुनै सब कोय।।
सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भए अपावन।।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के।।

प्रसंग – ....

....

....

व्याख्या – ....

....

....

....

4. निम्नलिखित अधूरी कुंडली को पूरा कीजिए–

बीति ताहि बिसारि दे, ... ।
.... चित्त देइ ।।
ताहि में चित्त देई, ... ।
.... न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय, ... ।
.... सो बीती ।।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) दौलत – ....

(ख) संसार – ....

(ग) अभिमान – ....

(घ) पाहुन – ....

2. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

(क) जल – ....

(ख) जग – ....

(ग) पाहुन – ....

(घ) गुन – ....

(ङ) कागा – ....

(च) कोकिला – ....

(छ) पावन – ....

(ज) कोय – ....

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के विलोम शब्दों का प्रयोग कर वाक्य दोबारा लिखिए–

(क) सदा सत्य की जीत होती है। – ....

(ख) नदी का जल चंचल है। – ....

(ग) गुणों के गाहक बहुत होते हैं। – ....

(घ) बीती बातें भुला देनी चाहिए। – ....

(ङ) आगे के सुखों को भुला देना चाहिए। – ....

(च) कल यहाँ बहुत अशांति थी। – ....

4. निम्नलिखित शब्दों के वर्ण-विच्छेद कीजिए–

(क) गिरिधर – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ख) तौलत – .... + ... + ... + ... + ... + ...

(ग) कोकिला – .... + ... + ... + ... + ... + ...

(घ) दुर्जन – .... + ... + ... + ... + ... + ... + ...

(ङ) बिसारि – .... + ... + ... + ... + ... + ...

(च) गाहक – .... + ... + ... + ... + ... + ...

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

आपके विचार से सच्ची शांति कैसे मिल सकती है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. "एक जैसा रूप-रंग होने पर भी किन्हीं दो वस्तुओं या प्राणियों के गुण अलग-अलग हो सकते हैं?" कौआ-कोयल के अतिरिक्त किसी अन्य उदाहरण द्वारा तर्क सिद्ध कीजिए।

2. "एक अवगुण, हज़ार गुणों पर भारी"– इस शीर्षक पर अपने शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए–

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

3. निम्नलिखित विषयों पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता अथवा भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए–

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

- दुख का कारण
- पद बड़ा या व्यक्ति

4. आपके अध्यापक/अध्यापिका पुस्तक के पृष्ठ संख्या 171 से एक प्रतिवेदन पढ़कर सुनाएँगे। उसे ध्यानपूर्वक सुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(मेरी श्रवण कुशलता)
(Listening Skills)

(क) क्रिकेट मैच किस-किसके बीच हुआ?

(ख) भारतीय महिला टीम की कैप्टन का नाम क्या था?

(ग) मैच किसने जीता?

(घ) पहले बैटिंग किस टीम ने की थी?

(ङ) बांग्लादेश ने कितने विकेट खोकर कितने रन बनाए?

मेरी परियोजना (Project Work)

1. पाठ में वर्णित कुंडलियों को सुर-लय-ताल के साथ कक्षा में एक साथ मिलकर गाइए।
2. सत्कर्म, विद्याधन, समय, मित्रता तथा मीठी वाणी भावों से संबंधित अन्य कवियों के दोहों को चार्ट पेपर पर सुंदर रंगों से लिखकर विद्यालय में लगाइए।

मेरा पिटारा

मुल्ला नसरुद्दीन के मज़ेदार किस्से

मुल्ला नसरुद्दीन का भाषण



एक बार मुल्ला नसरुद्दीन को भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। मुल्ला नसरुद्दीन समय से पहुँचे और स्टेज पर चढ़ गए, "क्या आप जानते हैं, मैं क्या बताने वाला हूँ? मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा।

"नहीं!" बैठे हुए लोगों ने जवाब दिया।

यह सुन मुल्ला नसरुद्दीन नाराज़ हो गए, "जिन लोगों को यह भी नहीं पता कि मैं क्या बोलने वाला हूँ, मेरी उनके सामने बोलने की कोई इच्छा नहीं है।" और ऐसा कहकर वे चले गए।

उपस्थित लोगों को थोड़ी शर्मिंदगी हुई और उन्होंने अगले दिन फिर से मुल्ला नसरुद्दीन को बुलावा भेजा।

इस बार भी मुल्ला ने वही प्रश्न दोहराया, "क्या आप जानते हैं, मैं क्या बताने वाला हूँ?"

"हाँ!", कोरस में उत्तर आया।

"बहुत अच्छे जब आप पहले से ही जानते हैं, तो भला मैं दोबारा बताकर आपका समय क्यों बर्बाद करूँ?", ऐसा कहते हुए मुल्ला नसरुद्दीन वहाँ से निकल गए।

अब लोग थोड़ा क्रोधित हो उठे और उन्होंने एक बार फिर मुल्ला नसरुद्दीन को आमंत्रित किया।

इस बार भी मुल्ला नसरुद्दीन ने वही प्रश्न किया, "क्या आप जानते हैं, मैं क्या बताने वाला हूँ?"

इस बार सभी ने पहले से योजना बना रखी थी इसलिए आधे लोगों ने 'हाँ' और आधे लोगों ने 'ना' में उत्तर दिया।

"ठीक है जो आधे लोग जानते हैं कि मैं क्या बताने वाला हूँ, वे बाकी के आधे लोगों को भी बता दें।"

फिर कभी किसी ने मुल्ला नसरुद्दीन को नहीं बुलाया।

जब मुल्ला नसरुद्दीन दानी बने



एक बार खबर फैली की मुल्ला नसरुद्दीन दानी बन गए हैं। जो भी सुनता उसे आश्चर्य होता क्योंकि सभी जानते थे कि मुल्ला नसरुद्दीन अपनी चीज़ों को लेकर कितने संजीदा हैं।

जब उनके परम मित्र ने यह खबर सुनी तो वे तुरंत मुल्ला नसरुद्दीन के पास पहुँचे।

मित्र : "मुल्ला नसरुद्दीन क्या तुम जानते हो दान देने का मतलब क्या है?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "हाँ, मुझे पता है।"

मित्र : "क्या तुम्हें पता है अगर तुम्हारे पास दो कारें हैं और किसी के पास एक भी नहीं तो तुम्हें अपनी एक कार देनी पड़ेगी।"

मुल्ला नसरुद्दीन : "हाँ, और मैं अपनी इच्छा से देने के लिए तैयार हूँ।"

मित्र : "अगर तुम्हारे पास दो बँगले हैं और किसी के पास एक भी नहीं तो तुम्हें अपना एक बँगला देना होगा?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "हाँ, मैं पूरी तरह से देने के लिए तैयार हूँ।"

मित्र : "और तुम जानते हो अगर तुम्हारे पास दो गधे हैं और किसी के पास एक भी नहीं तो तुम्हें अपना एक गधा देना पड़ेगा?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "नहीं, मैं इस बात से मतलब नहीं रखता, मैं नहीं दे सकता, मैं बिलकुल भी ऐसा नहीं कर सकता।"

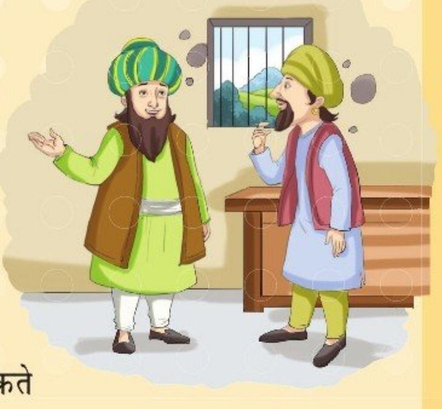
मित्र : "पर क्यों, यहाँ भी तो वही तर्क लागू होता है?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "क्योंकि मेरे पास कार और बँगले तो नहीं हैं, पर दो गधे ज़रूर हैं।"

मुल्ला नसरुद्दीन और पड़ोसी

एक पड़ोसी मुल्ला नसरुद्दीन के द्वार पर पहुँचा। मुल्ला नसरुद्दीन उससे मिलने बाहर निकले।

"मुल्ला नसरुद्दीन क्या तुम आज के लिए अपना गधा मुझे दे सकते हो, मुझे कुछ सामान दूसरे शहर पहुँचाना है?"



मुल्ला नसरुद्दीन उसे अपना गधा नहीं देना चाहते थे पर साफ़-साफ़ मना करने से पड़ोसी को ठेस पहुँचती इसलिए उन्होंने झूठ कह दिया, "मुझे माफ़ करना; मैंने तो आज सुबह ही अपना गधा किसी और को दे दिया है।"

मुल्ला नसरुद्दीन ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि अंदर से ढेंचूँ-ढेंचूँ की आवाज़ आने लगी।

"लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन, गधा तो अंदर बँधा चिल्ला रहा है।" पड़ोसी ने चौंकते हुए कहा।

"तुम किसपर यकीन करते हो।", मुल्ला बिना घबराए बोले, "गधे पर या अपने मुल्ला नसरुद्दीन पर?"

पड़ोसी चुपचाप वहाँ से वापस चला गया।

13 अहिंसा का व्रत

प्रस्तुत पाठ अहिंसा पर आधारित है। आइए, पाठ पढ़ने से पूर्व अहिंसा के बारे में जानें–

सामान्य अर्थ में हिंसा नहीं करना ही अहिंसा है। धर्म-ग्रंथों के अनुसार व्यापक अर्थ में इसका मतलब किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म एवं वाणी से कोई नुकसान नहीं पहुँचाना ही 'अहिंसा' है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है– 'अहिंसा परमो धर्मः' अर्थात अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है। वैश्विक स्तर पर थोरो, टॉलस्टॉय, लाओत्से, कन्फ्यूशियस जैसे अनेक अहिंसावादी विचारक रहे हैं।

जीवन 'अहिंसा' से ही चलता है। अगर अहिंसा न हो तो मनुष्य हिंसक पशुओं की तरह लड़कर खत्म हो जाएगा। अहिंसा मनुष्य का स्वभाव है। हिंसा उसके स्वभाव में आई विकृति या बीमारी है। मनुष्य समाज ने अगर विकास किया है तो अहिंसा के माध्यम से। अगर प्रत्येक मनुष्य 'अहिंसा' का मज़बूती से अपने जीवन का अंग बना ले तो दुनिया में अपराध, नफ़रत, स्वार्थ, हिंसा, चोरी जैसी घटनाएँ पूर्णतः खत्म हो जाएँगी। दुनिया की किसी भी समस्या का समाधान हिंसा से नहीं हो सकता। इसलिए सभी समस्याओं का समाधान बातचीत से, प्रेम और सौहार्द से ही हो सकता है।

विचार-मंथन



कई बार लोग अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले लोगों को कमज़ोर अथवा डरपोक समझने लगते हैं। आपके विचार में उनका ऐसा सोचना कहाँ तक सही है?

पठन

संध्या का समय था; सूर्य अस्त हो रहा था; अस्त होते हुए सूर्य की लाल-लाल किरणें प्रतीची की गोद में अपना मुँह छिपाती जा रही थीं। पक्षी गगन में पंखों की थपकियाँ मारते हुए अपने-अपने नीड़ की ओर उड़ते जा रहे थे। सम्राट अशोक बड़ी व्याकुलता के साथ अपने शिविर में टहल रहे थे।

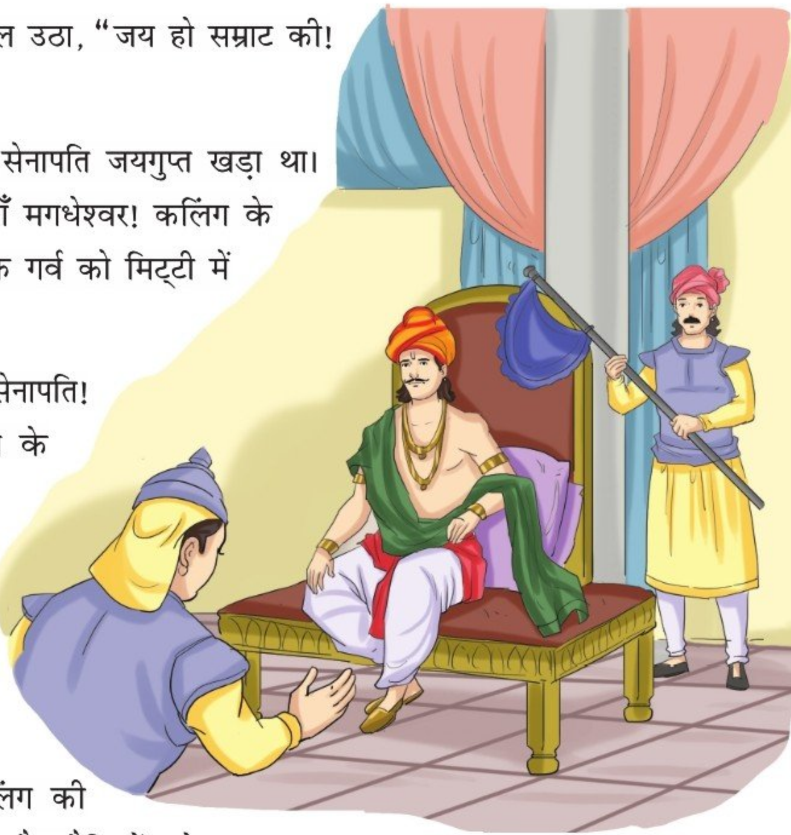
शिविर में टहलते हुए सम्राट अशोक रह-रहकर बाहर की ओर देख उठते थे। ऐसा लगता था, मानो वे किसी की बाट देख रहे हों। उनके भीतर से रह-रहकर गहरी निःश्वासें भी निकल उठती थीं। वे चिंता के साथ मन-ही-मन सोच रहे थे– 'कलिंग का युद्ध' अभी तक युद्ध के मैदान से कोई समाचार नहीं मिला। कलिंग नरेश मृगेंद्र बड़ा शूरवीर है। पता नहीं, युद्ध में क्या हुआ।



शब्द-कलश

संध्या – सायंकाल (Evening)
प्रतीची – पूर्व दिशा (East)
नीड़ – घोंसला (Nest)
बाट-देखना – राह देखना (To wait)
निःश्वास – श्वास का बाहर छोड़ना (Exhale)

सहसा कोई अशोक सम्राट के सामने पहुँचकर बोल उठा, "जय हो सम्राट की! कलिंग के युद्ध में हमारी विजय हुई।"



अशोक ने सामने की ओर देखा, सैनिक वेश में सेनापति जयगुप्त खड़ा था। वह अशोक को अभिवादन करता हुआ बोला, "हाँ मगधेश्वर! कलिंग के युद्ध में हमारी विजय हुई। हमारी सेना ने मृगेंद्र के गर्व को मिट्टी में मिला दिया। वह रणभूमि छोड़कर भाग गया।"

अशोक ने उत्सुकता के साथ कहा, "सच सेनापति! सचमुच मृगेंद्र भाग गया! मैं इस खबर को सुनने के लिए बड़ी देर से व्याकुल हो रहा था।"

सेनापति जयगुप्त ने उत्तर दिया, "मैं सच कह रहा हूँ महाराज! कलिंग के युद्ध में आपकी विजय हुई। कलिंग नरेश मृगेंद्र सचमुच रणभूमि छोड़कर भाग गया।"

सम्राट बोले, "मैं अतीव प्रसन्न हूँ सेनापति! कलिंग की विजय ने मेरे मन में हर्ष का सागर उड़ेल दिया है। सैनिकों को एक सप्ताह की छुट्टी दे दीजिए और इस महान विजय के उपलक्ष्य में उन्हें पुरस्कार दीजिए।"

सेनापति जयगुप्त सम्राट अशोक के सामने विनीत होकर लौट रहा था कि उसकी दृष्टि एक बौद्ध साधु पर पड़ी। उसका मुखमंडल तेजोमय था। घुटा हुआ सिर था। वह कंधे पर चीवर रखे हुए था और उसके हाथ में पात्र था।

साधु अशोक के समक्ष पहुँचकर बिना किसी भय के बोला, "कलिंग के युद्ध में विजय! यह असत्य है सम्राट! कलिंग के युद्ध में आपकी विजय नहीं हुई है; आपकी पराजय हुई है।"

सम्राट विस्मित हो उठे। वे कभी जयगुप्त की ओर तो कभी साधु की ओर देखने लगे। सम्राट विचारों में उलझ गए– किसका कथन सत्य है? सेनापति जयगुप्त का या बौद्ध साधु का?

सेनापति सेनापति ही था। सम्राट उसकी बात का अविश्वास तो नहीं कर सकते थे, पर फिर भी वे जिज्ञासापूर्वक सेनापति की ओर देखने लगे।

सेनापति सम्राट के मन के भाव को समझकर बोला, "मैं सच कह रहा हूँ सम्राट! कलिंग के युद्ध में आपको महान विजय प्राप्त हुई है।"

सेनापति के कथन के समाप्त होते ही बौद्ध साधु भी बोल उठा, "और मैं भी सच कह रहा हूँ सम्राट! कलिंग के

शब्द-कलश

अभिवादन – प्रणाम (Greeting)
तेजोमय – तेज से युक्त (Brilliant)
चीवर – उत्तरीय, वस्त्र (Waist cloth)
विस्मित – हैरान (Surprised)

युद्ध में आपकी महान पराजय हुई है। जैसी पराजय कलिंग के युद्ध में हुई है, वैसी पराजय आज तक आपकी कभी नहीं हुई है।"

सम्राट अशोक सोचते हुए बोले, "श्रेष्ठ श्रमण! मैं सेनापति के कथन को असत्य नहीं मान सकता।"

बौद्ध साधु ने सम्राट की ओर देखते हुए कहा, "हाथ कंगन को आरसी क्या सम्राट! आप मेरे साथ रणभूमि में चलें और अपनी आँखों से देखें कि आपकी विजय हुई है या पराजय!"



सोचो-सोचो!

अशोक क्या सोचकर साधु के साथ जाने के लिए तैयार हो गए?

सम्राट अशोक विचारों में डूब गए। वे मन-ही-मन सोच रहे थे कि जयगुप्त ने कहा, "सम्राट तुम्हारे साथ रणभूमि में नहीं जाएँगे साधु! तुम न जाने कौन हो? तुम साधु के वेश में गुप्तचर तो नहीं हो।"

साधु ने बिना किसी भय के कहा, "सम्राट अशोक मेरे साथ रणभूमि में नहीं जाएँगे। मान लो, मैं गुप्तचर ही हूँ, पर अकेला हूँ और बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के हूँ। मैं अकेला मनुष्य शूरवीर अशोक का क्या बिगाड़ सकता हूँ। सम्राट! क्या सच्चाई का पता लगाने के लिए आप मेरे साथ नहीं चलेंगे?"

अशोक के मुख से निकल पड़ा, "चलूँगा साधु! सत्य का पता लगाने के लिए अवश्य तुम्हारे साथ रणभूमि में चलूँगा। पर स्मरण रहे यदि तुम्हारी बात सत्य नहीं हुई, तो मैं रणभूमि में ही तुम्हारा मस्तक काटकर फेंक दूँगा।"

साधु बोला, "मुझे आपकी शर्त स्वीकार है, सम्राट!"

और सम्राट अशोक हाथ में तलवार लेकर शिविर से बाहर निकल पड़े। वे साधु के साथ रणभूमि की ओर चल पड़े।

शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी की रात थी। सम्राट अशोक साधु के पीछे-पीछे रणभूमि की ओर चलने लगे। गगन में चंद्रमा हँस रहा था। धरती पर शुभ्र चंद्रिका खेल रही थी। पेड़-पौधे और मकान-सभी सफ़ेदी में रँगे हुए से दिखाई पड़ रहे थे।

चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सम्राट अशोक जिस गाँव से होकर निकलते थे, वह उजड़ा हुआ दिखाई पड़ता था। घर-घर से रोने और विलाप करने की आवाज़ें आ रही थीं। सम्राट अशोक ने उन आवाज़ों को सुनकर साधु से पूछा, "साधु! क्या तुम्हें कुछ पता है, ये लोग क्यों रो रहे हैं?"

साधु ने उत्तर दिया, "हाँ सम्राट! मैं इनके रोने का कारण जानता हूँ। इन रोने वालों में किसी का भाई, किसी का पिता, किसी का पति और किसी का पुत्र रणभूमि में मृत्यु की गोद में सो गया है। युद्ध ने इनके घरों को उजाड़ दिया है, इन्हें बिना किसी सहारे का बना दिया है।"

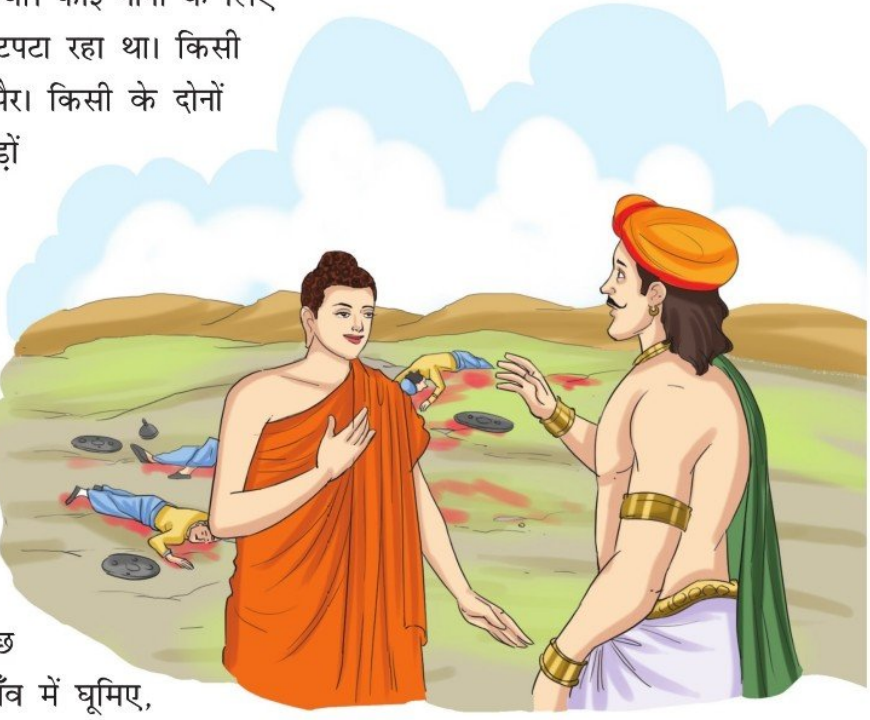


शब्द-कलश

श्रमण – बौद्ध संन्यासी (A Buddhist monk)
हाथ कंगन को आरसी क्या – प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता (A self-evident thing requires no proof)
स्मरण – याद (Memory)
शुभ्र चंद्रिका – चाँदनी (Bright moonlight)

सम्राट अशोक सुनकर मौन हो गए। वे सोचते हुए आगे बढ़ने लगे। उन्होंने मार्ग में देखा, कहीं भेड़िया किसी के शव को नोच-नोचकर खा रहा है, कहीं शृगाल किसी शव में दाँत लगा रहा है और कहीं जंगली कुत्ते किसी शव को खाने के लिए आपस में लड़ रहे हैं।

सम्राट अशोक आगे बढ़ते हुए रणभूमि में जा पहुँचे। साधु उन्हें घूम-घूमकर रणभूमि का दृश्य दिखाने लगे। रणभूमि में चारों ओर से आहतों की चीत्कारें उठ रही थीं। कोई पानी के लिए तड़प रहा था, तो कोई घाव की पीड़ा से छटपटा रहा था। किसी की गर्दन कटी हुई थी, तो किसी के दोनों पैर। किसी के दोनों हाथ कटे हुए थे, तो किसी का शरीर दो टुकड़ों में कटा हुआ दिखाई पड़ रहा था। भेड़िए और शृगाल लाशों को खींचते हुए लिए जा रहे थे। भयानक दृश्य था—रणभूमि का। अशोक उस दृश्य को देखकर काँप उठे।



साधु ने सम्राट की ओर देखते हुए कहा, "सम्राट! यही है आपकी विजय का दृश्य! आप इसे क्या मानते हैं, विजय या अपनी पराजय?" सम्राट कुछ उत्तर नहीं दे सके। साधु! पुनः बोले, "सम्राट! अभी आपने कुछ नहीं देखा। मेरे साथ और भी घूमिए। गाँव-गाँव में घूमिए, घर-घर में चलकर देखिए। कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गई हैं, कितनी बहनें बिना भाइयों के हो गई हैं। सम्राट! वे सभी आँचल उठा-उठाकर कह रही हैं, अशोक का सर्वनाश हो। अशोक का **सर्वनाश** हो! अशोक का सर्वनाश हो।" साधु अपने कथन को समाप्त भी नहीं कर पाया था कि सम्राट अशोक बोल उठे, "बस करो साधु!, बस करो।" सचमुच यह मेरी पराजय हुई है। ओह, मैंने अपनी विजय के लिए इतना **नरसंहार** किया? साधु! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, आज से फिर कभी युद्ध नहीं करूँगा। लो, तुम्हारे सामने ही तलवार को फेंक रहा हूँ।"

सम्राट अशोक ने जिस तलवार से अनेक युद्धों में विजय प्राप्त की थी, उसे उन्होंने अपमानपूर्वक धरती पर फेंक दिया। तलवार से झनझनाहट की आवाज़ निकलकर वायुमंडल में विलीन हो गई। सम्राट अशोक ने सचमुच उस दिन से फिर कभी युद्ध नहीं लड़ा। कलिंग के युद्ध के पूर्व वे युद्ध विजेता के नाम से प्रसिद्ध थे, पर कलिंग के युद्ध के पश्चात वे प्रसिद्ध हुए अहिंसा-व्रत के व्रती के रूप में। उन्होंने अपने ही देश में नहीं, दूसरे देशों में भी अहिंसा का प्रचार करके स्वयं को युगों-युगों के लिए अमर बना लिया।

—संकलित



शब्द-कलश

सर्वनाश – संपूर्ण विनाश (Destruction)
नरसंहार – मार-काट करना (Massacre)



रोचक तथ्य

सम्राट अशोक का पूरा नाम देवानांप्रिय अशोक मौर्य था।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) रणभूमि छोड़कर कौन भाग गया था?

☐ अशोक ☐ मृगेंद्र ☐ ज्ञयगुप्त ☐ चंद्रगुप्त

(ख) सम्राट अशोक साधु के साथ कहाँ गए थे?

☐ उपवन ☐ राजमहल ☐ रणभूमि ☐ आश्रम

(ग) कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने किसका प्रचार किया?

☐ शांति का ☐ भाई-चारे का ☐ युद्धबंदी का ☐ अहिंसा का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) कलिंग नरेश का नाम क्या था?

(ख) सेनापति जयगुप्त ने सम्राट अशोक को क्या संदेश दिया?

(ग) कलिंग युद्ध की विजय से प्रसन्न होकर सम्राट अशोक ने क्या घोषणा की?

(घ) बौद्ध साधु ने सम्राट अशोक के पास जाकर उससे क्या कहा?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) शिविर में टहलते हुए सम्राट अशोक रह-रहकर बाहर की ओर क्यों देख रहे थे?

....

....

(ख) रणभूमि की राह में सन्नाटा क्यों था? गाँवों के घरों से विलाप करने की आवाज़ें क्यों आ रही थीं?

....

....

(ग) बौद्ध साधु ने लोगों के रोने का क्या कारण बताया?

....

....

(घ) कहानी के अनुसार बौद्ध साधु का चरित्र-चित्रण कीजिए।

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) सम्राट अशोक को रणभूमि में ले चलने वाली बात पर सेनापति ने क्या आशंका प्रकट की?

(ख) रणभूमि की ओर जाते हुए सम्राट अशोक ने मार्ग में क्या-क्या देखा?

(ग) रणभूमि का भयानक दृश्य देखकर सम्राट अशोक की क्या प्रतिक्रिया हुई? उन्होंने वह भयानक दृश्य देखकर क्या प्रतिज्ञा की?

(घ) क्या वास्तव में कलिंग युद्ध में सम्राट अशोक की विजय हुई थी? अपने विचार प्रकट कीजिए।

3. किसने-किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "जय हो सम्राट की! कलिंग युद्ध में हमारी विजय हुई।"	....	....
(ख) "कलिंग की विजय ने मेरे मन में हर्ष का सागर उँड़ेल दिया है।"	....	....
(ग) "कलिंग के युद्ध में आपकी विजय नहीं हुई है, पराजय हुई है।"	....	....
(घ) तुम न जाने कौन हो? तुम साधु के वेश में गुप्तचर तो नहीं हो।"	....	....

4. निम्नलिखित वाक्यों के सामने 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) सम्राट अशोक बड़ी व्याकुलता के साथ अपने शिविर में टहल रहे थे। ....

(ख) सेनापति ने सम्राट अशोक को कलिंग युद्ध में हुई पराजय का समाचार सुनाया। ....

(ग) युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने अपने सैनिकों को दंड दिया। ....

(घ) बौद्ध साधु ने सम्राट अशोक को अपने साथ रणभूमि में चलने के लिए कहा। ....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

एक ही शब्द में आगे-पीछे शब्दांश जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं। मूलशब्द एक ही रहता है। इससे अनेक शब्दों की रचना हो सकती है; जैसे– सफल – असफल – असफलता आदि।

1. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, इनसे तीन-तीन नए शब्द बनाइए–

(क) धर्म – ....

(ख) अर्थ – ....

(ग) जन – ....

(घ) मार्ग – ....

(ङ) गंध – ....

क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द 'क्रियाविशेषण' कहलाते हैं। क्रिया की विशेषता निम्नलिखित चार प्रकार से बताई जाती है–

(क) रीतिवाचक – क्रिया किस रीति से संपन्न हो रही है; जैसे– धीरे-धीरे, तेज़ी से, अचानक आदि।

(ख) स्थानवाचक – क्रिया कहाँ घटित हो रही है; जैसे– यहाँ, वहाँ, अंदर, बाहर आदि।

(ग) कालवाचक – क्रिया कब घटित हो रही है; जैसे– आज, अभी, कल आदि।

(घ) परिमाणवाचक – क्रिया की मात्रागत विशेषता; जैसे– कम, ज़्यादा, थोड़ा आदि।

2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण शब्द रेखांकित कर उनका भेद लिखिए–

(क) गाड़ी तेज़ चल रही है। – ....

(ख) बच्चे ऊपर बैठे हैं। – ....

(ग) मेरे पिता जी अभी आए हैं। – ....

(घ) छोटा बच्चा थोड़ा खाता है। – ....

(ङ) बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए। – ....

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द के साथ स्पष्ट होता है, उसे 'कारक' कहते हैं; जैसे– मोहित ने दिव्या को आदित्य के लिए कुछ तोहफ़े दिए। इस वाक्य में मोहित (ने), दिव्या (को), आदित्य (के लिए) आदि संज्ञा शब्दों के साथ आए विभक्ति-चिह्न का संबंध एक-दूसरे से तथा क्रिया 'दिए' से जोड़ रहे हैं। इन कारक-चिह्नों को 'परसर्ग' भी कहा जाता है। कारक निम्नलिखित आठ प्रकार के होते हैं–

कर्ता– ने; कर्म– को; करण– से, के द्वारा; संप्रदान– के लिए; अपादान– से (पृथक होना); संबंध – का, के, की; अधिकरण – में, पर; संबोधन – हे। अरे!

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित कारक शब्दों के लिए उचित भेद चुनिए–

(क) लड़के <u>ने</u> मेरी गेंद छीनी थी।

☐ अधिकरण ☐ करण ☐ कर्म ☐ कर्ता

(ख) वे पीले रंग की बस से पाठशाला जाते थे।

☐ करण ☐ अपादान ☐ अधिकरण ☐ कर्म

(ग) पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।

☐ करण ☐ अधिकरण ☐ कर्म ☐ कर्ता

(घ) माँ हम सभी को उनका ध्यान रखने के लिए कहती थीं।

☐ करण ☐ कर्म ☐ अधिकरण ☐ संप्रदान

(ङ) अरे! कहाँ भागे जा रहे हो?

☐ संबोधन ☐ करण ☐ कर्ता ☐ संबंध

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) संध्या × ....

(ख) अस्त × ....

(ग) विजय × ....

(घ) प्रसन्न × ....

(ङ) पुरस्कार × ....

(च) हर्ष × ....

(छ) अंत × ....

(ज) अपमान × ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

क्या युद्ध हमेशा विध्वंसकारी होते हैं?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. हिंसा के मार्ग पर चलकर दूसरों को डरा-धमकाकर कार्य करने वाले अथवा अहिंसा के मार्ग पर चलकर दूसरों की सहायता करने वाले दो अलग-अलग व्यक्तियों में से आप किसे सही कहेंगे और किसे गलत? सोचकर बताइए।

2. यदि आपको अशोक जैसे किसी शासक का सलाहकार बनने का मौका मिलता है, तो आप उन्हें किस प्रकार अहिंसा के ज्ञान के बारे में समझाएँगे? एक अनुच्छेद के रूप में लिखिए–

(मेरी लेखन अभिव्यक्ति)
(Writing Skills)

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3. वर्तमान में भीषण युद्धों व नरसंहार को रोकने के लिए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थाओं का गठन किया गया है। ऐसी प्रमुख संस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करके उनका तथा राष्ट्र का नाम लिखिए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

....

....

....

....

4. इंटरनेट अथवा अपने अध्यापक की सहायता से भारतीय इतिहास के पराक्रमी राजाओं की एक सूची बनाइए।

(सह–संबंध)
(Connecting Link)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. भारत में हुए युद्धों में से किसी एक प्रमुख युद्ध के बारे में पता लगाइए तथा उसपर एक प्रेज़ेंटेशन तैयार कीजिए।
2. भारत की कुछ ऐतिहासिक इमारतों की तस्वीरें इकट्ठा करके एक एलबम बनाइए तथा उनके बारे में संक्षिप्त जानकारी भी दीजिए।

14 भारत की सांस्कृतिक एकता

प्रस्तुत पाठ में भारत की सांस्कृतिक एकता के बारे में बताया गया है। आइए, पाठ पढ़ने से पूर्व इसके बारे में संक्षेप में जानें–

किसी भी देश की समृद्धि एवं विकास के लिए उसकी सांस्कृतिक एकता आवश्यक होती है। सांस्कृतिक एकता ही वह आधार है जिस पर उस देश में रहने वाली विभिन्न जातियाँ और संप्रदाय एक राष्ट्र के रूप में एकबद्ध रहते हैं। यह एकता ही राष्ट्र-प्रेम, अखंडता और राष्ट्र के विकास के लिए चेतना जगाती है। भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक जातियाँ, धर्म, सामाजिक रीति-रिवाज, भाषाएँ, वेश-भूषा तथा खान-पान हैं। इन सब भिन्नताओं के होते हुए भी भारत सदैव से एक भावात्मक एकता में बँधा हुआ है। इस एकता का मुख्य कारण है– भिन्नता होते हुए भी सांस्कृतिक एकता। अनेकता में एकता यही तो है भारत की विशेषता।



विचार-मंथन

भारत को विभिन्नताओं का देश क्यों कहा जाता है?

पठन

देश राष्ट्रीयता का एक आवश्यक उपकरण है। भारत-भूमि की नदियों के प्रवाह को प्राकृतिक विभाजन-रेखाएँ बतलाकर तथा भाषा, धर्मों एवं रीति-रिवाज़ों के भेद को आधार बनाकर हमारी राष्ट्रीयता के विचार को खंडित करने हेतु हमारे कुछ हितचिंतक इस देश को देश न कहकर एक उपमहाद्वीप कहते हैं। हमारी राष्ट्रीयता को चुनौती देने के निमित्त उत्तर-दक्षिण, अवर्ण-सवर्ण, हिंदू-मुसलमान-सिख-ईसाई-जैन के भेद खड़े करके हमारी संगठित इकाई को क्षति पहुँचाई गई। भाषा का भी बवंडर उठाया गया ताकि आपसी झगड़ों और भेदभाव में हमारी शक्ति का ह्रास हो और विदेशी शासकों का राज्य अटल बना रहे।

पहले तो प्रायः सभी देशों में जाति, भाषा और धर्मगत भेद हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में ही कई जातियाँ हैं। वहाँ कई भाषाएँ भी बोली जाती हैं किंतु एक केंद्रीय भाषा सबको मिलाए हुए है। स्विट्ज़रलैंड में जर्मन, फ्रांसीसी तथा इतालवी



शब्द-कलश

- उपकरण – साधन, सामग्री, औजार (Device)
- हितचिंतक – भला चाहने वाला (Well-wisher)
- निमित्त – कारण (Reason)
- बवंडर – झगड़ा (Quarrel/Fight)
- ह्रास – पतन, नीचे गिरना (Decline)

तीन भाषाएँ बोली जाती हैं। फिर भी वह एक सुसंगठित राष्ट्र है। इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया एक भाषा-भाषी होते हुए भी भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं। जिस देश में भेद नहीं, उसकी इकाई शून्य या गणितशास्त्र की इकाई की भाँति दरिद्र इकाई है। संपन्नता भेदों में ही है किंतु भेद इतने नहीं होने चाहिए कि उनमें सामंजस्य न रहे।



वैसे तो केंचुआ भी एक इकाई है। उसमें आँख, कान, नाक और हाथ-पैर का भेद नहीं, केवल एक ही स्पर्शेंद्रिय सारी ज्ञानेंद्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। किंतु क्या उसका जीवन संपन्न कहा जाएगा? मनुष्य अपने अवयवों के बाहुल्य और उनके समायोजन और संगठन के कारण जीवधारियों में सबसे अधिक विकसित और श्रेष्ठ गिना जाता है।

भेदों के अस्तित्व से इनकार करना मूर्खता होगी और उनकी उपेक्षा करना अपने को धोखा देना होगा। हमारे समाज में भेद और अभेद दोनों ही हैं। कुछ लोगों ने स्वार्थवश हमारे भेदों को अधिक विस्तार दिया, जिससे हमारे देश में फूट की बेल पनपे और इस भेद-नीति से उनका उल्लू सीधा हो। हमारे अभेदों की उपेक्षा की गई या उनको नगण्य समझा गया। इससे हीनता की मनोवृत्ति पैदा की गई। देश की नदियाँ, जिनको विभाजन-रेखाएँ कहा जाता है, हमारी भूमि को उर्वरा और शस्य-श्यामला बनाती हैं। हमारी भौगोलिक इकाई हिमालय पर्वत और सागर से है। उसे छिन्न-भिन्न किया गया है। इसमें कुछ राजनीतिक स्वार्थ भी सहायक हुए हैं। प्राचीनकाल में राष्ट्रीयता की धारा अबाधित तो नहीं रही है, आंतरिक द्वेष कभी-कभी प्रबल हो उठे हैं, किंतु भारतवासी एकच्छत्र सार्वभौम राज्य से अपरिचित न थे। राजसूय, अश्वमेध आदि यज्ञ ऐसे ही राज्य की स्थापना के ध्येय से किए जाते थे।

राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति मनुष्य के हृदय के अधिक निकट हैं। यद्यपि राजनीति का संबंध भौतिक सुख-सुविधाओं से है फिर भी जनसाधारण जितना धर्म से प्रभावित होता है उतना राजनीति से नहीं। हमारे भारतीय धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें एक सांस्कृतिक एकता है, जो उनके अविरोध की परिचायक है। वहीं त्याग, तप एवं मध्यम मार्ग की संयममयी भावना हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख संप्रदायों में समान रूप से विद्यमान है। एक धर्म के आराध्य दूसरे धर्म में महापुरुष के रूप में स्वीकार किए गए हैं। भगवान बुद्ध तो अवतार ही माने गए हैं। 'कलियुगे कलि



अवयव – अंग (Component)
बाहुल्य – अधिकता (Excess)
अस्तित्व – मौजूदगी, सत्ता (Existence)
मनोवृत्ति – मन की स्थिति (Mentality)
उर्वरा – उपजाऊ (Fertile)
शस्यश्यामला – फसलों से हरी-भरी (Prosperous)
अबाधित – बिना बाधा के (Run)
सार्वभौम – समस्त, पृथ्वी से संबंध रखने वाला (Over all)
परिचायक – परिचय देने वाला (Introductory)
आराध्य – पूजनीय (Adorable)

प्रथम चरणे बुद्धावतारे' कहकर प्रत्येक धार्मिक संकल्प में हम उनका पुण्य स्मरण कर लेते हैं। भगवान ऋषभदेव का श्रीमद्भागवत में परम आदर के साथ उल्लेख हुआ है। जैन धर्म ग्रंथों में भगवान राम और कृष्ण को तीर्थंकर नहीं तो उनसे एक श्रेणी नीचे का स्थान मिला है। अन्य हिंदू देवी-देवताओं को भी उनके देवमंडल में स्थान मिला है।

भारत में उद्भूत प्राय: सभी धर्म आवागमन में विश्वास करते हैं। मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा की शिक्षा हिंदू, जैन और बौद्ध धर्मों में समान रूप से प्रतिष्ठित है। स्वास्तिक चिह्न और ओंकार मंत्र हिंदुओं और जैनों में समान रूप से मान्य हैं। कमल और हाथी तथा अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) बौद्धों और हिंदुओं में एक रूप से पूजनीय माने जाते हैं। जैनों के अणुव्रत, हिंदूधर्म के योगशास्त्र के 'यम' और बौद्धों के पंचशील प्राय: एक ही हैं। पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है। जेंदावेस्ता की गाथाओं और वैदिक ऋचाओं में भाषागत समानता है।

सिख गुरुओं ने हिंदू धर्म की रक्षा में योग ही नहीं दिया वरन उसके लिए कष्ट और अत्याचार भी सहे। उन्होंने, विशेषकर गुरु नानक और गुरु गोविंद सिंह ने हिंदी में कविता की है। उनके धर्म ग्रंथों में राम-नाम की महिमा गाई गई है। गुरु गोविंद सिंह ने चंडी (दुर्गादेवी) का भी स्तवन किया है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कबीर आदि महात्माओं की वाणी आदर के साथ सुरक्षित हैं, उनका नित्य पाठ होता है। सिखों के गुरु लोग हमारे संतों में अग्रगण्य समझे जाते हैं और उनका आदर के साथ स्मरण किया जाता है।

मुसलमान और ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत कुछ समानता रखते हैं। यूरोप से भी पहले ईसाई धर्म दक्षिण भारत में मिला है। कुछ लोगों का तो कहना है कि स्वयं ईसा ने भारत में शिक्षा पाई थी! 'दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करो जैसा कि तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो' ईसा मसीह का यह कथन महाभारत के 'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' का ही पर्याय है। ईसाइयों की क्षमा और दया बौद्ध धर्म से मिलती-जुलती है। मैं यह नहीं कहता कि किसने किससे लिया, परंतु इन मौलिक सिद्धांतों में हिंदू, बौद्ध और ईसाई धर्मों में समानता है। रोमन कैथेलिकों की पूजा-अर्चना, धूप-दीप, व्रत-उपवास आदि हिंदुओं के समान हैं।

मुसलमानों और ईसाइयों ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है और वे यहाँ की संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। भारतीय सूफ़ी कवियों ने वेदांत की भावभूमि को अपनाया और उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी-देवताओं और प्रतीकों के समावेश हुए हैं। तानसेन और ताज पर हिंदू-मुसलमान समान रूप से गर्व करते हैं। जायसी, रहीम, रसखान आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान के सवैये तो सचमुच रस की खान हैं।



सोचो-सोचो!

भारतवर्ष में किन-किन बातों में एकता तथा किन-किन बातों में अनेकता प्रतीत होती है?

प्राचीन काल में भारतीय धर्म और साहित्य ने राष्ट्रीय एकता का पाठ पढ़ाया है। सभी काव्य-ग्रंथ, चाहे वे उत्तर के हों चाहे दक्षिण के, रामायण और महाभारत को अपना प्रेरणा-स्रोत बनाते रहे हैं। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के आम्नाय और काव्य-ग्रंथ उत्तर दक्षिण में समान रूप से मान्य हैं। कालिदास के 'रघुवंश' और भवभूति के 'उत्तर रामचरित' में उत्तर और दक्षिण के प्राकृतिक दृश्यों का बड़ी रसमयता के साथ वर्णन आया है।



शब्द-कलश

उद्भुत – उपजे हुए (Emerged)
जेंदावेस्ता – पारसियों का धार्मिक ग्रंथ (Persian's religious book)
प्रतिष्ठित – स्थापित (Establish)
स्तवन – स्तुति (Praise)

हिंदू-तीर्थाटन में धार्मिक भावना के साथ राष्ट्रीय भावना भी निहित है। शिवभक्त ठेठ उत्तर की गंगोत्री से जाह्नवी-जल लाकर दक्षिणी सीमा के रामेश्वरम् महादेव का अभिषेक करते हैं। उत्तर में बद्री-केदार, दक्षिण में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथ और पश्चिम में द्वारिकापुरी के तीर्थाटन में भारत की चारों दिशाओं की पूजा हो जाती है।

भारत की सात पुरियाँ पवित्र और मोक्षप्रद मानी गई हैं। इनकी भी यात्रा की जाती है और प्रातःस्मरण भी किया जाता है, इनके नाम हैं–अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काँची, अवंतिका (उज्जयिनी), द्वारावती (द्वारका)। पूरा श्लोक इस प्रकार है–

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काँची, अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

स्वामी शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे। उत्तर में ज्योतिर्मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ, पूर्व में गोवर्धन मठ और पश्चिम में शारदा मठ। ये भगवान शंकराचार्य की दिग्विजय के कीर्ति स्तंभ ही नहीं वरन् भारत की एकता के भी परिचायक चिह्न हैं। दक्षिण के अन्य आचार्यों के संप्रदाय अविरोधभाव से उत्तर में फूले-फले और विकसित हुए। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु के संप्रदाय ने भी मथुरा-वृंदावन में अपनी शिष्य-परंपरा स्थापित की। इन संप्रदायों के मंदिर बने और इनकी पूजा-अर्चना ने उत्तर प्रदेश के जीवन और साहित्य को प्रभावित किया। हिंदी साहित्य 'गगन के सूर्य' और शशि-स्वरूप सूर और तुलसी दक्षिण के संप्रदायों से ही प्रभावित थे। वे सब एकता के सूत्र प्राचीन ही थे (पश्चिम की सौगात न थे), किंतु उनकी उपेक्षा की गई।

अब भाषा का प्रश्न आता है। उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं और उन सभी के शब्दों में पारिवारिक समानता है। दक्षिण की भाषाएँ भी संस्कृत से प्रभावित हुई हैं। उन्होंने भी थोड़ी-बहुत मात्रा में शब्दावली ग्रहण की, किसी ने थोड़ी तो किसी ने बहुत। उर्दू को छोड़कर प्रायः सभी भाषाओं की वर्णमाला एक नहीं तो एक-सी हैं। केवल लिपि का भेद है। मराठी और देवनागरी की लिपि तो एक ही है। संस्कृत की परिनिष्ठित लिपि होने के कारण देवनागरी प्रायः सभी प्रांतों में पहचानी जाती है। उर्दू का लिपि-भेद होते हुए भी हिंदी के साथ भाषा में साम्य है। भाषा की ज़मीन और व्याकरण प्रायः एक से हैं, बेल-बूटे फ़ारसी-अरबी के हैं। प्रेमचंद, अश्क, सुदर्शन आदि ने हिंदी में भी लिखा और उर्दू में भी। भारत की प्रायः सभी भाषाओं के साहित्य ने स्वतंत्रता की लड़ाई में योगदान किया है। भाषाओं का भेद होते हुए भी विचारों की एकध्येयता रही है।

भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य का धूमिल इतिहास घुला-मिला सा प्रतीत होता है। उसके बीच कोई अभेद्य दीवार न थी। मीरा गुजराती और हिंदी में समान रूप से कवयित्री मानी जाती हैं। मीरा के गीतों से बंगाल भी प्रभावित हुआ है। भूषण की वाणी का महाराष्ट्र में भी आदर हुआ था। संत तुकाराम आदि महाराष्ट्र के संतों ने अपनी कविता में हिंदी को भी अपनाया। विद्यापति समान रूप से हिंदी, मैथिली और बाँग्ला के कवि माने जाते हैं। कबीर, दादू आदि संतों का व्यापक प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने एकतारे की तान में सारे भारत को बाँध दिया। तुलसीकृत

शब्द-कलश

जाह्नवी – गंगा नदी (The Ganges)
साम्य – समानता (Equality)
मोक्षप्रद – मोक्ष देने वाली (Salvation)
एकध्येयता – एक उद्देश्य (One purpose)
परिनिष्ठित – परिष्कृत (Refined)

श्रीरामचरितमानस का मराठी और बाँग्ला में भी अनुवाद हुआ। सूरदास के भजनों को प्रायः सभी प्रांतों के गवैयों ने अपनाया। बाँग्ला के 'वंदे मातरम्' और 'जन-गण-मन' राष्ट्रीय गीत बने। वेशभूषा, रहन-सहन और शक्ल-सूरत में भेद होते हुए भी भारतवासी अपने जातीय व्यक्तित्व से पहचान लिए जाते हैं।

हमारा एक जातीय व्यक्तित्व है। वह हमारी जातीय मनोवृत्ति, जीवन-मीमाँसा, रहन-सहन, रीति-रिवाज़, उठने-बैठने के ढंग, चाल-ढाल, वेश-भूषा, साहित्य, संगीत और कला में अभिव्यक्त होता है। विदेशी प्रभाव पड़ने पर भी बहुत अंशों में अक्षुण्ण बना हुआ है, वही हमारी एकता का मूल सूत्र है।

–बाबू गुलाबराय



शब्द-कलश

मनोवृत्ति – मन की स्थिति (Attitude/mentality)
अक्षुण्ण – अखंडित (Unbroken/Intact)



लेखक-परिचय

बाबू गुलाबराय का जन्म 17 जनवरी, 1888 को उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में हुआ था। इन्होंने आगरा कॉलेज से बी०ए० की परीक्षा पास की तथा दर्शन शास्त्र में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने सेंट जॉन्स कॉलेज आगरा में हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। उनकी साहित्यिक सेवाओं के फलस्वरूप आगरा विश्वविद्यालय ने उन्हें डी०लिट्० की उपाधि से सम्मानित किया। सन 1963 में आगरा में उनका निधन हो गया। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– नवरस, सिद्धांत और अध्ययन, तर्कशास्त्र, मेरी असफलताएँ, मन की बातें आदि।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए– MCQs

(क) हमारी भूमि को उर्वरा और शस्य-श्यामला कौन बनाती हैं?

☐ नदियाँ ☐ पर्वत ☐ समुद्र ☐ उपवन

(ख) जनसाधारण राजनीति की अपेक्षा किससे अधिक प्रभावित होती है?

☐ राजनेताओं से ☐ धर्म से ☐ राष्ट्रीयता से ☐ जनता से

(ग) भारत की कितनी पुरियाँ पवित्र और मोक्षप्रद मानी गई हैं?

☐ पाँच ☐ सात ☐ नौ ☐ चार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) राष्ट्रीयता का आवश्यक उपकरण क्या है?

(ख) स्विट्जरलैंड में कौन-कौन-सी भाषाएँ बोली जाती हैं?

(ग) हमारी भौगोलिक इकाई किससे है?

(घ) मनुष्य के हृदय के अधिक निकट क्या है?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) विदेशी शासकों ने भारत को खंडित करने के लिए क्या-क्या किया?

(ख) प्राचीनकाल में राजसूय व अश्वमेध यज्ञ किसलिए किए जाते थे?

(ग) भारत के प्राय: सभी धर्म किसमें विश्वास करते हैं?

(घ) भारत की सात पुरियाँ कौन-कौन-सी हैं?

(ङ) भारत की सभी भाषाओं का उद्गम कहाँ से हुआ है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) आज देश व समाज में भेद व अभेद में से किसे अधिक विस्तार देने की आवश्यकता है और क्यों?

(ख) भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता है?

(ग) प्राचीनकाल में भारतीय धर्म व साहित्य ने राष्ट्र को एकता के सूत्र में कैसे बाँधा?

(घ) भारतीय सांस्कृतिक एकता में स्वामी शंकराचार्य का क्या योगदान रहा है?

3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) देश .... का एक आवश्यक उपकरण है।

(ख) भेदों को अस्तित्व से .... करना मूर्खता होगी।

(ग) रसखान के .... सचमुख रस की खान हैं।

(घ) उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ .... से निकली हैं।

(ङ) हमारा एक .... व्यक्तित्व है।

(च) उत्तर भारत की प्रायः सभी भाषाएँ .... से निकली हैं।

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए–

(क) अमेरिका में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। – ....

(ख) सभी देशों में जाति, भाषा व धर्म की समानता है। – ....

(ग) राजनीति का संबंध भौतिक सुख-सुविधाओं से है। – ....

(घ) पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा नहीं होती। – ....

(ङ) उर्दू और हिंदी भाषा में साम्य है। – ....

5. निम्नलिखित पाठांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मुसलमान और ईसाइयों ने यहाँ की संस्कृति को प्रभावित किया है और यहाँ की संस्कृति से प्रभावित हुए हैं। भारतीय सूफ़ी कवियों ने वेदांत की भावभूमि को अपनाया और उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी-देवताओं तथा प्रतीकों के समावेश हुए हैं। तानसेन और ताज पर हिंदू-मुसलमान समान रूप से गर्व करते हैं। जायसी, रहीम, रसखान आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है। रसखान के सवैये तो सचमुच रस की खान हैं।

(क) यहाँ की संस्कृति को किसने प्रभावित किया है?

....

....

(ख) भारतीय सूफ़ी कवियों के ग्रंथों में किस-किसका समावेश हुआ है?

....

....

(ग) किसके सवैयों को लेखक ने सचमुच 'रस की खान' माना है?

....

....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित मुहावरों का उनके सही अर्थ से मिलान करके वाक्य में प्रयोग कीजिए–

मुहावरा	**अर्थ**
(क) उल्लू सीधा करना	(i) दोष देना
(ख) गागर में सागर भरना	(ii) बिलकुल बदल जाना
(ग) उँगली उठाना	(iii) नियंत्रण से बाहर होना
(घ) कायापलट होना	(iv) बड़ी बात को थोड़े में कहना
(ङ) पर निकल आना	(v) स्वार्थ पूरा करना

वाक्य-प्रयोग

(क) ....

(ख) ....

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

2. 'ज्ञानेंद्रियाँ' को यदि 'ज्ञान + इंद्रियाँ, लिखा जाए, तो नीचे लिखे शब्दों को कैसे लिखा जाएगा?

(क) रत्नाकर – .... + ...

(ख) विद्यार्थी – .... + ...

(ग) स्वाधीनता – .... + ...

(घ) महाराष्ट्र – .... + ...

(ङ) राजनीति – .... + ...

(च) रामायण – .... + ...



3. संधियुक्त शब्दों को रेखांकित कीजिए–

(क) देशद्रोहियों का <u>मूलोच्छेद</u> होना ही चाहिए।

(ख) मदांध और अदूरदर्शी राजा विनाश का कारण बनेगा।

(ग) चुने हुए अश्वारोही ही युद्ध में गए।

(घ) मगध की लाक्षधिक वाहिनी का सामना करना होगा।

(ङ) योजनानुसार आगे बढ़ना ही होगा।

4. प्रत्यययुक्त शब्दों को रेखांकित करके लिखिए–

(क) <u>विश्वसनीय</u> और कुशल व्यक्तियों की वृद्धि करते रहो। ....

(ख) जनता को प्रबुद्ध करते हुए मालव पहुँचे। ....

(ग) पुरुमर के दल ने विस्मर्णीय कलंक इतिहास में अंकित कर दिया। ....

(घ) स्वार्थी और अभिशापी शासक सबसे बड़े आंतरिक शत्रु होते हैं। ....

(च) सौभाग्यशाली की विजय होती है। ....

5. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) जो प्राप्त न हो सके – ....

(ख) सदा रहने वाला – ....

(ग) जल में रहने वाला – ....

(घ) जिसका आरंभ न हो – ....

(ङ) जिसकी उपमा न हो – ....

(च) जो विश्वास करने योग्य हो – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

भारतवर्ष में अनेकता में एकता कैसे प्रतीत होती है?

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. हमारी संस्कृति या इतिहास भविष्य को सुखद कैसे बना सकते हैं? सोचकर बताइए।

2. 'दुनिया के अनेक देशों की संस्कृति पैदा हुई और मिट गई। काल के थपेड़ों ने अनेक संस्कृतियों को धूल-मिट्टी में मिला दिया लेकिन भारत की संस्कृति अभी भी अपना सीना ताने गर्व के साथ खड़ी है।'

(मेरी वाचन अभिव्यक्ति)
(Speaking Skills)

आपके विचार से ऐसा क्या कारण रहा होगा कि भारत की सांस्कृतिक एकता को कोई हानि नहीं पहुँचा पाया? कक्षा में अपने विचार साझा कीजिए।

3. कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी भारत के किसी एक राज्य के विषय में जानकारी प्राप्त करके तथा उस राज्य की वेशभूषा धारण करके उस राज्य की विशेषताओं को कक्षा में बताइए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. भारत के विभिन्न राज्यों में व्यक्तियों की वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन, त्योहारों की भिन्नता पर एक सचित्र परियोजना/प्रेजेंटेशन तैयार कीजिए।
2. भारतवर्ष में 'राजस्थान' राज्य की विशेष महत्ता रही है। राजस्थान को हमेशा से ही वीरों तथा बलिदानों की भूमि कहा जाता है। भारत के मानचित्र पर 'राजस्थान' को अंकित कीजिए तथा 'राजस्थान' पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

15 जलियाँवाला बाग में वसंत

प्रस्तुत पाठ जलियाँवाला बाग हत्याकांड पर आधारित है। आइए, जलियाँवाला बाग पर आधारित एक तथ्य को जानें–

यह तो आप जानते हैं कि ब्रिटिश जनरल माइकल ओ ड्वायर के आदेश पर जलियाँवाला बाग में लोगों पर गोलियाँ बरसाई गई थीं। इस हत्याकांड में हज़ारों मासूम भारतीयों की जानें गई थीं।

इसके बाद सरदार उधम सिंह ने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गर्वनर माइकल ओ ड्वायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ली। जिस डायर ने गोलियाँ चलवाई थीं, उस जनरल डायर की 1927 ई० में ब्रेन हैमरेज से मौत हो चुकी थी। कहा जाता है कि उधम सिंह ने उसे लंदन जाकर मारा था। परंतु उधम सिंह ने जिन्हें मारा था वे थे– माइकल ओ ड्वायर यानि उधम सिंह ने इस हत्याकांड का समर्थन करने वाले माइकल ओ ड्वायर को मारा था।

विचार-मंथन

जलियाँवाला बाग का नाम सुनकर आपके मन में कैसी भावना उत्पन्न होती है?

पठन

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं, कंटक-कुल से।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे।।

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।



शब्द-कलश

- कीट – कीड़ा (Worm)
- कंटक – काँटा (Thorn)
- शुष्क – सूखा हुआ (Dry)
- परिमल – सुगंध, कुंकुम (Perfume)
- ऋतुराज – ऋतुओं का राजा वसंत ऋतु (Spring season)
- शोक-स्थान – वह जगह, जहाँ प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग अथवा कोई दुखदायी घटना घटी हो (Mourning place)

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे।।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले।।
किंतु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं।
अपने प्रिय परिवार-देश से भिन्न हुए हैं।।

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना।।
तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।।

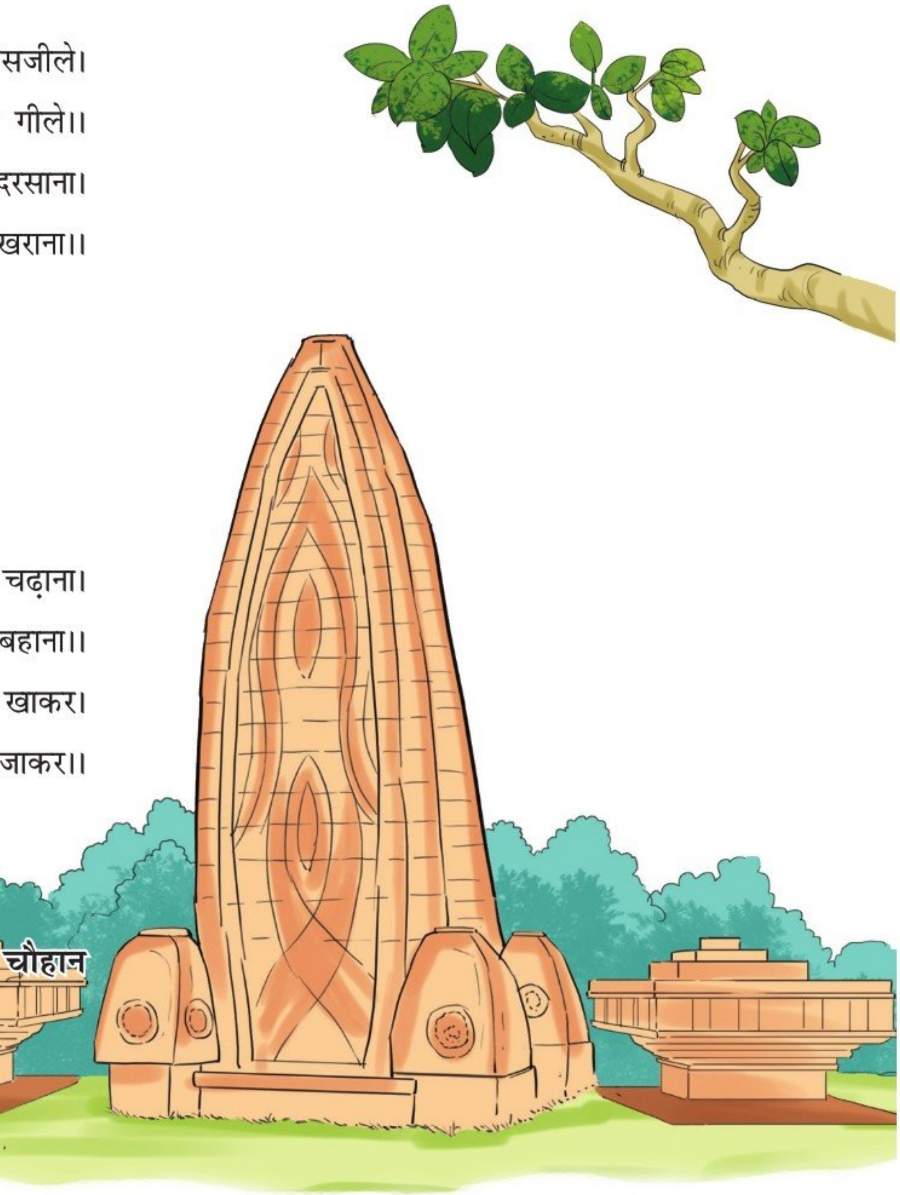
यह सब करना, किंतु बहुत धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान, यहाँ मत शोर मचाना।।

–सुभद्राकुमारी चौहान

सोचो-सोचो!

'कंटक कुल' से कवि का क्या अभिप्राय है?





रोचक तथ्य

वर्ष 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए थे। उन्होंने विजिटर्स बुक में लिखा था कि 'ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।'

शब्द-कलश

अधखिली – आधी खिली हुई (Half bloomed)
अश्रु – आँसू (Tears)



कवयित्री-परिचय

हिंदी साहित्य की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 को उत्तर प्रदेश के निहालपुर (इलाहाबाद) में हुआ था। ये राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री थीं। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र (कहानी संग्रह), मुकुल, त्रिधारा (कविता संग्रह), झाँसी की रानी, कदंब का पेड़, सभा का खेल (बाल साहित्य) आदि। 15 फरवरी, 1948 को कार दुर्घटना में इनका निधन हो गया।

अभ्यास (Exercises)

पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) बाग में कौन शोर मचा रहा है?

☐ कौए ☐ चिड़ियाँ ☐ तोते ☐ कबूतर

(ख) वायु को किस गति से चलने के लिए कहा गया है?

☐ तीव्र ☐ मंद ☐ मध्यम ☐ इनमें से कोई नहीं

(ग) जलियाँवाला बाग कैसा स्थान है?

☐ ध्यान-स्थान ☐ पुण्य-स्थान ☐ शोक-स्थान ☐ रमणीय स्थान

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) जलियाँवाला बाग में पौधों व पुष्पों की कैसी दशा है?

(ख) कवयित्री ने कैसे पुष्प साथ लाने के लिए कहा है?

(ग) कोमल बालकों के लिए ऋतुराज को क्या करने के लिए कहा गया है?

(घ) भ्रमर कैसी कथा सुना रहे हैं?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) कवयित्री ऋतुराज को धीरे-से क्यों बुला रही हैं?

....

....

(ख) कवयित्री वायु को मंद चाल से चलाने की बात क्यों कह रही हैं?

....

....

(ग) कवयित्री बालकों के लिए क्या चाहती हैं?

....

....

(घ) जलियाँवाला बाग में वृद्ध कैसे मरे?

....

....

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कवयित्री ने जलियाँवाला बाग का चित्रण कैसे किया है?

(ख) कवयित्री ने ऋतुराज से उपहार-भाव न दर्शाने की बात कही है। उपहार-भाव दर्शाने से क्या होगा?

(ग) जलियाँवाला बाग को शोक-स्थान क्यों कहा गया है?

(घ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–

(i) यहाँ कोकिल नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।।

(ii) लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले।।

3. निम्नलिखित प्रत्येक पंक्ति की अगली पंक्ति लिखिए–

(क) आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।

....

(ख) लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले।

....

(ग) किंतु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना।

....

(घ) कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर।

....

4. निम्नलिखित पंक्तियों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना।
दुख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे।।

प्रसंग – ....

व्याख्या – ....

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चलता है, उसे 'काल' कहते हैं। काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

भूतकाल – काम का बीते हुए समय में होना (था, थी, थे आदि)
वर्तमान काल – काम का चल रहे समय में होना (है, हैं, हूँ आदि)
भविष्यत् काल – काम का आने वाले समय में होना (गा, गे, गी आदि)

1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने उनके काल लिखिए–

(क) तुम कहाँ जा रहे हो? – ....
(ख) हम कल एक पार्टी रखेंगे। – ....
(ग) मैं कल बाज़ार गया था। – ....
(घ) तुम बड़े होकर क्या बनोगे? – ....

अब तीनों कालों से दो-दो वाक्य बनाकर लिखिए–

भूतकाल : ....
: ....

वर्तमान काल : ....

: ....

भविष्यत् काल : ....

: ....

2. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

(क) तुमको किससे बात करना है? – ....

(ख) मंद चाल से वायु चलता है। – ....

(ग) मुझे एक कविताओं की पुस्तक ला दीजिए। – ....

(घ) आपत्तियों और बाधाओं के भय से मत डरो। – ....

(ङ) दस बजने को बीस मिनट हैं। – ....

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) कोयल – ....

(ख) बाग – ....

(ग) काक – ....

(घ) वायु – ....

(ङ) भ्रमर – ....

(च) पुष्प – ....

4. निम्नलिखित नकारात्मक वाक्यों को सकारात्मक रूप में लिखिए–

(क) यहाँ काक शोर नहीं मचाते हैं।

....

(ख) वायु को मंद चाल से मत चलाना।

....

(ग) यहाँ अधिक सजीले पुष्प मत लाना।

....

(घ) तुम यहाँ बहुत धीरे मत आना।

....

अपठित बोध (Unseen Passage)

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

एक युवा कलाकार बहुत कम समय में ही प्रख्यात हो गया। उसे अपनी कला पर पूरा विश्वास था। लेकिन उसके मन में प्रसिद्ध कलाकार माइकल एंजेलो के प्रति ईर्ष्या थी। वह उन्हें किसी-न-किसी तरह नुकसान पहुँचाने की सोचने लगा। एक दिन उसने बहुत खूबसूरत चित्र बनाया। लेकिन जब उसने चित्र को गंभीरता से देखा तो पाया कि उसमें कहीं कुछ कमी ज़रूर है। जब वह उस कमी को नहीं ढूँढ़ पाया, तो उसने सोचा कि कुछ चित्रकारों से ही इसके बारे में पूछा जाए। उसने चित्रकारों को बुलाया। सभी चित्रकार उसके चित्र को देखकर दंग रह गए। कोई भी कमी नहीं ढूँढ़ पाया। कुछ देर में वहाँ पर एक प्रौढ़ चित्रकार आया। आते ही उसने चित्र पर नज़र डाली और बोला, "यह चित्र बहुत खूबसूरत है, बस इसमें एक छोटी-सी कमी है।" युवा चित्रकार बोला, "सर, बताइए न वह कौन-सी कमी है, जो मेरे चित्र को अधूरा बना रही है। प्रौढ़" चित्रकार मुसकराए। उन्होंने युवा कलाकार से कूची माँगी। इसके बाद उन्होंने उस कूची में काला रंग भरा और चित्र में बनी स्त्री की आँखों में दो काली बिंदियाँ बना दी। उनके लगते ही ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वह स्त्री अभी बोल पड़ेगी। यह देखकर सभी चित्रकार वाह-वाह! कर उठे। युवा चित्रकार प्रौढ़ चित्रकार से बोला, "सर, आपने अपना परिचय नहीं दिया।" वह मुसकराते हुए बोले, "मैं माइकल एंजेलो हूँ।' यह सुनते ही युवा चित्रकार दंग रह गया। वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "सर, मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं व्यर्थ ही आपसे ईर्ष्या करता था। आज मैं समझ गया हूँ कि महान कला ही व्यक्ति को भी महान बनाती है। आप सचमुच महान हैं।" माइकल एंजेलो ने युवा चित्रकार को गले से लगा लिया।

(क) युवा कलाकार किससे ईर्ष्या करता था?

....

(ख) सभी चित्रकार क्या देखकर दंग रह गए?

....

(ग) प्रौढ़ चित्रकार वास्तव में कौन था?

....

(घ) प्रौढ़ चित्रकार ने चित्र में क्या सुधार किया?

....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

"जलियाँवाला बाग हत्याकांड की घटना की जितनी निंदा की जाए कम है।"– व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)

1. क्या अहिंसा से शांति प्राप्त हो सकती है? सोचकर बताइए। (मेरा तर्क : मेरा चिंतन) (Analytical Skills)

2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए। (मेरी वाचन अभिव्यक्ति) (Speaking Skills)

3. सहपाठियों के साथ मिलकर जलियाँवाला बाग हत्याकांड पर एक नाटिका लिखकर उसका प्रस्तुतीकरण कीजिए। (मेरी सहभागिता) (My Participation)

4. आपके अध्यापक/अध्यापिका पुस्तक के पृष्ठ संख्या 171 से एक लघुकथा पढ़कर सुनाएँगे। उसे ध्यानपर्वूक सुनकर प्रश्नों के उत्तर लिखिए– (मेरी श्रवण कुशलता) (Listening Skills)

   (क) भिखारी ने किससे भीख माँगी?

   ....

   (ग) भिखारी के सभी उत्तर कैसे थे?

   ....

   (घ) भिखारी के पास कितनी संपत्ति थी?

   ....

   (ङ) अंत में भिखारी ने क्या निर्णय लिया?

   ....

5. जलियाँवाला बाग देश के किस राज्य के किस शहर में स्थित है? पता लगाइए। उस राज्य की भौगोलिक विशेषताओं के बारे में भी पता लगाइए। (सह–संबंध) (Connecting Link)

मेरी परियोजना (Project Work)

1. स्वतंत्रता की घटनाओं पर आधारित कुछ अन्य कविताएँ कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।
2. स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सेनानियों की सूची बनाइए। एक फाइल में उनके चित्र भी चिपकाइए।

16 क्या निराश हुआ जाए

प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि जीवन में कई बार हादसे हो जाते हैं, पर क्या उनके कारण निराश होने की आवश्यकता है? आइए, पाठ पढ़ने से पूर्व यह जानें–

आशा और निराशा सिक्के के दो पहलू हैं। आशा है तो हौंसले हैं, हौंसले हैं तो उम्मीद है, उम्मीद है तो सफलता है। इसके विपरीत निराशा है, तो कुछ भी नहीं है। न हौंसलें, न उम्मीद और न ही सफलता। निराशा एक मनोदशा है, जो काम के प्रति अरुचि को दर्शाता है। निराश व्यक्ति उदास, दुखी, बेबस, चिड़चिड़ा और बेचैन हो जाता है।

निराशा के भँवर से निकलने के कई रास्ते हैं। जिस तरह हर अँधेरी रात के बाद उजली सुबह होती है, उसी तरह निराशा के पार आशा की किरण है। बस हमारे-आपके देखने का फर्क है।

एक राजा ने अपने सेनापति से कहा, दीवार पर कुछ ऐसा लिखो कि वह अच्छे और बुरे दोनों वक्त में याद करने लायक हो। सेनापति ने लिखा, यह समय भी कट जाएगा। जी हाँ, न आशा स्थायी है और न ही निराशा। यह व्यक्ति के ऊपर है कि वह किसे अपने साथ रखता है– आशा को या निराशा को।

विचार-मंथन

क्या निराश होना किसी व्यक्ति के वश में है?

पठन

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता; जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है, तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय

शब्द-कलश

आरोप-प्रत्यारोप – एक-दूसरे पर दोष मढ़ने का कार्य (Counter allegations)
गह्वर – गड्ढा (Pit)

और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा नहीं हो सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परंतु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए, नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गई। आदर्शों को मज़ाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।



शब्द-कलश

निरीह – बेचारा (Weak)
पर्याय – समानार्थक (Synonyms)
मनुष्य-निर्मित – मनुष्य द्वारा बनाई गई (Man made)
परीक्षित – जाँचे-परखे (Tested)
आलोड़ित – उथल-पुथल से भरा हुआ, हिलोरें लेता हुआ (Tumultuous)
विकार – दोष (Disorder)
निकृष्ट – घटिया, नीच (Petty)
गुमराह – रास्ते से भटका हुआ (Astray)
दकियानूसी – पुराने विचारों से चिपका रहने वाला (Orthodox)

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त-प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जागती है।



एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, "यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा। मैंने भी नहीं देखा।" उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

सोचो-सोचो!

लेखक के चकित होने का क्या कारण था?

शब्द-कलश

आक्रोश – गुस्सा (Anger)
दोषोद्घाटन – दोषों को प्रकट करना (To reveal faults)

एक बार मैं बस यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई पाँच मील पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर ऊपर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, "यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।" परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, "हमलोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।" डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि वे मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, "इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।"



मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मारपीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और मेरी पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना, उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उसपर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, "अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।" फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, "पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।" यात्रियों में फिर जान आई, सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सबलोग बस-अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

शब्द-कलश

निर्जन – जहाँ कोई आदमी न रहता हो (Uninhabited)
कातर मुद्रा – डरा हुआ रूप (Scared look)

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे पर पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। मेरे मन! निराश होने की ज़रूरत नहीं है।



रोचक तथ्य

गांधी को सबसे पहले 'महात्मा' कहने का श्रेय रवींद्रनाथ ठाकुर को ही दिया जाता है।

–हज़ारीप्रसाद द्विवेदी



लेखक-परिचय

हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त, 1907 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के 'दुबे का छपरा' ग्राम में हुआ था। इनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध था। इनके पिता पं० अनमोल द्विवेदी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। द्विवेदी जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में ही हुई। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात द्विवेदी जी शांति निकेतन चले गए और कई वर्षों तक वहाँ हिंदी विभाग में कार्य करते रहे। इनका निधन 19 मई, 1997 में हो गया था।

अभ्यास (Exercises)



पाठ का पिटारा (From the Lesson)

MCQs

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(क) हर व्यक्ति किस दृष्टि से देखा जा रहा है?

☐ प्रेम की ☐ निष्ठा की ☐ संदेह की ☐ श्रद्धा की

(ख) भारत किसे धर्म के रूप में देखता है?

☐ कानून को ☐ समर्पण को ☐ पूजा को ☐ शक्ति को

(ग) किसका पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है?

☐ गुणों का ☐ दोषों का ☐ रहस्यों का ☐ अच्छाई का

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मौखिक (Oral Expression)

(क) भारतवर्ष ने किसे कभी भी बहुत अधिक महत्व नहीं दिया?

(ख) मूर्खता का पर्याय किसे समझा जाने लगा है?

(ग) ऊपर-ऊपर जो दिखाई दे रहा है, वह किसकी देन है?

(घ) भारतवर्ष कानून को किसके रूप में देखता आ रहा है?

लिखित (Written Expression)

लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) लेखक का मन कभी-कभी क्यों बैठ जाता है?

(ख) एक बहुत बड़े आदमी ने लेखक से एक बार क्या कहा था?

(ग) लोगों की आस्था किस स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में हिलने लगी है?

(घ) लेखक के साथ ऐसी कौन-सी घटना हुई, जिसे उजागर करने से उसे लगता है कि लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जागती है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कौन-से लोग कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते?

(ख) तिलक और गांधी ने जिस भारतवर्ष का सपना देखा था, आज का भारतवर्ष उससे किस प्रकार भिन्न है?

(ग) लेखक के अनुसार हमें बुराई की अपेक्षा अच्छाई में ज़्यादा रस क्यों लेना चाहिए?

(घ) लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि मनुष्यता एकदम समाप्त नहीं हुई है तथा अभी लोगों में दया-माया बची है?

3. किसने–किससे कहा?

	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा। मैंने भी नहीं देखा।"	....	....
(ख) "यहाँ डकैती होती है। दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।"	....	....
(ग) "हमलोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।"	....	....
(घ) "अड्डे से नई बस लाया हूँ, इसपर बैठिए।"	....	....
(ङ) "पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया।"	....	....

4. पाठ के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान पूरे कीजिए–

(क) भारतवर्ष ने कभी भी .... वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है।

(ख) भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि .... कानून से बड़ी चीज़ है।

(ग) बुराई में .... लेना बुरी बात है।

(घ) कंडक्टर को पहले ही .... के यहाँ भेज दिया है।

(ङ) कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम .... हो गई।

भाषा का पिटारा (Language and Grammar)

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए–

(क) नियम – ....

(ख) पुराण – ....

(ग) नमक – ....

(घ) कुल – ....

(ङ) कृपा – ....

(च) भारत – ....

(छ) रस – ....

(ज) देहात – ....

2. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) पढ़ना – ....

(ख) जलना – ....

(ग) नहाना – ....

(घ) जागना – ....

(ङ) सिलना – ....

(च) ठगना – ....

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) उपेक्षा × ....

(ख) झूठ × ....

(ग) शिक्षित × ....

(घ) उपस्थिति × ....

(ङ) पवित्र × ....

(च) आदर × ....

4. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

(क) शोभा + इत – ....

(ख) धर्म + इक – ....

(ग) भ्रम + इत – ....

(घ) स्वभाव + इक – ....

(ङ) आदर + अनीय – ....

(च) उल्लेख + अनीय – ....

5. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर इनके भेद (सरल/संयुक्त/मिश्र) लिखिए–

(क) क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? – ....

(ख) जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं। – ....

(ग) भूखे को रोटी और बीमार को दवा मिलनी चाहिए। – ....

(घ) बुराई में रस लेना बुरी बात है। – ....

(ङ) कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई। – ....

(च) ठगा भी गया हूँ और धोखा भी खाया है। – ....

मूल्याधारित प्रश्न (Value Based Question)

क्या ईमानदारी और सच्चाई के द्वारा निराशा को दूर किया जा सकता है?

....

....

....

....

....

मेरा रचनात्मक एवं सृजनात्मक समय (Creative Time)



(मेरा तर्क : मेरा चिंतन)
(Analytical Skills)

1. यदि बस कंडक्टर दूसरी बस लेकर नहीं आता और खराब बस पर डाकू सच में हमला कर देते, तो लेखक की सोच में क्या अंतर होता? तर्क सहित बताइए।

(मेरी वाचन अभिव्यक्ति)
(Speaking Skills)

2. आपके मित्रों या परिवार के सदस्यों ने कभी निराशा की घड़ी में आपको हिम्मत अवश्य दी होगी व आगे बढ़ने में आपकी मदद की होगी। आप उन्हें धन्यवाद कैसे कहेंगे? कक्षा में चर्चा कीजिए।

(मेरी सहभागिता)
(My Participation)

3. अपने सहपाठियों के साथ मिलकर मानवता के पैमाने पर खरी उतरने वाली कुछ घटनाओं, कहानियों, कविताओं व लघुकथाओं का संकलन करके "मानव मनोविज्ञान" नामक चार पृष्ठों का एक छोटा-सा अखबार तैयार कीजिए।

मेरी परियोजना (Project Work)

1. जाति, धर्म और रंग के आधार पर भेदभाव को मिटाने के लिए किन-किन महान लोगों ने प्रयास किए? उनके बारे में जानकारी प्राप्त करके सूची बनाइए।
2. एनी बेसेंट और उनकी संस्था थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना एवं कार्यों के बारे में जानकारी जुटाकर एक पत्रिका तैयार कीजिए।

मेरा पिटारा

सफलता के सूत्र

1. सकारात्मक सोच से सकारात्मक बदलाव :

सकारात्मक सोच सकारात्मक बदलाव को जन्म देती है और अच्छाई की तरंगों को उत्पन्न करती है। सफलता पाना इसलिए मुश्किल नहीं होता क्योंकि वह मुश्किल है बल्कि इसलिए मुश्किल लगता है क्योंकि हम चीज़ों के बारे में नकारात्मक सोचते हैं। सफलता पाने की ओर पहला कदम अपने मन-मष्तिष्क में सकारात्मकता का बीज बोना है।

2. सही समय पर सही निर्णय :

सफलता निर्भर करती है आपकी सोच, दृष्टिकोण, काम करने के तरीके, व्यवहार और सही समय पर सही निर्णय लेने पर। सही समय पर सही निर्णय लेना एक कला है; सफल होने के लिए यह कला सीखनी ज़रूरी है। खासकर जब विपरीत समय हो, तो निर्णय लेने की क्षमता का सही और तीव्र होना बहुत ज़रूरी है।

3. कोशिश, संघर्ष एवं इच्छा-शक्ति :

दुनिया में अब तक जितने भी लोग अपने मकसद में कामयाब हुए हैं, वे सब भाग्य से नहीं बल्कि अपनी कोशिश, संघर्ष एवं इच्छा-शक्ति से हुए हैं। कोशिश, संघर्ष एवं इच्छा-शक्ति जीवन को निखारते हैं और हमें ऐसा व्यक्ति बनाते हैं, जो जीवन के किसी भी मोड़ पर हार नहीं मान सकता।

4. दूसरों को कभी छोटा मत दिखाओ :

यदि आप दूसरों से ज़्यादा अमीर और सफल बन सकते हैं तो बनिए, लेकिन दूसरों को यह मत बताइए कि आप उनसे अमीर या सफल हैं। जिस दिन आप दूसरों को छोटा और स्वयं को बड़ा समझने लगते हैं, उस दिन आपमें अहं आने लगता है। अहं सफलता का सबसे बड़ा शत्रु है।

5. सभी का सम्मान :

अच्छे आदमी का सम्मान कीजिए क्योंकि वह भी आपको सम्मान दे सकता है; लेकिन बुरे आदमी का कभी तिरस्कार मत कीजिए, क्योंकि उसकी निगाह में आप सम्मानित है, फिर भी वह आपकी बेइज़्ज़ती कर सकता है।

6. कम सोने की आदत :

बड़ा आदमी बनना है, तो कम सोने की आदत डालिए क्योंकि सोने से आपके रचनात्मक पल व्यर्थ में नष्ट हो जाते हैं।

7. स्वयं समीक्षा :

सफलता पाने के लिए अपनी समीक्षा स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि आपसे बेहतर आपको कोई नहीं जान सकता। यदि आप अपनी कमियाँ और अच्छाइयों को देख सकते हैं, तो उनको दूर कर सकते हैं और उन्हें निखार भी सकते हैं।

8. अपनी ज़रूरतों को समझें और प्राथमिकता दें :

सबसे पहले आपकी खुद यह ज़िम्मेदारी है कि आप अपनी ज़रूरतों को समझें और उन्हें पूरा करने के लिए प्रयास करें। सफलता के लिए आपको क्या करना है, यह आपको स्वयं पता होना चाहिए।

9. स्वयं का पुरुषार्थ :

दुनिया में सबसे बड़ी गलतफ़हमी यह है कि आपकी ज़िंदगी की बागडोर आपकी तकदीर के हाथ में है। इसलिए हमेशा अपनी मेहनत पर विश्वास रखें तकदीर पर नहीं।

10. स्वास्थ्य के प्रति सजग :

जो अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहता है; उचित आहार-विहार का पालन करता है, वह सदैव चुस्त-दुरुस्त रहता है। आलस्य त्यागकर वह हमेशा विजयी होता है। वह पूरी ऊर्जा के साथ कार्य करके सफल होता है। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति हमेशा सजग रहें।

11. समस्याओं का मुकाबला :

परेशानियाँ, नाकामियाँ, असफलताएँ और समस्याएँ सभी के हिस्से में होती हैं; पर जीतता वही है, जो निडरता से उसका सामना करता है और आगे बढ़ता है। इसलिए समस्याओं का डटकर सामना करें।

12. सीखते रहें :

सफलता के पथ पर आपका मुकाबला आपसे ही होता है और आगे बढ़ते रहने के लिए आपको स्वयं को निखारते रहना चाहिए और इसके लिए आपको सीखते रहना चाहिए। सफ़ल होने के लिए हमेशा अपने काम से संबंधित जानकारी को बढ़ाते रहें; अपने ज्ञान-क्षेत्र का परिवर्धन करते रहें।



'मेरी श्रवण कुशलता' हेतु पाठ्य-सामग्री

पाठ 2 : शरणागत की रक्षा

वाणी प्राणी की पहचान है। जिस प्रकार कौए और कोयल की पहचान उनकी वाणी से हो जाती है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति के आचार-व्यवहार तथा स्वभाव की परख उसकी वाणी द्‌वारा हो जाती है। मीठी वाणी दूसरों को वश में करने की औषधि है। जब हम मीठी वाणी का श्रवण करते हैं, तब हमारा चित्त प्रसन्न हो जाता है। सज्जन सर्वदा मधुर वाणी का ही प्रयोग करते हैं, जबकि दुर्जनों की वाणी कटु तथा कर्कश होती है। मीठी वाणी मित्र बना सकती है, निराश व्यक्तियों में आशा, उत्साह का संचार कर सकती है। कटु वाणी हृदय में शूल की तरह चुभती है। इससे अपने भी पराए हो जाते हैं। इतना ही नहीं कटु वाणी लड़ाई-झगड़ों तथा युद्‌ध का कारण बनती है। जिस प्राणी ने अपनी वाणी को वश में कर लिया और मधुर वचनों का प्रयोग सीख लिया, उसने मानो सब पा लिया। मधुर वाणी अमृत के समान काम करती है।

पाठ 9 : नर हो, न निराश करो मन को

दूध-दही की नदियाँ जिसके आँचल में कलकल करतीं,

हीरा, पन्ना, माणिक से है, पटी जहाँ की शुभ धरती,

हल की नोकें जिस धरती की मोती से माँगें भरतीं,

उच्च हिमालय के शिखरों पर जिसकी ऊँची ध्वजा फहरती,

रखवाले ऐसी धरती के हाथ बढ़ाना क्या जाने,

मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें!

पाठ 12 : गिरिधर की कुंडलियाँ

कैप्टन मनप्रीत कौर की नॉटआउट हाफ़ सेंचुरी की मदद से भारतीय महिला टीम ने सोमवार को आखिरी ओवर तक चले वन-डे क्रिकेट मैच में बांग्लादेश को पाँच विकेट से हरा दिया। भारत ने बांग्लादेश से तीन मैचों की टी-20 सीरीज 3-0 से जीती थी।

बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में पाँच विकेट खोकर 184 रन बनाए थे।

पाठ 15 : जलियाँवाला बाग में वसंत

अमीरी की पहचान

एक बार स्वामी विवेकानंद रेल में यात्रा कर रहे थे। एक भिखारी ने अपनी गरीबी का हवाला देते हुए उनसे भीख माँगी। उसके भीख माँगने पर स्वामी जी की आँखें भर आईं। सहयात्री ने पूछा, "श्रीमान क्या बात है?

आपकी आँखों में आँसू क्यों?" स्वामी विवेकानंद ने कहा, "इस अमीर आदमी का दयनीय जीवन जीना और इस तरह भीख माँगना मुझे कष्ट दे रहा है। इस पर सहयात्री ने कहा, "अरे, यह तो भिखमंगा है। आप इसे अमीर कैसे कह रहे हैं?" स्वामी जी बड़े ही नम्र भाव से भिखारी से पूछा, "क्या आप मुझे अपना बायाँ हाथ एक लाख रुपये में बेचेंगे? मैं खरीदना चाहता हूँ, रुपये अभी दूँगा।" भिखारी ने अपना हाथ पीछे की ओर खींच लिया और नहीं में सिर हिलाया। "क्या बायाँ पाँव एक लाख में दोगे?" भिखारी ने कहा, "नहीं, यह बेचने के लिए नहीं है।" "क्या अपनी एक आँख दो लाख में दोगे?" यहाँ पर भी उत्तर नकारात्मक ही था। "दूसरी आँख के पाँच लाख दूँगा।" भिखारी चीखकर बोला, "नहीं, नहीं! मैं इन्हें नहीं बेचूँगा।" इस पर स्वामी जी बोले, "लाखों की इस संपत्ति के होते हुए भी तुम भीख माँग रहे हो। क्या अब भी तुम समझते हो कि तुम गरीब हो?" कुछ पल गुमसुम रहने के बाद उसने स्वामी जी को प्रणाम करते हुए कहा, "महाराज! आपने मेरी आँखें खोल दीं। अब ज़िंदगी में कभी भी मैं भीख नहीं माँगूँगा।

अभ्यास प्रश्न पत्र-I

(पाठ-1 से पाठ-8 तक)

समय: $1\frac{1}{2}$ घंटा

कुल अंक: 50

नोट : सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए सही उत्तर पर सही का निशान (✓) लगाइए– 5

(क) भारत किसका वाचक नहीं है?

☐ मानव का ☐ स्थान का ☐ गुण का ☐ धर्म का

(ख) माहमशाह किसके राज्य से भागकर आया था?

☐ शेरशाह सूरी ☐ टीपू सुल्तान ☐ अलाउद्दीन खिलज़ी ☐ अकबर के

(ग) तिरुवल्लुवर के अनुसार जीवन के कितने पुरुषार्थ होते हैं?

☐ तीन ☐ चार ☐ पाँच ☐ सात

(घ) सुयोधन को किसकी उपमा दी गई है?

☐ नरसर्प ☐ नरसिंह ☐ नरव्याघ्र ☐ नरोत्तम

(ङ) स्त्री के कहने पर नारद जी कहाँ गए?

☐ स्वर्ग ☐ सरकारी दफ्तर ☐ घर ☐ बैंक

2. पाठ के आधार पर रिक्त स्थान पूरे कीजिए– 5

(क) माहम को अपनी देख-रेख में मेरे .... करो।

(ख) तिरुवल्लुवर ने अपनी .... को ग्रंथ का रूप दे दिया।

(ग) भोलाराम नाम के एक आदमी की .... दिन पहले मृत्यु हुई।

(घ) मुझे भी अपने देश की .... करनी चाहिए।

(ङ) तिरुवल्लुवर अत्यंत .... स्वभाव के थे।

3. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर सही अथवा गलत लिखिए– 3

(क) धनपत को गणित बहुत पसंद था। ....

(ख) भोलाराम सरकारी नौकर था। ....

(ग) तिरुवल्लुवर का जन्म उत्तर भारत में हुआ था। ....

(घ) तिरुवल्लुवर के काव्य को श्रेष्ठ माना गया। ....

(ङ) प्रेमचंद ने मृत्यु-पूर्व उपन्यास 'मंगल-सूत्र' पूरा कर लिया था। ....

(च) जिमी कभी स्प्रिंगफील्ड नहीं गया था। ....

4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए– 3

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषरहित, विनीत सरल हो।

5. किसने-किससे कहा? 4

वाक्य	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "मैं आपकी शरण में आया हूँ, महराज!"	....	....
(ख) "नदियों में बाढ़ आ गई है।"	....	....
(ग) "आओ जिमी, तुम्हारे लिए खुशखबरी है।"	....	....
(घ) "रैल्फ, क्या तुम कुछ नहीं कर सकते?"	....	....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

(क) भारत किन भेदों व रहस्यों का ज्ञाता है?
(ख) माहमशाह कौन था? उसने अपना क्या परिचय दिया?
(ग) तिरुवल्लुवर ने राज-कार्य का त्याग क्यों किया?
(घ) प्रेमचंद को बुढ़ापे में किसकी चिंता सताती थी?
(ङ) जेल से रिहा होने के बाद जिमी ने क्या किया?

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए– 4

(क) स्वर्ग – ....
(ख) गुप्त – ....
(ग) पाप – ....
(घ) देश – ....
(ङ) गुण – ....
(च) विष – ....
(छ) सरल – ....
(ज) क्षमा – ....

8. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए– 5

(क) भुजंग – ....
(ख) पथ – ....
(ग) आँख – ....
(घ) स्त्री – ....
(ङ) हाथ – ....

9. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए– 5

(क) मनुज – ....
(ख) देश – ....
(ग) नमन – ....
(घ) क्योंकि – ....
(ङ) और – ....

10. निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य बनाइए– 6

(क) परिमाण – ....
परिणाम – ....

(ख) कम – ....
काम – ....

(ग) दम – ....
दाम – ....

अभ्यास प्रश्न पत्र-II

(पाठ-9 से पाठ-16 तक)

समय: $1\frac{1}{2}$ घंटा

नोट : सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं। कुल अंक: 50

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लिए सही उत्तर पर सही का निशान (✓) लगाइए– 5

(क) कवि किसे निराश नहीं होने की प्रेरणा दे रहा है?

☐ समाज को ☐ मन को ☐ परिवार को ☐ व्यक्ति को

(ख) बालक ने ताऊ से क्या लाने को कहा?

☐ स्कूटर ☐ कार ☐ रेलगाड़ी ☐ बस

(ग) खान ने लेखक को खाने की क्या चीज़ दी?

☐ बादाम ☐ खजूर ☐ केले ☐ सेब

(घ) सम्राट अशोक साधु के साथ कहाँ गए थे?

☐ उपवन ☐ राजमहल ☐ रणभूमि ☐ आश्रम

(ङ) जलियाँवाला बाग कैसा स्थान है?

☐ ध्यान-स्थान ☐ पुण्य-स्थान ☐ शोक-स्थान ☐ रमणीय-स्थान

2. पाठ के आधार पर रिक्त स्थान पूरे कीजिए– 5

(क) बालक ताई के .... व्यवहार को तुरंत ताड़ गया।

(ख) खान को .... देकर मैं बैठ गया।

(ग) भारतवर्ष ने कभी भी .... वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है।

(घ) रसखान के .... सचमुच रस की खान हैं।

(ङ) भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि .... कानून से बड़ी चीज़ है।

3. निम्नलिखित वाक्य पढ़कर 'सही' अथवा 'गलत' लिखिए– 3

(क) जलती धूपबत्ती ने कोठरी को सुगंध से भर दिया। ....

(ख) पहली दीयासिलाई से ही धूपबत्ती जल गई। ....

(ग) अमेरिका में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। ....

(घ) उर्दू और हिंदी भाषा में साम्य है। ....

(ङ) सम्राट अशोक बड़ी व्याकुलता के साथ अपने शिविर में टहल रहे थे। ....

(च) बौद्ध साधु ने सम्राट अशोक को अपने साथ रणभूमि में चलने के लिए कहा। ....

4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए– 3

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।।

5. किसने-किससे कहा? 4

वाक्य	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "जो प्यार करें तो ले जाएगा"	....	....
(ख) "ताई हमें पतंग मँगा दो।"	....	....
(ग) "अड्डे से नई बस लाया हूँ, इसपर बैठिए।"	....	....
(घ) "जय हो सम्राट की! कलिंग युद्ध में हमारी विजय हुई।"	....	....

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

(क) ताई को अचानक बच्चों पर प्रेम क्यों आ गया?

(ख) कोयल सबको क्यों अच्छी लगती है?

(ग) भारत की सात पुरियाँ कौन-कौन सी हैं।

(घ) बौद्ध साधु ने लोगों के रोने का क्या कारण बताया?

(ङ) कवयित्री ने जलियाँवाला बाग का चित्रण कैसे किया है?

7. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए– 5

(क) संसार – ....

(ख) बाग – ....

(ग) अभिमान – ....

(घ) वायु – ....

(ङ) पुष्प – ....

8. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए– 3

(क) जल – ....

(ख) जग – ....

(ग) पावन – ....

(घ) गुण – ....

(ङ) कागा – ....

(च) कोय – ....

9. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए– 6

(क) गागर में सागर भरना – ....

(ख) कायापलट होना – ....

(ग) अपना उल्लू सीधा करना – ....

(घ) बल्लियों उछलना – ....

(ङ) गिरगिट की तरह रंग बदलना – ....

(च) कलेजा मुँह को आना – ....

10. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए– 6

(क) हम प्रदूषण फैलाकर अपनी धरती को विकृत कर रहे हैं। (संयुक्त वाक्य में)

(ख) नदियों को साफ़ कर रहे हैं और रेगिस्तान में पानी ला रहे हैं। (सरल वाक्य में)

(ग) हवा कितनी स्वच्छ और मादक लग रही है। (मिश्रित वाक्य में)

(घ) बालक निबंध लिख रहे हैं। (कर्मवाच्य में)

(ङ) अंशुमन खेल रहा है। (भाववाच्य में)

(च) हमसे गाना गाया जाएगा। (कर्तृवाच्य में)

निराली हिंदी पाठमाला पुस्तक शृंखला (कक्षा 1 से 8) **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020** द्वारा सुझाए गए **21वीं सदी के कौशलों** के अनुकूल है। इस पुस्तक शृंखला का निर्माण करते समय विभिन्न आयु-वर्ग की रुचि एवं बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखा गया है।

शृंखला की मुख्य विशेषताएँ–

- बच्चों के भाषायी-स्तर तथा बौद्धिक क्षमता के अनुरूप विविध विधाओं पर आधारित पाठों का संकलन
- पाठ्यपुस्तक और अभ्यास-पुस्तिका का मिश्रित रूप (Text-cum-Workbook)
- केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा स्वीकृत मानक वर्तनी का अनुपालन
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न भाषायी कौशलों यथा–सुनना (Listening), बोलना (Speaking), पढ़ना (Reading), लिखना (Writing) तथा चिंतन (Thinking) से संबंधित सामग्री का समावेश
- विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने तथा उनकी भाषा को विस्तार देने वाले अभ्यास एवं गतिविधियाँ
- पुस्तक में जगह-जगह खेलरूपी गतिविधियाँ, रोचक क्रियाकलाप एवं आकर्षक चित्रों का समावेश
- सम-सामयिक विषयों पर अपठित गद्यांश एवं पद्यांश का समावेश
- मूल्यांकन हेतु Model Test Papers

Teacher's Resources

All below-mentioned features are available as part of the Teacher's Virtual Disc.

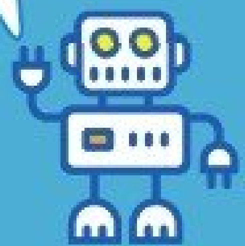
Teacher's Virtual CD includes the following:

- **Flipbook** with animation/video, voice-over and interactive activities for each chapter.
- **Animation/Video** for every chapter.
- **Voice-over** available for every chapter.
- **Interactive Activities** for every chapter.
- **Teacher's Manual**.
- **Test Generator** to generate customised test papers with an extensive pool of questions.

Student's Resources

Virtual Disc includes animation/video and interactive activities for each chapter.
Mobile App contains the e-book for ready reference anytime.

Scan to download in Mobile App



जी॰ राम बुक्स प्रा॰ लि॰
पंजीकृत कार्यालय : 25/4, गली नंबर-17, विश्वास नगर, दिल्ली-110032
प्रशासनिक व विक्रय कार्यालय : 3/1/10, साइट-IV, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, गाजियाबाद-201010
दूरभाष : (0120) 4152032, 33, 4279122, 4279828 फैक्स : (0120) 4115692
ई-मेल : info@grambooks.com, sales@grambooks.com
वेबसाइट : www.grambooks.com
ISBN 93-93318-38-7